CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

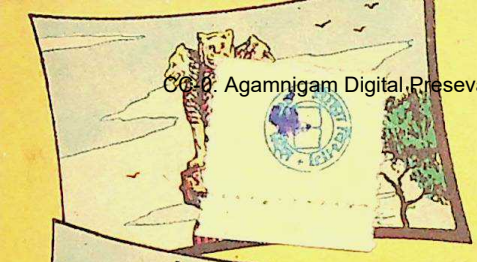

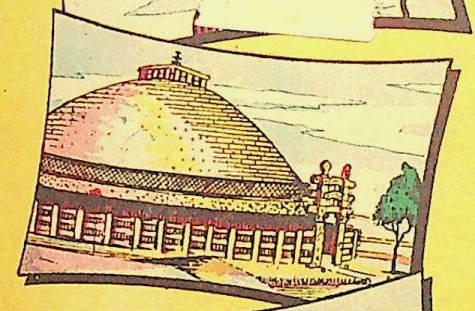

हमारा इतिहास

१

954.
व3797 ह
भाग-१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

प्रथम पुस्तक

[जूनियर हाई स्कूलों की कक्षा ६ के लिए]

लेखक

रामचरण विद्यार्थी

एम० ए० (गोल्ड मेडलिस्ट), एल० टी०, पी० ई० एस० (रिटायर्ड)

[भूतपूर्व लेक्चरर, गवर्मेंट ट्रेनिंग कालेज, लखनऊ एवं इलाहाबाद;
प्रोफेसर व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, गवर्मेंट डिग्री कालेज, रामपुर;
तथा प्रिंसिपल, गवर्मेंट जुबिली इण्टर कालेज, लखनऊ]

Universal Book Depot, Lucknow, Aminabad.

प्रकाशक

शंकर प्रकाशन

अलीगढ़

[मूल्य १ रुपया ६ पै०

१९६८]

प्रकाशक
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
शंकर प्रकाशन

अलीगढ़

954.
व ६.
1.

"इस पुस्तक का कापीराइट उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सुरक्षित है।"

१९५६–१९६७–९,४३,०००
चतुर्दश संस्करण १९६८–१,५५,०००

मुद्रक
दि सेन्ट्रल प्रेस (प्रा०) लिमिटेड
कानपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

साथी अध्यापकों से निवेदन

भारत के स्वतन्त्र होने के बाद देशवासियों पर जो उत्तरदायित्व आये हैं, उन्हें निभाने के लिए बड़ी संख्या में सुशिक्षित नवयुवकों की आवश्यकता है। जूनियर हाई स्कूल की छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षाओं में जो छात्र पढ़ते हैं, उन पर कुछ ही वर्षों बाद उन जिम्मेदारियों को उठाने का भार होगा। उन पर कुछ जिम्मेदारियां तो अभी से विद्यमान हैं। उन सब को सुचारु रूप से समझने और निभाने योग्य बनाने के लिए शिक्षा-क्रम में इतिहास और नागरिक शास्त्र के ज्ञान का विशेष स्थान है।

इतिहास के द्वारा हमें अपने राष्ट्र की आत्मा की अनुभूति होती है। हमारा देश प्राचीन काल में वैभव और प्रतिभा की पराकाष्ठा पर पहुँचा था। उसकी ख्याति सारे संसार में व्याप्त थी। समय ने पल्टा खाया और मध्यकाल में उसका अधःपतन आरम्भ हुआ। अंग्रेजी शासन-काल में आकर दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी। संसार के अन्य देश तब तेजी से तरक्की कर रहे थे, परन्तु हमारा देश दासता की बेड़ियों से बँधा गति-शून्य सा हो रहा था। इस अधःपतन और अधोगति के कारण क्या थे? क्यों हमारे पैर भी आगे नहीं बढ़ते थे? अपने अतीत के नेत्रों से मध्य या अर्वाचीन काल की पतनावस्था को देखकर मालूम होता है कि अपनी व्यक्तिगत दीर्घसूत्रता, सामाजिक दुर्बलता एवं राजनीतिक चेतना की न्यूनता के कारण हम विवश और पराधीन बने रहे। अब हम जगे हैं और हमने अपने घर को सँभालना शुरू किया है। इतिहास हमारे नेत्रों के सामने यह सारा दृश्य उपस्थित करता है। इतना ही नहीं, उसमें भविष्य के मार्ग को स्पष्ट और उज्ज्वल करने की क्षमता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इतिहास के अध्ययन के इस महत्त्व को समझ कर इतिहास के लेखक या अध्यापक के लिए यह जरूरी है कि वह पाठ्य-विषय का वर्णन और उसकी आलोचना निष्पक्ष और निर्भय रीति से करे। किसी भी कारण घटनाओं को तोड़े-मरोड़े नहीं। सदैव सत्य का आश्रय ले। इसी दृष्टि-क्रम से वह सच्ची देशभक्ति, सच्चा स्वाभिमान और सच्ची सहानुभूति पैदा कर सकता है।

बालकोपयोगी प्रस्तुत पुस्तकों में बेसिक कक्षाओं में प्राप्त बालकों की पूर्वयोग्यता तथा उनके वर्तमान मानसिक और बौद्धिक-स्तर को ध्यान में रखकर ज्ञातव्य बातों को इतना सुलझा और सजाकर रखा गया है कि वे उनके लिए अति सरल, रोचक और सुग्राह्य बन जायँ। कार्य-कारण का सम्बन्ध बिठाते हुए बालकों के अन्दर ऐतिहासिक तार्किकता उत्पन्न करने की कोशिश की गयी है। बालकों की तो क्या, प्रायः वयस्कों की भी रुचि जितनी व्यक्तियों के विषय में होती है, उतनी संस्थाओं के विषय में नहीं; अतः इन पुस्तकों में ऐतिहासिक वीरों को स्थान-स्थान पर प्रमुखता दी गयी है और उन्हें उनके सामाजिक वातावरण में रखकर यह दिखाया गया है कि उनके कारण किस प्रकार राष्ट्र की उन्नति में सहायता मिली या बाधा पहुँची। वीरों के मूल्यांकन का यही सही तरीका है।

इन पुस्तकों में चित्रों और मानचित्रों की प्रचुरता है। पढ़ने वालों को किसी इतिहास-एटलस की आवश्यकता न होगी। वर्णित सामग्री हृदयांकित करने में चित्र विशेष सहायता देंगे। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के लिए कुछ प्रश्न दिये गये हैं। उनका अभ्यास बालकों के अर्जित ज्ञान को संगठित करेगा। अतः हरएक पाठ को पढ़ने के बाद बालकों से उन प्रश्नों के उत्तरों का अभ्यास अवश्य कराया जाय।

नागरिक शास्त्र के पाठों में स्थान-स्थान पर क्रियात्मक अभ्यासों के संकेत दिये गये हैं, उनका अभ्यास यथावसर अवश्य कराना चाहिए।

—लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

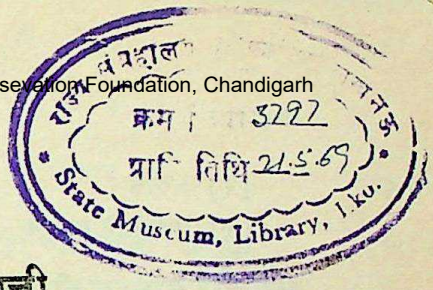

विषय-सूची

खंड १—इतिहास

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं०
पहला	हमारे इतिहास पर भूगोल का प्रभाव	१–७
दूसरा	भारत के इतिहास का आदिकाल	८–२२
	(१) पुराना पत्थर काल	८
	(२) नूतन पत्थर काल और धातुकाल	११
	(३) सिन्धु घाटी की सभ्यता	१५
तीसरा	भारतीय आर्य	२३–३४
	(१) आदि भूमि और भारत में प्रवेश	२३
	(२) राजनीति	२८
	(३) परिवार, समाज और धर्म	३०
चौथा	आर्यों का उत्तरकालीन विकास	३५-४२
	(१) आर्यों का फैलना और सामाजिक विकास	३५
	(२) आर्थिक तथा धार्मिक विकास	३९
पांचवां	मगध साम्राज्य—बिम्बिसार, अजातशत्रु	४३–४६
छठा	जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उत्थान	४७–५३
सातवां	यनानी आक्रमण—सिकन्दर	५४–६०
आठवां	मौर्य साम्राज्य	६१–८१
	(१) चन्द्रगुप्त मौर्य	६१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्याय	विषय	पृष्ठ सं०
	(२) अशोक	६६
	(३) अशोक के स्मारक	७२
नवां—	मौर्य साम्राज्य की अवनति-विदेशियों के आक्रमण	७७-८८
	(१) अवनति के कारण और परिणाम	७७
	(२) यज्ञश्री शातकर्णि	८०
	(३) कुषाण वंश—कनिष्क का साम्राज्य	८३
दसवां—	गुप्त साम्राज्य—प्राचीन काल का स्वर्ण युग	८९—१०४
	(१) स्थापना और विस्तार—समुद्रगुप्त	८९
	(३) चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य	९३
	(३) अवनति और हूण	९७
	(४) भारतीय कला का स्वर्ण युग	९९
ग्यारहवां—	सातवीं शती के विविध राज्य	१०४—११०
	(१) हर्षवर्धन का साम्राज्य	१०४
	(२) चीनी यात्री ह्वेन्त्सांग	१०७
बारहवां—	इस्लाम का उदय, भारत में अरबों का आगमन	१११-११३
तेरहवां—	कन्नौज की कीर्ति-गुर्जर-प्रतिहार, पाल राष्ट्रकूट	११४-११८
चौदहवां—	राजपूतों की प्रमुखता	११९—१२५
	(१) ग्यारहवीं शती के राजपूत राज्य	११९
	(२) मन्दिरों का निर्माण	१२२
पन्द्रहवां—	दक्षिण भारत के राज्य	१२६—१३५
	(१) चालुक्य, राष्ट्रकूट, पल्लव तथा चोल	१२६
	(२) दक्षिण के मन्दिर	१३१
सोलहवां—	वृहत्तर भारत	१३६—१४१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अध्याय विषय पृष्ठ सं०

खंड २—नागरिक जीवन

पहला—जिले का शासन-प्रबन्ध १४२-१५४

(१) देश को छोटे-छोटे भागों में बांटना १४२

(२) जिले के प्रमुख अधिकारी और विभाग १४५

(३) जिले के न्यायालय १४९

(४) जिले के भाग और उनके अधिकारी १५२

दूसरा—जिला परिषद और नगरपालिका १५५-१६७

(१) जिला परिषद का संगठन १५५

(२) परिषद की कार्य समिति १५८

(३) नगरपालिका का संगठन १६१

(४) नगरपालिका के काम। १६४

तीसरा—ग्राम सभा और गाँव पंचायत १६८-१७५

(१) ग्राम सभा १६८

(२) न्याय पंचायत १७३

चौथा—गाँवों की समस्याएं और उनका इलाज १७६-१८१

पाँचवां—राष्ट्रीय उत्सव, स्थानीय त्योहार और मेले १८२-१८७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारा इतिहास

प्रथम पुस्तक

खंड १—इतिहास

पहला अध्याय

हमारे इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

बालको, तुमने यह कहावत सुनी होगी कि जैसा देश वैसा वेश। इससे क्या मतलब समझे? इसका अर्थ है कि किसी देश की प्राकृतिक बनावट और जलवायु का उस देश में रहने वालों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है।

तुम भारत के भूगोल में अपने देश की प्राकृतिक दशाओं का हाल पढ़ते हो। भारत के भूगोल का भारत के इतिहास से गहरा सम्बन्ध है। आओ, आज भारत के भूगोल की मोटी-मोटी बातों को लेकर यह देखें कि उनका असर हमारे इतिहास पर क्या पड़ा है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थिति का प्रभाव

भारत तीन ओर समुद्र से घिरा, त्रिकोण के समान, एशिया महाद्वीप के दक्षिणी भाग में बीचोबीच स्थित है। इसलिए भारत के रहने वाले जल के रास्ते से पूर्व में एशिया व आस्ट्रेलिया और पश्चिम में अफ्रीका, एशिया व यरोप के देशों को आसानी से आ-जा सकते हैं। स्थल के रास्ते से भी पूर्व में एशिया के दूसरे देशों और पश्चिम में यूरोप व अफ्रीका को जाने के लिए भारत की स्थिति बहुत उत्तम है।

तुमने सम्राट अशोक का नाम सुना ही होगा। वह भारत का एक महान सम्राट था। विश्व के इतिहास में वही पहला सम्राट था जिसके भेजे हुए भिक्षुओं ने दक्षिण में लंका, पूर्व में बरमा व स्याम, उत्तर में तुर्किस्तान और पश्चिम में मिस्र व यूनान तक जाकर वहाँ के रहने वालों को धर्म का मार्ग दिखलाया। यह बात अब से करीब सवा दो हजार वर्षों पहले की है। उस समय संसार के किसी दूसरे देश के निवासियों को इन देशों का ज्ञान तक न था। इन देशों के बीच में स्थित होने के कारण भारत के रहने वाले इन देशों को जानते और वहाँ आते-जाते थे।

प्राकृतिक दशाओं का प्रभाव

हमारे देश के उत्तर, उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पर्व में हिमालय पहाड़ फैले हुए हैं। हिमालय शब्द 'हिम' और 'आलय' से बना है जिसका अर्थ होता है बर्फ का घर। हिमालय पर्वत के अनेक भाग सदा बर्फ से ढके रहते हैं। हिमालय की एवरेस्ट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नामक चोटी संसार में सबसे ऊँची है। इसीलिए तो हिमालय के लिए कवि ने कहा है :–

दुनिया में जितने भी गिरि हैं
सब झुक करते इसको प्रणाम।
गिरिराज यही, नगराज यही,
जननी का गौरव-गर्व धाम।

पर्व, पश्चिम और दक्षिण में हमारा देश समुद्र से घिरा हुआ है। उत्तर-पश्चिम और उत्तर-पूर्वी कोनों पर समुद्र नहीं हैं परन्तु वहाँ अनेक पर्वत-मालाएँ खड़ी हैं। ये पर्वत हिमालय से आरम्भ होकर समुद्र के किनारे तक फैले हुए हैं। इस प्रकार हमारे देश की सीमाएं बड़ी सुन्दर और स्वाभाविक हैं और इन सीमाओं के कारण हमारा देश एशिया के दूसरे देशों से अलग-सा हो गया है। इस एकान्तता का यह फल हुआ है कि हमने यहाँ एक विशष प्रकार की सभ्यता का विकास किया है जिसमें शान्ति और सन्तोष का भाव तथा पराये देशों पर हमले की इच्छा का अभाव है।

प्राकृतिक भाग

प्रकृति के अनुसार भारत को नीचे लिखे पाँच भागों में बाँटा जा सकता है :–

१ उत्तर के पहाड़
२ दक्षिण के समुद्र
३ मैदान
४ मध्यवर्ती पहाड़
५ दकन पठार और पश्चिमी घाट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर के पहाड़

उत्तर की ओर हिमालय की ऊँची पर्वत-मालाएं हैं जो लगभग २,४०० किलोमीटर लम्बी और २४० से ३२० किलोमीटर तक चौड़ी हैं। हिमालय के इस प्रदेश में बड़ी सुन्दर घाटियां हैं जिनमें अनेक जातियां प्राचीन काल से बसती आयी हैं। हिमालय की पर्वत-माला भारत के लिए सन्तरी का काम करती रही हैं। विदेशियों के लिए हिमालय को पार कर उत्तर की ओर से भारत में आना सुगम नहीं है।

हिमालय के कारण भारतवासी उस पार विदेशों में आसानी से नहीं आ-जा सके। पहाड़ों में जहाँ कहीं दर्रे या रास्ते मिल सके, केवल उन्हीं में होकर भारत के व्यापारी और धर्म-प्रचारक बाहर गये अथवा बाहर की सेनाएं इस देश में घुसीं। इतिहास में हम देखते हैं कि जब-जब भारतीय सेनाओं ने इन दर्रों पर अधिकार रखा, तब-तब बाहरी सेनाएं इस देश में नहीं घुस सकीं और हम सुरक्षित रहे; जैसे अशोक, अकबर या अंग्रेजों के राज्य में। परन्तु जब उन पर अधिकार न रहा, तब विदेशियों के लिए चढ़ाई करना आसान हो गया।

दक्षिण के समुद्र

दक्षिण की ओर समुद्रों ने भी भारत की उस समय तक रक्षा की, जब तक भारतीय जहाजों के मुकाबले विदेशी जहाज कमजोर थे। अंग्रेज अपने जहाजी बेड़े के बलबूते पर ही भारत में अपना राज्य स्थापित कर सके थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मैदान

भारत के उत्तरी भाग में विशाल उपजाऊ मैदान हैं जो धन-धान्य से सदा भरपूर रहे हैं। इसी से यहाँ आर्य-सभ्यता को विकास करने का उत्तम अवसर मिला। मैदान की विशालतासे एक हानि भी हुई। विदेशी घुड़सवार सेनाओं ने जब हिमालय के दर्रों को पार कर लिया, तब उन्हें सपाट मैदान मिले। इससे उन्हें तेजी से आगे बढ़ने और आक्रमणकरने में बड़ी आसानी हुई। यूनानी,शक,हूण या तुर्क इसी कारण भारत में दूर-दूर तक बढ़ते गये और मंद गति वाली हाथी सेनाएं उनको नहीं रोक सकीं।

मध्यवर्ती पहाड़

भारत के प्राकृतिक मानचित्र में देखोगे कि उत्तर और दक्षिण भारत के बीच में विन्ध्याचल की पर्वत-माला फैली हुई है। इसके कारण उत्तर और दक्षिण का इतिहास अलग-सा रहा है। दक्षिण के बहुत कम राजा उत्तर को जीत सके हैं। उत्तर के अशोक, अलाउद्दीन, औरंगजेब जैसे राजाओं ने दक्षिण में अपने राज्य बढ़ाये, परन्तु उनके शासन में उन्हें बड़ी कठिनाइयां हुईं, क्योंकि उस समय आजकल की तरह रेल और हवाई जहाज आदि की सुविधाएं नहीं थीं।

दकन पठार और पश्चिमी घाट

दकन पठार पर पश्चिमी घाट के पहाड़ और जंगल बड़े दुर्गम हैं। उनका उपयोग करके शिवाजी ने औरंगजेब जैसे प्रतापी सम्राट की सेनाओं को वर्षों परेशान किया और अन्त में मुगल साम्राज्य की सीमाओं के भीतर अपना स्वतन्त्र राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खड़ा कर लिया। मैदानी युद्ध के आदी मुगलों को पहाड़ी युद्धकला में कुशल मराठों के सामने मुँह की खानी पड़ी।

विविधता

क्षेत्रफल के विचार से भारत रूस को छोड़कर यूरोप महाद्वीप के शेष भाग के बराबर है। उसके भिन्न-भिन्न भागों की प्राकृतिक रचना, जलवायु, वनस्पति आदि भिन्न हैं। इस कारण भाषा, धर्म, समाज, राजनीति आदि में विविधता पायी जाती है।

विविधता में एकता

भारत की भौगोलिक रचना में ही कुछ ऐसी बातें हैं जो विविधता में अद्भुत एकता पैदा करती हैं। पहली बात तो हिमालय और समुद्रों से घिरा होने के कारण भारत की एकान्तता है जिसका वर्णन ऊपर हो चुका है। दूसरी बात का सम्बन्ध भी इसी हिमालय और समुद्रों से है। ये दोनों मिलकर भारत में हवाओं का एक विशेष क्रम बनाते हैं जिसे मानसून कहते हैं। मानसून पर वर्षा का होना, न होना निर्भर है। सारे देश की खेतीबारी व जीवन वर्षा के सहारे चलते हैं। भूगोल में पढ़ोगे कि भारत के समुद्रों से जो भाप के बादल उठते हैं, उन्हें हिमालय इसी देश को लौटा देता है। इस तरह हमारा देश **भौगोलिक एकक** बन जाता है। भूगोल की इस महिमा को समझ कर हमारे पूर्वजों ने समूचे देश को एक संस्कृति के रंग से रंग दिया। हमारी पवित्र नदियाँ, पवित्र पर्वत, और पवित्र तीर्थ सारे देश में फैले हैं। राम और कृष्ण जैसे महापुरुष भी सभी भारतीयों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के पूज्य हैं। यह **संस्कृति की एकता** केवल हिन्दुओं में ही नहीं बल्कि मुसलमानों में भी है। भारतीय मुसलमानों के खान-पान, रहन-सहन और आचार-विचार इतने एकरंगी हैं कि उन्हें दूसरे देशों के मुसलमानों से साफ अलग कर देते हैं।

भारत में समय-समय पर **राजनीतिक एकता** भी रही है। मौर्यों, गुप्तों, मुगलों और अंग्रेजों के राज्य-काल में उत्तर से दक्षिण तक भारत में एकछत्र राज्य था। राजनीतिक एकता के विचार से इतिहास में सबसे बढ़कर भारत का वर्तमान गणराज्य है। यद्यपि देश में विविध धर्मों के मानने वाले विविध भाषाओं के बोलने वाले और विविध जातियों के लोग रहते हैं, तिस पर भी सारे देश में एक-सा सिक्का, एक-सा कानून और एक-सा शासन है। उत्तर में कश्मीर से लेकर दक्षिण में कुमारी अन्तरीप तक समूचे भारत का एक ही राष्ट्रपति और एक ही प्रधान मन्त्री है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—एशिया महाद्वीप में भारत कहाँ स्थित है? इस स्थिति से भारत को क्या लाभ हुआ है?

२—'भारत के भूगोल का भारत के इतिहास से गहरा सम्बन्ध है।' इसको उदाहरण देकर समझाओ।

३—भारतवर्ष के भूगोल और उसकी संस्कृति में मौलिक एकता है। इसके क्या प्रमाण हैं?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

भारत के इतिहास का आदि काल

पाठ १ – पुराना पत्थरकाल

बालको, शायद तुम नहीं जानते होगे कि हमारे देश तथा दूसरे देशों में कभी ऐसे लोग भी थे जिन्हें सोना, चाँदी, लोहा आदि किसी धातु का ज्ञान न था, जो न तो खेती करना जानते थे, न घरों में रहना। वे लोग बरतन तक नहीं बना सकते थे। वस्त्रों का उन्हें ज्ञान न था, वे लोग या तो नंगे रहते थे या केवल पत्तों से बनी लँगोटी बाँधते थे।

भारत में रहने वाले मूलवंश

आजकल भारत में रहने वाले लोगों को देखकर मालूम होता है कि हमारे देश में समय-समय पर जो लोग बसे, वे मुख्यरूप से चार मूलवंशों के थे। चमड़ी के रंग के विचार से **काले चमड़े** वाले दो मूलवंशों के थे–आजकल पहले मूलवंश के भील, गोंड़ या संथाल जैसे सभ्यता में पिछड़े लोग तथा दूसरे मूलवंश के दक्षिण में द्रविण जैसे सुसभ्य लोग हैं। तीसरे **पीले चमड़े** वाले मंगोल थे जिनके वंशज पूर्व में आसाम और उत्तर में भूटान, गढ़वाल, नेपाल आदि स्थानों में पाये जाते हैं। चौथे **सफेद चमड़े** वाले आर्य थे जिनके वंशज पश्चिमोत्तर प्रान्त पंजाब, कश्मीर आदि स्थानों में मिलते हैं। धीरे-धीरे इन मूलवंशों में आपस में मिश्रण या मेल होता गया और बीसों जातियां बन गयीं। अब समूचे भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गोंड

भील

संथाल

द्रविड़

मंगोल

आर्य

विविध मूलवंशों के मनुष्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
में जो जातियां बसी हैं, उनमें कहीं किसी एक मूलवंश का मिश्रण अधिक है और कहीं दूसरे का ।

आदिम निवासी

विद्वानों का विचार है कि इन मूलवंशों में से भारत के इतिहास के आदिकाल में यहाँ काले चमड़े वाली जाति के लोग रहते थे । वे लोग सभ्यता में पशुओं के समान थे । धीरे-धीरे उनकी दशा सुधरती गयी । मानव विकास के इस लम्बे युग को विद्वानों ने तीन मंजिलों में बाँटा है । इनके नाम उन पदार्थों के ऊपर रखे गये हैं जिनके औजार या हथियार बनाकर वे लोग अपना जीवन चलाते थे ।

मानव विकास की ये तीन मंजिलें–(१) पुराना पत्थर काल, (२) नूतन पत्थर काल और (३) धातु काल हैं । एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर पहुँचने में मनुष्य को बड़ा समय लगा है और कठिन परिश्रम करना पड़ा है ।

पुराना पत्थर काल

गुजरात, मद्रास, उड़ीसा एवं मध्य प्रदेश के राज्यों में कई जगह धरती की खुदाई में बहुत से पत्थर के अनगढ़ औजार व हथियार निकले हैं । उनको देखने से मालूम होता है कि उस काल के लोग उन हथियारों से चिड़ियों या पशुओं को मार कर अपना पेट भरते थे । ये लोग मांस के अलावा फल, पत्ते या मछलियाँ भी खाते थे । यदि कहीं अपने आप उगने वाला कोई अन्न मिल गया तो उसे भी खा लेते थे । पुराने पत्थर काल के लोग खेती करना नहीं जानते थे । उन्हें बरतन बनाना तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नहीं आता था। रहने के लिए वे लोग पहाड़ों की गुफाओं, नदियों व झीलों के कगारों अथवा पेड़ों के ऊपर या उनकी खोहों में शरण लेते थे। पहले तो वे नंगे ही घूमते थे, पर आगे

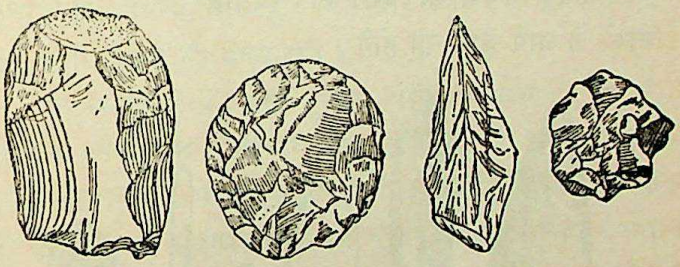

पुराने पत्थर काल के औजार और हथियार

चल कर सर्दी और धूप से बचने एवं लज्जा को ढकने के लिए वृक्षों के पत्तों और पशुओं की खालों को काम में लाने लगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—भारत में किस-किस मूलवंश के लोग बसते हैं? इनमें से कौन-सा मूलवंश सबसे पहले यहाँ रहता था?

२—पुराने पत्थर काल से क्या समझते हो? उस समय के हथियारों और औजारों के रेखाचित्र बनाओ?

३—पुराने पत्थर काल के मानव के खानपान, पहनावा एवं रहने की जगहों के विषय में तुम क्या जानते हो?

पाठ २--नूतन पत्थर काल और धातु काल

आगे चलकर औजारों और हथियारों के विषय में हमारा मानव एक कदम आगे बढ़ा। अपने पत्थर के अस्त्रों का दूसरे कठोर पत्थरों से काट-छाँट कर नुकीला और उन्हें रगड़-रगड़

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर चमकदार और चिकना बनाने लगा। वह **नूतन पत्थर** काल था। उस समय के बहुत से औजार और हथियार दक्षिण के बेल्लारी जिले और दूसरी बहुत-सी जगहों में पाये गये हैं। नीचे उनके चित्रों को देखो और बताओ कि वे किन-किन कामों में लाये जाते रहे होंगे।

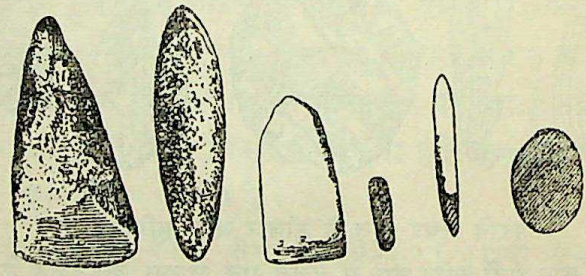

नूतन पत्थर काल के औजार और हथियार

नूतन पत्थर काल में मानव जंगली या असभ्य नहीं था। वह पत्थर या लकड़ी की रगड़ से आग पैदा करना जान गया। फिर क्या था! उसके जीवन में बड़ा सुधार हो गया। मांस को भूनकर खाने लगा। कन्द, मूल, फल के अलावा दूध, दही, घी ताड़ी एवं पेड़-पौधों का रस उसके भोजन का अंग बन गया। **पशु-पालन** और उसके साथ-साथ **खेती** भी करने लगा। खेती ने **नूतन पत्थर काल के लोगों के जीवन में एक क्रान्ति कर दी।** पहले वे बेघरबार के घुमन्तू थे। अब जब कि जंगलों को साफ करके खेती करने लगे, तब उसकी देखरेख के लिए खेत के पास ही जम कर रहना आवश्यक हो गया। अतः निवास करने के लिए नूतन पत्थर काल के लोगों को झोपड़े या घर भी बनाने पड़े।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ये लोग चिकनी मिट्टी के **बरतन** भी बनाना जान गये। पहले तो बरतनों को हाथ से गढ़ा, परन्तु बाद में उन्हें **चाक** की मदद से बनाने लगे। यही नहीं, **कपास** की खोज होने से बुनाई का काम भी शुरू हो गया और पशुओं के **ऊन** को बट कर ऊनी कपड़े भी बनने लगे।

पशु-पालन, खेती, वस्त्र बुनना आदि कामकाजों में लगे रहने के कारण इन लोगों को **बड़े परिवारों** में रहना पड़ा। इससे माता-पिता, भाई-बहन, इष्ट-मित्र आदि सम्बन्ध पक्के हो गये। अपने अवकाश के समय में इन लोगों ने चित्र बनाने भी शुरू किये जो देखने में आजकल के बालकों के बनाये जैसे लगते हैं। ये चित्र कहीं-कहीं गुफाओं की दीवारों पर दिखायी पड़ते हैं। पुराने पत्थर काल के लोग अपने मुर्दों को खुला छोड़कर पशु-पक्षियों को खिला देते थे, परन्तु नूतन पत्थर काल में उन्हें गाड़ने लगे। मिट्टी के बड़े बरतनों में गड़े मुर्दों की कई **समाधियाँ** मद्रास के तिरुनेलवेली जिले में मिली हैं।

इन लोगों को **सोने के अलावा अन्य धातुओं का ज्ञान नहीं** था, क्योंकि थोड़ा सोना तो प्राकृतिक रूप में भी मिल जाता है, परन्तु लोहा या ताँबा पत्थर में मिला होने से फूंक कर निकालना पड़ता है। अतः वह अभी उनके हाथ न आ सका।

धातु काल

तुमने अभी पढ़ा है कि नतन पत्थर काल के लोग आग का उपयोग जान गये थे। उन्होंने भोजन बनाने और बरतनों को पक्का करने के लिए पत्थरों के चल्हे और भट्ठियां बनायीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आग की गर्मी से जब धातु-मिले पत्थर पिघले, तब उनमें से चमकीली धातु अलग हो गयी। अब लोग धातु को ठोंक-पीट

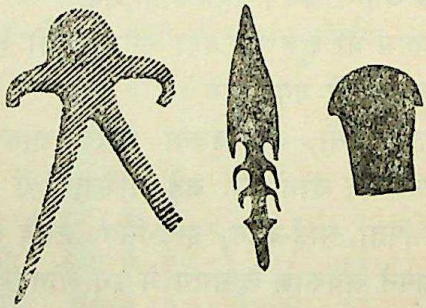

धातु काल के ताँबे के औजार और हथियार

कर मजबूत औजार बनाने लगे जो पत्थर के हथियारों से ज्यादा उपयोगी थे। इसे मानव विकास का **धातु काल** कहा जाता है। धातु के हथियार उत्तर प्रदेश और बिहार में खुदाई के समय अनेक स्थानों पर मिले हैं।

सोने का ज्ञान नूतन पत्थर काल में हो चुका था, परन्तु वह मात्रा में इतना कम था कि उसके औजार या हथियार न बनाकर उन लोगों ने केवल गहने बनाये।

धातु काल में जब उत्तर भारत में **ताँबा** और दक्षिण भारत में **लोहा** बनना शुरू हो गया, तब लोग धातुओं के अनेक प्रकार के औजार और हथियार बनाने लगे। पश्चिमी भारत में ताँबे और टिन को मिलाकर **काँसा** बनाया गया और काँसे की चीजें बनायी गयीं। धातु के औजार या हथियार पहले की अपेक्षा अधिक कड़े, तेज और स्थायी हो गये तथा धातु के औजारों की मदद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
से खेती और शिल्प आदि का काम भी ज्यादा आसान और अच्छा हो गया। इसके बाद धातु काल के लोगों ने पक्के मकान बनाये और नगर बसाये। धातु काल के ऐसे नगरों के खंडहरों की खोज टीलों को खोद कर की गयी है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—नूतन पत्थर काल के लोगों ने नीचे लिखी बातों में क्या उन्नति की :—
(क) औजार व हथियार, (ख) भोजन, (ग) मकान, (घ) बरतन।

२—'खेती के नूतन पत्थर काल के लोगों के जीवन में क्रान्ति पैदा कर दी'। इस बात को उदाहरण देकर समझाओ।

३—आग के उपयोग से नूतन पत्थर काल तथा धातु काल के लोगों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

४—धातु काल के लोगों ने हथियारों, औजारों और मकानों के विषय में क्या उन्नति की ?

पाठ ३—सिन्धु घाटी की सभ्यता

तुम जानते हो कि पत्थर और धातु काल के लोगों का ज्ञान हमें भूमि के भीतर से निकले हुए पदार्थों से हुआ है। इसी प्रकार १९२२ ई० में सिन्धु नदी के किनारे सिन्ध प्रान्त में पाँच-छह हजार वर्षों पुराने धातु काल के एक बड़े नगर के खंडहर निकले हैं। वहाँ सिन्ध में कई बड़े और ऊँचे टीले थे जिन्हें सिन्धी लोग **मुअन-जो-दड़ो** अर्थात मरों के टीले कहते थे। पुरातत्व विभाग की ओर से उनकी गहरी खुदाई करायी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गयी। तब यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि धरती के भीतर एक के ऊपर दूसरी सात तहें निकलीं। सम्भव है कि कोई

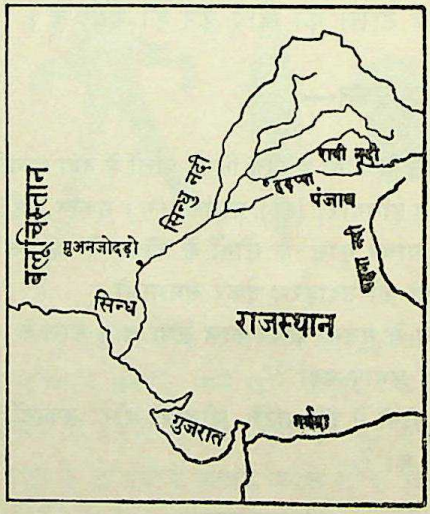

सिन्धु घाटी की सभ्यता के केन्द्र

और तह पानी के अन्दर डूबी पड़ी हो। इन तहों में तरह-तरह की छोटी बड़ी चीजें जैसे सड़कें, बड़े व छोटे मकान, पशुओं के आकार व लेखयुक्त मुहरें, मिट्टी के बरतन, पत्थर व ताँबे के औजार व हथियार, स्त्री व पुरुष की मूर्तियाँ और गहने आदि निकले। इन वस्तुओं के आधार पर विद्वानों ने नांबे के युग के उन लोगों की सभ्यता का अन्दाजा लगाया और उसे **सिन्धु घाटी की सभ्यता** का नाम दिया।

इसी प्रकार के खंडहर सिन्ध नदी के मैदान में पंजाब के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हड़प्पा नामक गाँव में खुदाई करने पर निकले। सम्भव है कि उस समय ये दोनों नगर किसी राज्य की राजधानियाँ रहे,हों।

सिन्धु प्रदेश का प्राचीन भूगोल

मुअन-जो-दड़ो की खुदाई में हाथी, गैंडा, शेर, भेड़िया आदि की हड्डियां और कुछ मुहरों पर इन पशुओं की मूर्तियां बनी हुई मिली हैं। इसके सिवा वहाँ बड़ी-बड़ी और पक्की ईटों के मकानों के खंडहर निकले हैं। इन चीजों से प्रकट होता है कि उस समय सिन्धु प्रदेश में घने जंगल थे और अच्छी वर्षा होती थी, क्योंकि इस तरह के पशु और मकान वर्षा वाले प्रदेशों में होते हैं। आजकल सिन्ध रेगिस्तान है और वहाँ वर्षा नाममात्र को होती है।

इमारतें

इमारतों और सड़कों के क्रम को देखने से विदित होता है कि नगर एक अच्छी तरह सोची हुई योजना के अनुसार बनाया गया था। लगभग ९½ मीटर चौड़ी सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम बनायी गयी थीं। उन पर कई गाड़ियां एक साथ चल सकती थीं। इससे मालूम होता है कि इस नगर में व्यापार खूब होता था। सड़कों से मिलने वाली गलियां भी काफी चौड़ी थीं जिनके दोनोंओर ऊँचे और मोटी-मोटी दीवारों के मकान बने थे।

सफाई

नगर के गन्दे पानी को बाहर ल जाने के लिए पक्की मजबूत नालियां निकाली गयी थीं। मकानों में नहाने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अलग कमरे, रसोईघर और टट्टियां भी थीं। कुछ रसोईघरों में अब तक चूल्हे मौजूद हैं। नगर की इमारतों में सबसे अधिक

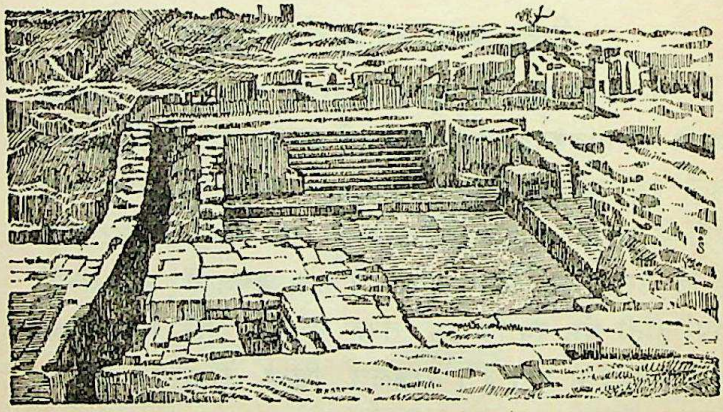

मुअन-जो-दड़ों में बड़ा और पक्का तालाब

महत्वपूर्ण एक बड़ा और पक्का तालाब है। उसके चारों ओर एक गैलरी और दक्षिण-पश्चिम की ओर आठ छोटे कमरे हैं।

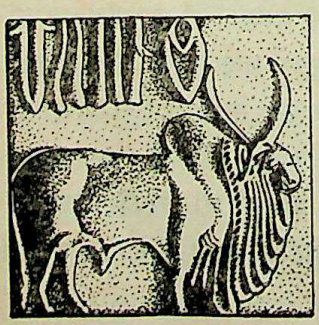

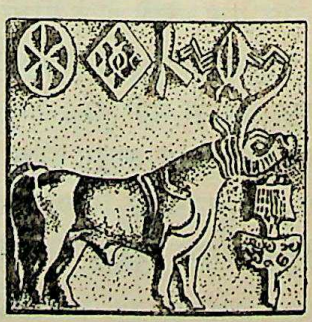

मुअन-जो-दड़ो में निकली मुहरें

पानी में नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां और स्नान करने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चबूतरे बने थे। तालाब में पानी भरने और उसके निकालने के लिए नीचे नल लगे थे। नलों के टूटे-फूटे रूप भी अब तक मिलते हैं। इन सब चीजों से साफ प्रकट होता है कि वे लोग बड़ी सफाई और शुद्धता पसन्द करते थे। वहाँ एक बरतन में नाज के दाने मिले हैं जिनसे स्पष्ट है कि वे लोग खेती करते थे। कई मुहरों पर बड़े सुन्दर और सजे हुए बैल बने हैं। मालूम होता है कि उन लोगों में बैल का बड़ा मान था। वहाँ परघोड़े की कोई मुहर नहीं मिली है और न ऊँट का कोई चिह्न है।

कला

स्त्री-पुरुष दोनों के लिए अनेक प्रकार के गहने, मिट्टी के सुन्दर और विचित्र बरतन, पत्थर के बरतन, हाथी दाँत का

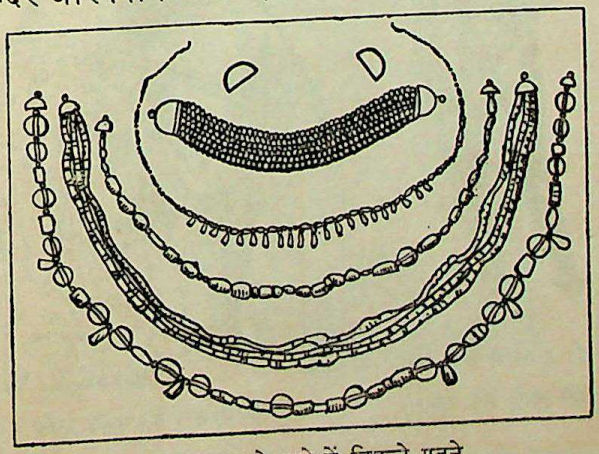

मुअन-जो-दड़ो में निकले गहने

फूलदान, ये सब बातें यह प्रकट करती हैं कि आर्यों के पहले भारत में एक उच्च कोटि की सभ्यता मौजूद थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिन्धु-सभ्यता के लोग बड़े सुखी और शौकीन रहे होंगे क्योंकि वहाँ एक स्त्री की काँसें की ऐसी मूर्ति मिली है जो नाचने की मुद्रा में खड़ी है। उसने बालों का सुन्दर जड़ा बना रखा है और बाँह में ऊपर तक अनेक आभूषण पहन रखे हैं। एक

नाचने की मुद्रा में एक स्त्री
(काँसे की बनी एक मूर्ति)

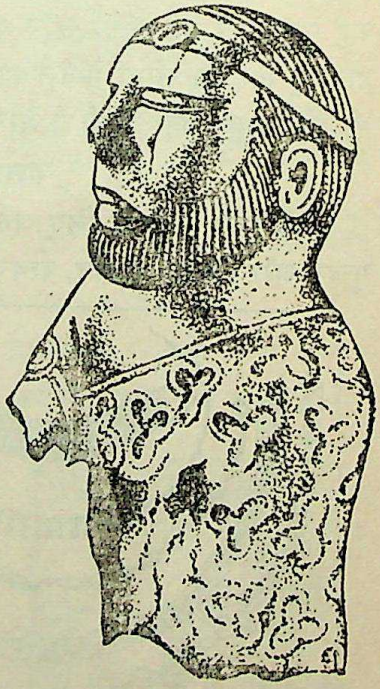

पत्थर की पुरुष मूर्ति

दूसरी पत्थर की पुरुष-मूर्ति मिली है। इस पुरुष के दाढ़ी है, पर होंठ का ऊपरी भाग साफ है। अपने बायें कन्धे से एक वस्त्र ओढ़े है जिस पर तिपतिया छाप है। इस मूर्ति से पुरुषों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
वेश का ज्ञान होता है। मुअन-जो-दड़ो में औजार व हथियार जो भी मिले हैं वे पत्थर या ताँबे के बने हैं। इससे मालूम होता है कि लोहे से वे लोग परिचित नहीं थे।

धार्मिक जीवन

सिन्धु-सभ्यता के लोगों के धर्म-कर्म को प्रकट करने के लिए कुछ मुहरें बड़ी महत्वपूर्ण हैं। नीचे दी हुई महर को ध्यान से देखो। उसमें एक तीन मुख वाला देवता आसन लगाये

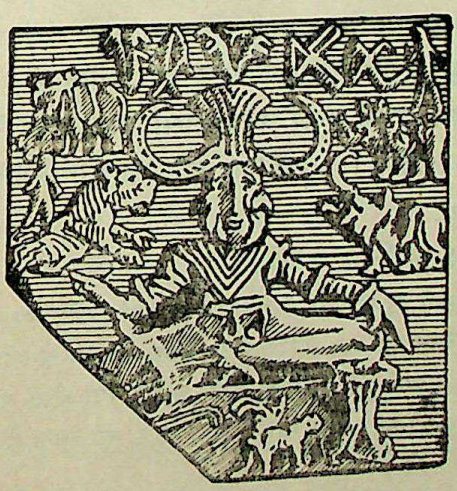

पशुपति महायोगी (ध्यान मुद्रा में)

ध्यानमग्न कैसा शान्ति से बैठा है। उसके चारों ओर पशु बने हैं। मुहर पर कुछ लेख भी है जो अभी तक पढ़ा नहीं जा सका। विद्वानों का विचार है कि आगे चल कर आर्य लोगों ने इसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देवता की देखादेखी अपने देवता **पशुपति महायोगी शिव** की कल्पना की। मुअन-जो-दड़ो में **शिवलिंग** की भाँति पत्थर के टुकड़े भी मिले हैं। मिट्टी और पत्थर की बनी कुछ **माता की मूर्तियां** भी मिली हैं। वे शायद आगे चलकर पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, काली आदि के रूप में हिन्दू धर्म का अंग बन गयीं।

हिन्दू धर्म पर सिन्धु-सभ्यता का प्रभाव

इस प्रकार स्पष्ट है कि वर्तमान हिन्दू धर्म और भारतीय सभ्यता का मूल सिन्धु-सभ्यता में पाया जाता है। भारत में मूर्तियों, वृक्षों, पशु-पक्षियों आदि की जो पूजा आजकल प्रचलित है वह सिन्धु घाटी की सभ्यता से चली आयी है।

कहते हैं कि सिन्धु प्रदेश के इन प्राचीन और सभ्य नगरों को विजय करके सफेद चमड़े वाली आर्य जाति ने उन्हें नष्ट भ्रष्ट कर दिया। आर्यों का इतिहास तुम अगले अध्याय में पढ़ोगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—प्राचीन सिन्धु-सभ्यता के चिह्न कहाँ-कहाँ विशेष रूप से मिले हैं? इस बात का क्या प्रमाण है कि सिन्धु-सभ्यता के प्रदेश में पाँच-छह हजार वर्षों पूर्व जंगल थे और अच्छी वर्षा होती थी?

२—मुअन-जो-दड़ो की इमारतों और नगर की रचना के विषय में क्या जानते हो?

३—सिन्धु-सभ्यता के मनुष्यों के जीवन की निम्नलिखित बातों के विषय में क्या जानते हो :—

भोजन, वस्त्र, मकान, गहने, शौक और धर्म।

४—वर्तमान हिन्दू धर्म में सिन्धु-सभ्यता के क्या-क्या चिह्न पाये जाते हैं?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा अध्याय

भारतीय आर्य

पाठ १ – आदि भूमि और भारत में प्रवेश

बालको, तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि भारत में सिन्धु प्रदेश के प्राचीन नगरों और उसकी सभ्यता का विनाश मख्यतः सफेद चमड़ी वाले आर्यों के कारण हुआ। अब प्रश्न पैदा होता है कि आर्यों की आदि निवास-भूमि कहाँ थी ? वे लोग भारत के ही रहने वाले थे या कहीं बाहर से आये ? इन बातों पर विद्वानों में बड़ा मतभेद है। कोई कहता है कि वे लोग उत्तर में मानसरोवर के आसपास रहते थे। कोई कहता है कि आर्यों का आदिम निवास उत्तरी ध्रुव प्रदेश में था। किसी की राय है कि वे लोग यूरोप में डेन्यूब नदी के पास से आये और कोई उन्हें मध्य एशिया से आया बताता है। एक बात निश्चित है कि भारत के आर्य और फारस के ईरानी दोनों एक ही वंश की शाखाएं हैं। शायद पहले पहल आर्य लोग कैस्पियन सागर के पूर्व में मध्य एशिया में रहते थे। वहाँ से इनके अनेक दल समय-समय पर दक्षिण-पूर्व तथा पश्चिम की ओर बढ़कर एशिया व यूरोप के अनेक भागों में जा बसे। यही कारण है कि वहाँ के लोगों की बोलचाल के बहुत से मुख्य शब्द मिलते-जुलते हैं। आगे दिये हुए शब्दों को पढ़ो और उनकी समानता पर ध्यान दो :–

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कृत	फारसी	इंग्लिश	लैटिन	जर्मन
पितृ	पिदर	फादर	पेटर	फाटर
मातृ	मादर	मदर	मेटर	मुटर
भ्रातृ	बिरादर	ब्रदर	फ्रेटर	ब्रूडर

भारत में प्रवेश करने से पहले आर्यों के अनेक दल बहुत काल तक ईरान में साथ-साथ रहे। इस भूखंड का नाम ईरान भी ऐर्यान शब्द से बना है, जिसका अर्थ आर्यों का देश है। यहीं आर्यों ने वेद धर्म का विकास किया था। तुम जानते हो कि आर्यों के सबसे प्राचीन मन्त्र **ऋग्वेद** में मिलते हैं। ईरानियों के धर्म की सबसे पुरानी गाथाएं **जेन्दावस्ता** में हैं। इन दोनों की भाषा मिलती-जुलती है और दोनों में मित्र, वरुण, अग्नि आदि देवताओं की स्तुतियां दी हैं।

आगे चलकर आर्यों की शाखाओं में लड़ाई-झगड़ा हुआ। ऋग्वेद और जेन्दावस्ता में शायद इसी लड़ाई को **देवासुर संग्राम** कहा गया है। संस्कृत भाषा में 'देव' का अर्थ अच्छे गुणों वाला और 'असुर' का अर्थ राक्षस है, परन्तु जेन्दावस्ता में 'असुर' शब्द अच्छे अर्थों में और 'देव' शब्द बुरे अर्थों में आया है। ईरानी लोग असुर की पूजा करते थे और उसे **अहुरमज्द** अर्थात् असुर महत कहते थे। ऋग्वेद में भी कुछ मन्त्र ऐसे आये हैं, जिनमें असुर का अर्थ ईश्वर है। विदित होता है कि ये मन्त्र उस समय बने जब भारत में आने वाले आर्य फारस में रहते थे। बाद को आपस की अनबन के कारण आर्यों का एक भाग देव को मानने लगा और दूसरा असुर को। इसका एक सबूत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

और है। जेन्दावस्ता में मित्र, वरुण और अग्नि देवता को तो पूज्य माना गया है परन्तु इन्द्र देवता को पूज्य नहीं माना गया। इसके विरुद्ध ऋग्वेद में इन्द्र की स्तुतियां भरी पड़ी हैं। जेन्दावस्ता में इन्द्र को असुर का विरोधी भी बताया गया है।

भारत-प्रवेश

फारस में आपसी लड़ाई-झगड़े के कारण बहुत से आर्य भारत में आ बसे और यहाँ के आदिवासियों से लड़-भिड़ कर अधिकार जमाने लगे। सब आर्य भारत में एक साथ नहीं घुस पड़े। उनके कई दल धीरे-धीरे यहाँ आते गये और बसते गये।

आदिवासियों से संघर्ष

भारत में आकर आर्यों को यहाँ के लोगों से संघर्ष करना पड़ा। इसके अनेक संकेत ऋग्वेद में मिलते हैं। वेद ने उन्हें दास या दस्यु कहा है। उनका रंग काला और नाक छोटी बतायी है। लिखा है कि इन लोगों के बड़े-बड़े पुर और दृढ़ किले थे जिन्हें इन्द्र ने तोड़ा। विद्वानों का विचार है कि ये पुर और किले सिन्धु घाटी की सभ्यता वालों के थे जिनका वृत्तान्त तुम पिछले पाठ में पढ़ चुके हो। आर्यों से हारने के बाद या तो ये लोग पीछे हटते गये या हथियार डालकर आर्यों की प्रथा बन कर अपने घरों में बने रहे।

विस्तार

धीरे-धीरे आर्य लोगों ने आजकल के पंजाब पर अधिकार कर लिया। इस प्रदेश का नाम आर्यों ने सप्तसिन्धवः अर्थात सात नदियों का देश रखा। इन सात नदियों के नाम ऋग्वेद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
में सिन्धु, वितस्ता, असिक्नी, परुष्णी, विपाश, शुतुद्रि और सरस्वती लिखे हैं। आजकल इनको सिन्धु,झेलम, चिनाव,रावी,

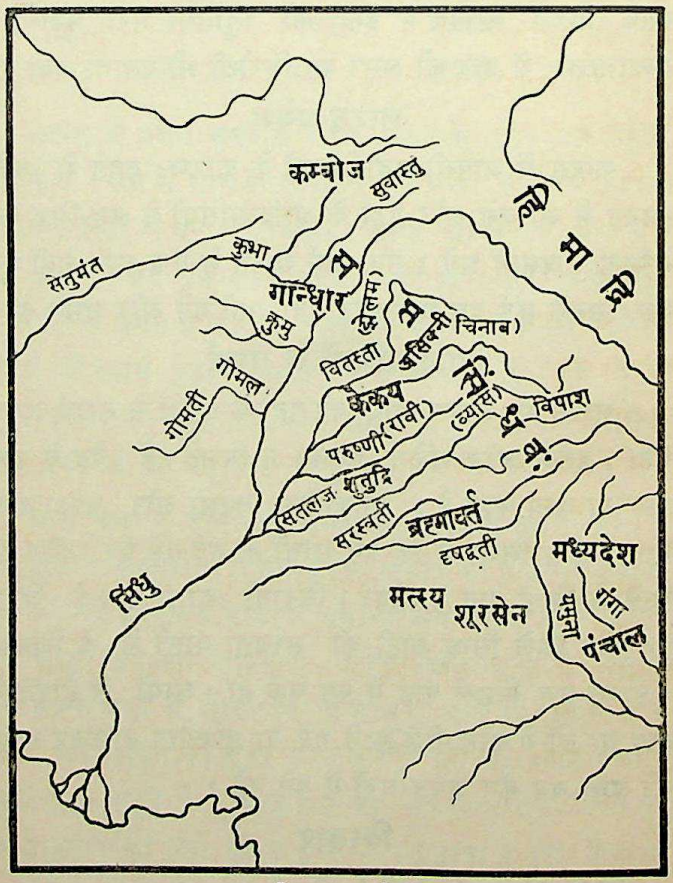

सप्तसिन्धवः प्रदेश

व्यास और सतलज कहते हैं। सरस्वती सूख गयी और अब वहीं बहती। आर्यों की अनेक शाखाओं के सप्तसिन्धवः में बस जाने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के कुछ समय बाद आपस में ईर्ष्या-द्वेष के कारण उनमें भी दो दल हो गये। उनमें आपस में लड़ाई हुई जिसे ऋग्देव में दाशराज्ञ कहा गया। इस युद्ध में आर्यों के एक दल से मिलकर आदिवासियों के राजाओं ने भी भाग लिया। अन्त में विजय भरत नाम के आर्यों की एक शाखा की हुई। इस विजय के कारण ही एक वैदिक पुस्तक शतपथ में कहा गया है कि भरतों के समान महानता न तो मनुष्य जाति के किसी वर्ग ने उनके पहले प्राप्त की थी और न पीछे। विद्वानों का विचार है कि आर्यों की भरत शाखा के नाम पर ही हमारे देश का नाम भारत और उसमें रहने वालों का नाम भारती पड़ा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—आर्य भाषा के शब्द किन-किन जातियों में बोले जाते हैं ? उदाहरण देकर समझाओ।

२—भारत के आर्य और फारस के ईरानी दोनों आर्यों की शाखाएँ हैं। इसके क्या सबूत हैं ? इस विषय में ऋग्वेद और जेन्दावस्ता क्या बताते हैं ?

३—भारत के आर्यों की नीचे लिखी बातों के विषय में तुम क्या जानते हो :—

(क) देवासुर संग्राम, (ख) आदिवासियों से लड़ाई, (ग) दाशराज्ञ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—राजनीति

तुमने पिछले पाठ में भारतीय आर्यों के आदिम जातियों से एवं आपस में युद्धों का इतिहास पढ़ा है। उस समय आर्य-दलों के संगठन को **जन** और जनों के मुखिया को **राजा** कहते थे। हरएक जन की पूरी प्रजा मिलकर राजा को बताती थी। पीछे यह पद पैतृक होने लगा अर्थात पिता के बाद पुत्र को मिलने लगा। राजसिंहासन पर बैठते समय राजा को प्रजा-पालन की प्रतिज्ञा करनी पड़ती थी। राजा युद्धकाल में सेना के नेता का तथा शान्ति के समय प्रजा के रक्षक और सबसे ऊँचे न्यायाधीश का काम करता था।

राजा

ऋग्वेद में अनेक छोटे-छोटे जन-राज्यों के नाम आये हैं। तुमने पिछले पाठ में एक युद्ध दाशराज्ञ नाम का पढ़ा था। उस-युद्ध में पश्चिमोत्तर और सप्तसिन्धव:के अनेक दास राजा और आर्य राजा सम्मिलित हुए थे। यह युद्ध बताता है कि ऋग्वेद काल में ही छोटे-छोटे जन-राज्यों की जगह समूचे सप्तसिन्धव: को एक राजा की अधीनता में लाने का प्रयत्न शुरू हो गया था।

समिति और सभा

उस समय राजा को शासन के काम में सहायता देने के लिए दो **संस्थाएं** थीं—(१) **समिति** पूरी प्रजा की और (२) **सभा** पितरों अर्थात वृद्धों या बड़े लोगों की संस्था थी। समिति का काम शासन के नियमों पर विचार करना तथा सभा का काम न्याय करना था। न्याय करते समय यदि सभासद अर्थात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सभा में बैठने वाले अनजाने में या जानबूझ कर कोई भूल करते थे, तो वेद के अनुसार वह पाप समझा जाता था।

राज्य के कर्मचारी

राज्य का काम चलाने के लिए उस समय अनेक प्रकार के कर्मचारी रहे होंगे, परन्तु ऋग्वेद में सबके नाम नहीं दिये हैं। उसमें प्रायः तीन नाम आए हैं:—

(१) पुरोहित (२) सेनानी (३) ग्रामीण।

पुरोहित का काम राजा को सलाह देना और लड़ाई में उसकी जीत के लिए प्रार्थना करना था। पुरोहित युद्ध के समय सेना का साहस भी बढ़ाता था। 'पुरोहित' शब्द का अर्थ ही है **हित करने के लिए आगे रहने वाला।** उसे राजा और प्रजा का परम हितैषी कहा जा सकता है।

सेनानी सेनापति था और **ग्रामणी** गाँव का मुखिया था।

सेना

आर्य लोग बड़े वीर योद्धा थे। राज्यों को बढ़ाने के लिए सेनाओं का उनमें बड़ा महत्व था। सेना में घुड़सवार, रथी और पैदल होते थे। अधिक भरोसा घुड़सवारों पर था। सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोगों के पास घोड़े शायद नहीं थे, क्योंकि किसी मुहर पर घोड़े की आकृति नहीं मिली है।

युद्ध क समय ग्रामणी के नेतृत्व में गाँव वाले इकट्ठा होते थे। इस प्रकार की इकट्ठी सेना को 'संग्राम' कहते थे। बाद में 'संग्राम' शब्द का अर्थ ही युद्ध हो गया।

आर्य योद्धा धनुष, बाण, बर्छे, भाले, फरसे, और कृपाणों से युद्ध करते थे और अपनी रक्षा क लिए कवच, सिर रक्षक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
और भुजारक्षक पहनते थे। सिन्धु-सभ्यता के खंडहरों में कवचों के चिह्न नहीं मिले हैं। इससे मालूम होता है कि शायद सिन्धु घाटी के लोग इनका प्रयोग नहीं जानते थे। इसी से वे लोग आर्यों से अपनी रक्षा करने में समर्थ नहीं हो सके।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—आर्यों की शुरू की राज-प्रणाली के बारे में क्या जानते हो ?

२—'सप्तसिन्धवः' प्रदेश की नदियों के प्राचीन और वर्तमान नाम एक नक्शे में नदियां बनाकर लिखो।

३—(क) समिति, (ख) सभा, (ग) पुरोहित, (घ) सेनानी और (ङ) ग्रामीण शब्दों से क्या समझते हो ?

४—सिन्धु घाटी की सभ्यता के लोगों की सेना से आर्यों की सेना में क्या विशेषता थी ? इसका क्या परिणाम हुआ ?

पाठ ३—परिवार, समाज और धर्म

पारिवारिक जीवन

संसार के सब विद्वान यह मानते हैं कि भारतीय परिवारों के जीवन का आदर्श बड़ा ऊँचा और पवित्र है। यह प्रसाद हमें आर्यों से मिला है। वेदों में अनेक जगह इस प्रकार की शिक्षा मिलता है कि पुत्र पिता का और शिष्य आचार्य का आज्ञाकारी हो, भाई-भाई से द्वेष न करे, स्त्रिया पतिव्रता हों, पुरुष पत्नीव्रत हों, स्त्री-पुरुष सब वेदों को पढ़ें, कन्याएं युवावस्था में ही पति को वरें, इत्यादि। उस समय आर्य-परिवारों में इस प्रकार की शिक्षाओं पर चलना उनका स्वभाव-सा बन गया था।

आर्य-परिवार का मुखिया **पिता** होता था और परिवार

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के सब लोग उसके अधीन थे। आर्यों का सामान्य भोजन जौ, चावल, दाल, दूध, दही, मक्खन, घी, फल, तरकारियां, मांस आदि था। वे लोग जा की सुरा और ओषधियों का सोमरस भी पीते थे, किन्तु आर्य लोग इतनी सुरा नहीं पीते थे कि बेहोश हो जायँ। आर्यों का वेश बहुत सादा था। अधावस्त्र अर्थात धोती या साड़ी, उत्तरीय अर्थात चादर या ओढ़नी और उष्णीष अर्थात पगड़ी उनकी पोशाक थी। स्त्री-पुरुष दोनों को आभूषण पहनने की रुचि थी। बालियां (कणशोभन), कंठहार निष्क-ग्रीव), कंगन या कड़े (खादि), मोतियों के हार (मणिग्रीव) आदि उस समय के प्रमुख गहने थे। गहनों के जो नाम ऋग्वेद आये हैं उन्हें यहाँ ब्रैकेट में लिखा गया है।

विनोद

आर्यों का जीवन हँसी-खुशी और आशा-उल्लास से भरा था। वे लोग जीवन का परा आनन्द उठाते थे। पुरुष और स्त्री दोनों को **गाने, बजाने व नाचने** का बड़ा शौक था। ढोल की तरह पीटने, तुरही जैसे फूंकने और वीणा के समान तार वाले तरह-तरह के बाजे बजाते थे। **घुड़दौड़** और **रथ-दौड़** होती थी। वेद में जुआ खेलना बुरा बताता गया है, पर जुआ खेलना बन्द नहीं हुआ था।

समाज और कारबार

तुम पढ़ चुके हो कि आर्यों के आने के पहले इस देश में जो लोग रहते थे, ऋग्वेद में उन्हें दास या दस्यु का नाम दिया है। आर्य उनको अपने से छोटा या हीन समझते थे। इस प्रकार उस समय का समाज दो भागों में बँटा था—(१) आर्य और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) दास । सिन्धु घाटी के इतिहास में तुमने देखा है कि दास जाति के लोग शिल्पकला में बड़े होशियार थे । वे लोग दस्त कारी के काम और बड़े-बड़े महलों और किलों को बनाना जानते थे । उनकी संख्या नगरों में अधिक थी ।

आर्य लोग मुख्य रूप से **खेती, पशुपालन** अथवा **सेना संचालन** और **यज्ञ-हवन** में लगे रहते थे । उन्हें कपड़े बुनने का भी शौक था । बड़े-बड़े विद्वान भी कपड़ा बुनते थे । वे लोग रंगसाजी और बेलबूटे काढ़ने का काम भी करते थे । उनमें युद्ध के लिए रथ, गाड़ियाँ आदि तथा लोहे के अस्त्र-शस्त्र और खेती के औजार बनाने वाले भी थे । उनका बड़ा सम्मान होता था । भवन निर्माण आदि जैसे शिल्प दास जाति के हाथों में ही बने रहे । आर्यों ने उनको सीखना पसन्द नहीं किया । इसका एक बुरा परिणाम यह हुआ कि इस देश में वैदिक काल से ही अनेक **शिल्पों को हीन** समझने की आदत सी पड़ गयी ।

स्त्रियों की दशा

आर्यों में स्त्रियों का बड़ा आदर सम्मान था । जो कोई स्त्री को बुरी दृष्टि से देखता था, आर्य लोग उससे घृणा करते और उसे अपराधी समझते थे । विवाह होने पर वधू को घर गृहस्थी की साम्राज्ञी अर्थात महारानी समझा जाता था । स्त्रियों को पुरुषों के समान ऊँची से ऊँची शिक्षा दी जाती थी । इसी कारण उन्होंने वेदों के अनेक मन्त्रों को रचा और ऋषियों की पदवी पायी । घोषा, लोपामुद्रा, विश्ववारा आदि बहुत सी आर्य स्त्रियों के नाम वेद-मन्त्रों के ऊपर अब तक लिखे मिलते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस समय स्त्रियों में पर्दे की प्रथा नहीं थी। घूमने-फिरने की स्वाधीनता थी। समाज और धर्म में उनका अधिकार पति के समान था।

धर्म

प्राचीन आर्यों का धर्म-कर्म बहुत सरल था। वे लोग धम को लौकिक उन्नति अर्थात आयु, सन्तान, विद्या, धन एवं बल के प्राप्त करने के साथ उसे ब्रह्म या मोक्ष को प्राप्त करने का साधन समझते थे।

सौभाग्य से हमें आर्यों के धर्म-कर्म का पूरा वर्णन ऋग्वेद में मिल जाता है। उसके पढ़ने से विदित होता है कि वेलोग पत्थरों, वृक्षों, पशु-पक्षियों, नागों आदि की पूजा से बहुत ऊपर उठ चुके थे। उन्होंने अपने चारों और के दृश्यों में दिव्य ज्योतियों की कल्पना की और उन्हें देवता नाम दिया।

'देव' शब्द संस्कृत की दिव् धातु से वना है जिसका अर्थ प्रकाश, ज्ञान या दान होते हैं। प्रकृति के जो पदार्थ या दृश्य प्रकाश या ज्ञान देते हैं या किसी अन्य प्रकार से हमारे लिए उपयोगी हैं, उनको देव या देवता कहा गया है। ऋग्वेद में जगह-जगह द्युलोक के देवता सूर्य, वरुण, उषा आदि; अन्तरिक्ष के देवता इन्द्र आदि तथा पृथ्वी के देवता अग्नि, सोम आदि की स्तुतियाँ और प्रार्थनाएँ दी हैं। वेद में जीवन के अनेक गुणों और भावों का भी देवता का नाम दिया गया है जैसे मेधा या बुद्धि, श्रद्धा या सच्ची धारणा, मन्यु या क्रोध आदि को। आजकल के हिन्दू धर्म में इन देवताओं की पूजा नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होती, यद्यपि हिन्दू धर्म में वेद की मान्यता वैसी ही है जैसी प्राचीन काल के आर्यों में थी।

ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है कि 'इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, यम आदि, जिन्हें विद्वान लोग अलग- अलग नामों से पुकारते हैं, सब एक ही हैं।' वेद में एक दूसरी जगह देवताओं को एक ही सत्ता के अनेक झंडे बताया गया है। जैसे किसी राष्ट्रीय झंडे को देखकर तुम्हारा ध्यान उसके स्वामी किसी राष्ट्र या राजा की ओर जाता है, वैसे ही आर्य लोग देवताओं या प्रकृति के दिव्य रूपों को देखकर उनके स्वामी परमेश्वर का ध्यान करते थे।

आर्यों के धार्मिक जीवन में यज्ञ-हवन का विशेष महत्व था। इसके कई लाभ थे। एक तो दोहराते-दोहराते वेद-मन्त्र याद रहते थे और दूसरे परमात्मा की स्तुति एवं प्रार्थना हो जाती थी। हवन करते समय अग्नि में अन्न, घी आदि सुगन्धि की चीजों को जलाने से वायु और जल शुद्ध होता और स्वास्थ्य को लाभ पहुँचता था।

अभ्यास के लिए प्रश्न–

१–आर्यों के पारिवारिक जीवन के विषय में क्या जानते हो ? उसका प्रभाव वर्तमान हिन्दू समाज पर क्या पड़ा है ?

२–आर्यों के खानपान, पहनावा और खेलों का वर्णन करो।

३–भारत में प्रायः शिल्प के कामों को हीन समझने की भावना का ऐतिहासिक कारण क्या है ?

४–प्राचीन वेद-काल की स्त्रियों के विषय में क्या जानते हो ?

५–आर्यों की नीचे लिखी धर्म-सम्बन्धी बातों का वर्णन करो–
(क) देवता, (ख) एक सत्ता में विश्वास, (ग) यज्ञ-हवन।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

आर्यों का उत्तरकालीन विकास

पाठ १-आर्यों का फैलना और सामाजिक विकास

बालको, पिछले पाठ में तुमने देखा है कि भारत के 'सप्त-सिन्धवः प्रदेश' में ऋग्वेद-काल के आर्यों के अनेक जन राज्य बन गये थे। यह प्रदेश आजकल की यमुना के उस पार से काबुल तक स्थित था। पश्चिमोत्तर से आर्य दलों का आना अब भी जारी था। नये दलों के आने से पुराने दल पूर्व और दक्षिण की ओर बढ़ने लगे। उनके प्रसार के दो कारण और भी थे। उनकी जनसंख्या बढ़ती जाती थी और उनमें नये देशों को जीतने की उमंग थी। इस प्रकार आर्य हजार बारह सौ वर्षों में सारे उत्तर भारत में फैल गये कहीं कम और कहीं ज्यादा। उनके इस विस्तार का इतिहास हमको गाथा-महाकाव्यों अर्थात रामायण और महाभारत तथा पुराणों में मिलता है। आगे भारत के मानचित्र में तत्कालीन राज्यों को दिखाया गया है। उसमें कोसल, काशी, मगध, विदेह, अंग और विदर्भ नाम के राज्यों की स्थिति देखो। इनका हाल आगे आयेगा। उत्तर काल में आर्य-जाति का केन्द्र सप्तसिन्धवः से हटकर, सरस्वती से गंगा-यमुना के दोआब तक, **मध्यदेश** बन गया था। उस समय जो आर्यराज्य बने, वे पुराने जनराज्यों से अधिक बड़े और बलवान थे। तुमने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

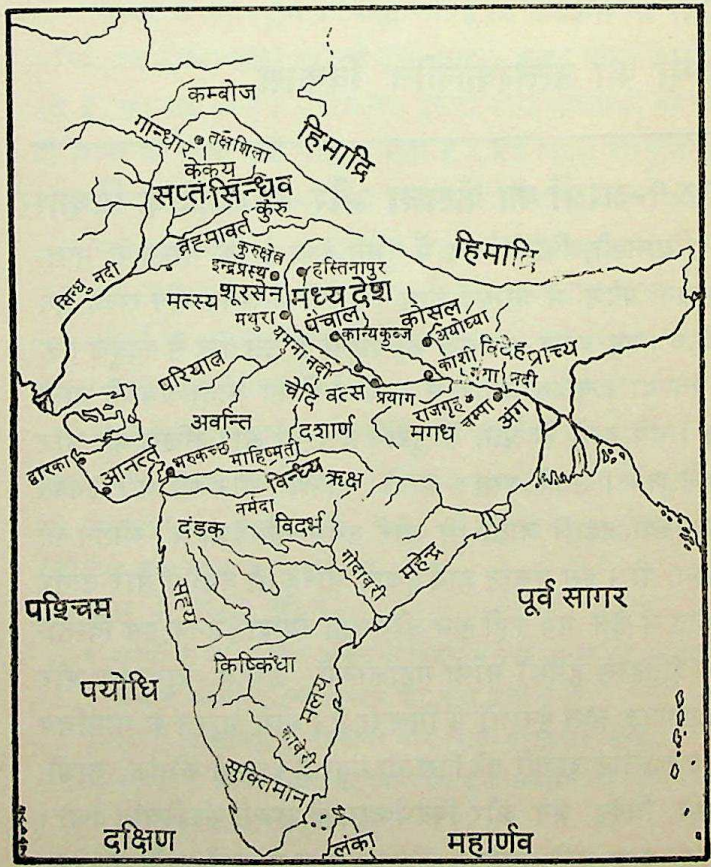

गाथा महाकाव्यकाल का भारत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
राजा हरिश्चन्द्र और राजा रामचन्द्र के सम्बन्ध में अयोध्या का नाम तथा भीम और अर्जुन के सम्बन्ध में हस्तिनापुर व इन्द्रप्रस्थ का नाम सुना होगा। ये उत्तर काल के मध्यप्रदेश में थे।

गाथा महाकाव्य-काल के मानचित्र में जिन राज्यों और नगरों के नाम लिखे गये हैं, वे अधिकतर उनके बसाने वाले राजाओं और राजकुमारों के नामों की याद दिलाते हैं।

उत्तरकाल में नये राजा को राजगद्दी देने के पहले '**राजसूय**' यज्ञ किया जाने लगा था। उसमें जनता के प्रतिनिधि राजा का वरण और अभिषेक करते थे। 'वरण' शब्द का मतलब चुनना या स्वीकार करना और 'अभिषेक' का मतलब मन्त्र पढ़कर जल छिड़कना या स्नान कराना है। ये बातें प्रगट करती हैं कि उस समय प्रजा की सम्मति से राजा बनाये जाते थे।

अनेक राज्यों के बनने के साथ-साथ दूसरे राजाओं को जीतकर अपनी शक्ति बढ़ाने का उदाहरण तुम ऋग्वेद काल के 'दाशराज्ञ' में देख चुके हो। उत्तर काल में यह भावना जोर पकड़ती गयी। अब राजाओं ने दिग्विजय करके चक्रवर्ती या सम्राट बनने के लिए **अश्वमेध** को अपना धर्म और कर्तव्य बना लिया। अश्वमेध के लिए राजा घोड़ा छोड़ता और उसकी रक्षा के लिए सेना भेजता था। अधीनता न मानने वाले उस घोड़े को पकड़ लेते थे। तब युद्ध होता था। यदि उसकी सब जगह विजय हो जाती थी, तो उसे अश्वमेध करने का अधिकार मिलता था। इस सम्बन्ध में एक बात याद रखने योग्य है। आर्य सम्राट अपने जीते हुए राज्यों का नाश नहीं करते थे। अधीनता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानने और कर देने पर राज्य लौटा देते थे। जब अश्वमेध नाम का यज्ञ होता था, तब उसमें अधीन राजा तरह-तरह की भेटों के साथ उपस्थित होते थे। उत्तर काल में रामायण के राजा रामचन्द्र और महाभारत के राजा युधिष्ठिर इसी प्रकार के चक्रवर्ती सम्राट थे।

सामाजिक विकास

उत्तर काल में वेशभूषा में तो बहुत अन्तर नहीं हुआ, परन्तु खानपान म मांस बुरा समझा जाने लगा। खेलकूद और मन-बहलाव के नये ढंग चल पड़े। आजकल जैसे नाटक खेले जाते हैं, वैसे तमाशे उस समय भी होने लगे। नाटक खेलने वालों को उस समय **शैलूष** कहते थे। उत्सवों के अवसर पर वीणा बजाकर गीत गाये जाने लगे। बाजों में कभी-कभी शततन्तु, यानी सौ-सौ तार लगाये जाते थे। यह इस बात को सिद्ध करता है कि उस समय गान-विद्या की बड़ी उन्नति हो चुकी थी।

गाँवों और नगरों में जमकर निवास करने से जनसंख्या बढ़ी। जनसंख्या के बढ़ने से आर्यों म नये-नये कारबारों और कारीगरियों की उन्नति हुई। अनेक आर्य-भिन्न लोगों को आर्यों के समाज में स्थान मिला। कामों के बँटवारे के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण बने। पहले तो इन वर्णों में ऊँच-नीच का भेदभाव नहीं था। वर्णों में अदल-बदल आसानी से होती थी, परन्तु बाद को आर्यों के ये वर्ण एक दूसरे से अलग होते गये। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि आर्यों ने वर्णों की बाँट इसलिए की थी कि उनके समाज का काम अच्छी प्रकार चले, परन्तु धीरे-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

धीरे गुणों व कर्मों का ध्यान जाता रहा और जन्म से वर्ण माने जाने लगे। विद्वानों का विचार है कि जन्म से जातियों की बाँट आर्यों के आने से पहले से ही इस देश में चली आती थी। आर्यों ने गुण व कर्मों के अनुसार अपने समाज का वर्णों में बँटवारा किया। वह बाँट जन्म से जातियों के मानने के रिवाज को तो खत्म नहीं कर सकी, धीरे-धीरे खुद भी उसमें फँस गयी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—उत्तर काल के आर्यों-राज्यों की तुलना पूर्व काल के जन राज्यों से करो।

२—आर्यों के उत्तरकालीन सामाजिक विकास का वर्णन करो।

३—राजसूय यज्ञ, अश्वमेध, शैलूष और शततन्तु से क्या समझते हो ?

४—आर्यों में जातियों का भेद-भाव कैसे शुरू हुआ।

पाठ २—आर्थिक तथा धार्मिक विकास

आर्थिक विकास

तुमने पीछे पढ़ा है कि गाँवों और नगरों में जमकर शान्ति से जीवन बिताते हुए आर्यों की आबादी और आवश्यकताएँ बढ़ती गयीं। उनको परा करने के लिए अनेक कारबार और शिल्प शुरू हुए। आर्थिक जीवन का आधार खेती ही बना रहा, पर बड़े-बड़े खेतों में बड़ी-बड़ी फसलें होने लगीं। इसका परिणाम यह हुआ कि आर्यों के समाज का एक बड़ा भाग खेती के काम में फँस गया। इसके अलावा पशुपालन की भी उस समय बड़ी महत्ता थी, क्योंकि बैल खेती और बोझा ढोने के लिए उपयोगी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
थे और गायों से बीसों काम निकलते थे। गायें ही राजा लोग विद्वानों को भेंट और दान-दक्षिणा में देते थे। इसी कारण वेदों में गाय को अघ्न्या या अवध्य माना गया है।

शिल्पों में उस समय रथकार, सोनार, लोहार, कुम्हार, जुलाहे, रंगरेज, धोबी, चमार, रस्सियाँ बटने वाले, शिकारी नर्तक और गायक आदि का विकास हुआ। अनेक परिवारों में शिल्प पैतृक हो गया अर्थात माता-पिता अपना ही शिल्प अपने बेटे-पोते को सिखाने लगे। इस प्रकार शिल्पों में कुशलता तो अवश्य बढ़ी, परन्तु शिल्पियों की अलग-अलग जातियां भी बन गयीं। बौद्ध-साहित्य की जातक कथाओं में लिखा है कि इस काल में कृषक,व्यापारी तथा शिल्प अपनी-अपनी श्रेणी अर्थात यूनियन भी बनाने लगे।

उस समय अनेक धातुओं का भी अधिक ज्ञान हुआ। सोना चांदी,लोहा,तांबा,सीसा,त्रपु यानी टिन आदि काम में लाये जाने लगे। इसी काल में धातु के सिक्कों काभी प्रयोग शुरू हो गया,

धार्मिक विकास

ऋग्वेद-काल का सरल धर्म-कर्म उत्तर काल में जटिल हो गया। देवताओं की स्तुतियों के बदले उन्हें मन्त्रों के बल से अपने वश में करने का विश्वास पैदा हुआ। लोग समझने लगे कि मन्त्रों के शब्दों में बड़ी शक्ति है। अतः वेद-मन्त्रों के अर्थों पर उतना ध्यान नहीं रहा जितना कि उनके याद करने या शद्ध बोलने पर। यह **वेदवाद** कहलाता है। वेदवाद के साथ उस समय **कर्मकांड** बढ़ा अर्थात सत्य और ईश्वर का चिन्तन तो जाता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
रहा; उसकी जगह वैसी तरह के यज्ञ, हवन और संस्कार चल पड़े। ऐसे-ऐसे यज्ञ होने लगे जो महीनों चलते और जिनमें बड़ा खर्च होता और पशु तक जलाये जाते। लोग समझते थे कि इस प्रकार के यज्ञों से मन की इच्छाएं पूरी हो जाती हैं। ये यज्ञ केवल ब्राह्मण ही करा सकते थे। इसके दो परिणाम हुए—ब्राह्मणों में घमंड पैदा हो गया तथा साधारण जनता खर्चीले और जटिल ब्राह्मण धर्म से दूर होती गयी।

उत्तर काल में देवी देवताओं के बारे में भी स्थिति बदल गयी। ऋग्वेद-काल के इन्द्र, वायु, अग्नि आदि देवताओं की मान्यता अब जाती रही। उनकी जगह नये देवताओं—ब्रह्मा, विष्णु, महेश, स्कन्द, विशाख, सूर्य आदि ने ले ली। इसके अलावा आर्यों के धर्म में यक्ष, नाग, अप्सरा आदि नये-नये देवता आ मिले। इस प्रकार के नये देवमंडल की कल्पना में आर्यों पर आदिवासियों के विश्वासों का असर पड़ा।

यद्यपि उत्तर काल में ब्राह्मणों के वेदवाद और कर्मकांड के मानने वाले बहुत थे, तिस पर बहुत से विचारशील ऋषियों ने इन बातों का कड़ा विरोध किया। वे लोग कहते थे कि ये सब बेकार और अज्ञान की बातें हैं। जल्द ही विरोध की यह भावना ऋषि-मुनियों के आश्रमों से निकल कर नगरों में और राजाओं की सभाओं तक फल गयी। इसका वर्णन **उपनिषदों** में मिलता है।

उपनिषदों में कहा गया है कि 'यज्ञ फूटी नाव के समान है।' जीवन की उन्नति और मोक्ष के लिए मनुष्य को सत्य,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तप और ब्रह्मचर्य का सेवन करना चाहिए। आत्मा और ब्रह्म को जानना चाहिए और ईश्वर में ध्यान लगाना चाहिए। इस तरह के ज्ञान और ध्यान के मार्ग को **ज्ञानकांड** का नाम दिया गया।

उपनिषद रचने वाले सुधारकों ने अपने विचारों की सच्चाई को वेदों के मन्त्रों से सिद्ध किया, इसलिए उपनिषदों को भी वेद ही माना जाता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—उत्तर काल के आर्यों के आर्थिक विकास के बारे में तुम क्या जानते हो ? उस समय कौन-कौन से शिल्प और कारबार प्रचलित थे ?

२—'उत्तर काल में ऋग्वेद-काल का सरल धर्म—कर्म जटिल हो गया।' इस बात को उदाहरण देकर समझाओ।

३—वेदवाद, कर्मकांड और ज्ञानकांड का क्या मतलब है ?

४—उपनिषदों में क्या बातें बतायी गयी हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवां अध्याय

मगध साम्राज्य---बिम्बिसार, अजातशत्रु

बालको, तुमने महाभारत की कौरव-पांडवों की लड़ाई का नाम सुना है। महाभारत के बाद राज्यों में बड़े अदल-बदल हो गये। पहले जो आर्यजनों के राज्य थे, वे अब जनपदों के राज्य हो गये। इसका मतलब यह है कि जो जन जिस प्रदेश में बस गया, वह प्रदेश उसका जनपद कहलाने लगा। पीछे जो कोई वहाँ जा बसा, वह भी उस जनपद की प्रजा हो गया। इस प्रकार अब जनों की जगह जनपदों का महत्व बढ़ने लगा। इन जनपदों में से कुछ में तो राजा राज्य करते थे और कुछ में प्रजा के प्रतिनिधि। पहली तरह के राज्यों को **राजतन्त्र** और दूसरी तरह के राज्यों को **गणतन्त्र** कहते हैं। तुम जानते हो कि समारे भारत का राज्य इस समय एक गणतन्त्र है।

सोलह महाजनपद

बुद्ध के पहले भारत में अनेक जनपद थे जिनमें सोलह महाजनपद प्रसिद्ध थे। इनके नाम पुराने जैन, बौद्ध और ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलते हैं। उस समय के सोलह महाजनपदों म से छह महाजनपद आजकल के उत्तर प्रदेश में स्थित थे। इनके नाम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

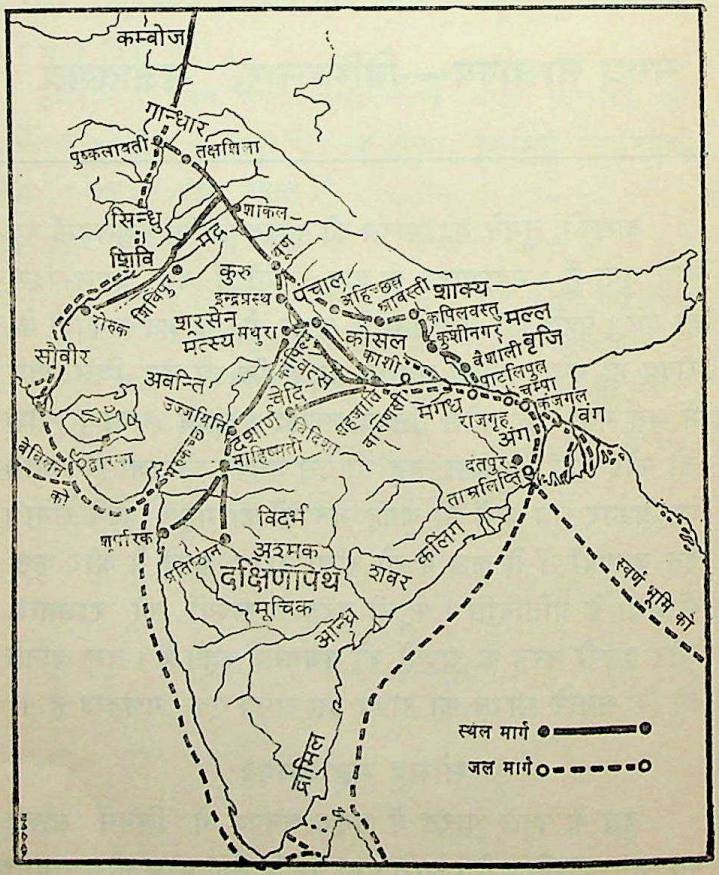

महाजनपद काल का भारत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शूरसेन, पांचाल, कुरु,वत्स कोसल,काश थे। पिछले पृष्ठ पर मानचित्र में इनकी स्थिति को देखो। मोटे रूप में वे क्रम से आजकल के आगरा, रुहेलखंड, मेरठ, इलाहाबाद, अवध और वाराणसी डिवीजन में स्थित थे।

चार राजतन्त्र

भारत में जनपद राज्य किसी एक के अधीन नहीं थे। हरएक राज्य अपने पड़ोसी को जीतने के प्रयत्न में लगा था। बुद्ध के समय में इनमें से चार जनपद राज्य विशेष रूप से बलवान हो गये–(१) **कोसल**, (२) **वत्स**, (३) **मगध** और (४) **अवन्ति**। वर्तमान बिहार में उस समय मगध राज्य था और मालवा में अवन्ति राज्य। वत्स और कोसल का स्थिति के बारे में तुम ऊपर पढ़ चुके हो। इन चारों राज्यों में आपस में लड़ाई होती रहती थी।

बिम्बिसार और अजातशत्रु

बुद्ध के समय मगध में बिम्बिसार का राज्य था। उसने मगध राज्य को बढ़ाया। बिम्बिसार कोसल के राजा का बहनोई था। उसकी राजधाना गिरिव्रज या राजगृह थी। बुद्ध कई बार मगध गये आर वहाँ उपदेश दिये। मगध का राजा और उसकी प्रजा दोनों उनका बड़ा आदर-सत्कार करते थे।

बिम्बिसार के बाद मगध का राजगद्दी पर उसका पुत्र **अजातशत्रु** बैठा। वह बुद्ध का भक्त था। अपने मगध राज्य को बढ़ाने के लिए अजातशत्रु अपने पिता से भी अधिक उत्सुक था। गद्दी पर बैठते ही उसका कोसल से युद्ध ठन गया, पर कोसल की राजकन्या से विवाह होने पर पुनः काशी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मिलने पर युद्ध बन्द हो गया। काशी लेने के बाद अजातशत्रु ने गंगा के उत्तर के राज्य मगध में मिला लिये। उसने वज्जि-संघ पर हमला करने के लिए अपने आधार को पक्का किया। उसने गंगा और सोन के संगम पर एक किला बनवाया। बाद को उसके पुत्र उदायिन ने उस जगह पाटलिपुत्र नाम का नगर बसा दिया।

शिशुनाग

उदायिन के मरने पर उसके पुत्रों में परस्पर झगड़ा हुआ। अतः पहला राजवंश दुर्बल हो गया; उसमें षडयन्त्र व हत्याएँ होने लगीं। इससे प्रजा घबरा गयी और मगध में विप्लव हो गया। ऐसी दशा म राज्य में शान्ति स्थापित करने के लिए मन्त्रियों ने काशी के राज्यपाल शिशुनाग को बुलाकर उसे मगध की राजगद्दी पर बिठा दिया।

शिशुनाग बड़ा वीर और विजयी निकला। उसने वत्स, अवन्ति और कोसल को जीत कर मगध में मिला लिया। इस प्रकार मगध साम्राज्य पंजाब को छोड़कर सारे उत्तर भारत में फैल गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—जनपद राज्य किसे कहते थे? बुद्ध के पहले भारत में कितने महा जनपद प्रसिद्ध थे? इनमें से कौन से जनपद भारत के उस भाग में थे जिसमें आजकल उत्तर प्रदेश है?

२—बुद्धकाल के भारत के चार मुख्य राजतन्त्रों के नाम बताओ। इनमें आपस में कैसे सम्बन्ध थे?

३—राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु के विषय में क्या जानते हो?

४—शिशुनाग कौन था? वह इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

छठा अध्याय

जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उत्थान

बालको, तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि मगध के राजा बिम्बिसार और अजातशत्रु दोनों बुद्ध के भक्त थे। उन्हीं दिनों मगध में एक दूसरे सुधारक महावीर जैन धर्म का प्रचार कर रहे थे। जैन ग्रन्थों में लिखा है कि अजातशत्रु महावीर की शिक्षाओं से बहुत प्रभावित हुआ। उसने अपनी सारी सेना के साथ बड़े आदर-सत्कार से महावीर का स्वागत किया।

महावीर और जैन धर्म

महावीर और बुद्ध दोनों एक ही समय में हुए। महावीर का जन्म वैशाली के पास ईसा से लगभग छह सौ वर्षों पूर्व हुआ था। बचपन में इनका नाम वर्धमान था। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था जो एक गणराज्य के अध्यक्ष थे। उनकी माता का नाम त्रिशला था और वह वैशाली के अध्यक्ष की बहन थी। वर्धमान का विवाह राजकुमारी यशोदा से हुआ। उससे एक कन्या भी हुई जो एक क्षत्रियकुमार को व्याही गयी। इस प्रकार वर्धमान हर तरह से उच्च राजघरानों से सम्बन्ध रखते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्धमान का मन बचपन से ही संसार के माया-मोह में नहीं लगता था। इसलिए अपने माता-पिता के मरने के बाद अपने भाई और सम्बन्धियों से आज्ञा पाकर वर्धमान ने घर-बार छोड़ दिया। उनके परिवार के लोग पहले से ही पाश्वनाथ के धर्म को मानते थे, इसलिए वर्धमान भी उनका मत मान कर मुनि बन गये और बारह वर्षों तक कठोर तपस्या की। तपस्या करते हुए जब उनके वस्त्र फट कर शरीर से उतर गये, तब उन्होंने वस्त्रों को पहनना छोड़ दिया। फिर जीवन भर नंगे ही विचरते रहे।

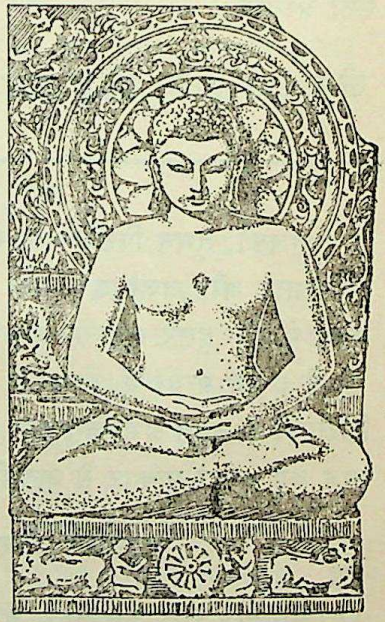

५ वीं शती ई० में निर्मित
महावीर की मूर्ति

बारह वर्षों तक तपस्या करने के बाद तेरहवें वर्ष में उन्हें साखू के एक वृक्ष के नीचे सच्चे ज्ञान का प्रकाश हुआ। अब वह **अर्हत** अर्थात योग्य, **जिन** अर्थात जीतने वाले और **केवलिन** अर्थात सब कुछ जानने वाले कहलाने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके बाद वह लोगों को उपदेश देने लगे। उनका यश दूर-दूर तक फैल गया। उनके शिष्य 'निर्ग्रन्थ' अर्थात् बन्धनों से मुक्त या जैन कहे जाने लगे।

महावीर के पहले पार्श्वनाथ ने संसार के दुखों और बार-बार जन्म लेने के चक्कर से छूटने के लिए चार बातों पर जोर दिया था—

(१) किसी जीव-जन्तु को न तो मारे और न सतावे (**अहिंसा**),

(२) सदा सच बोले (**सत्य**),

(३) चोरी न करे (**अचौर्य**) और

(४) धन-दौलत के मोह में फँस कर उसे अधिक न जोड़े (**अपरिग्रह**)। महावीर ने उनमें पाँचवाँ (**ब्रह्मचर्य**) व्रत और जोड़ दिया, जिसका अर्थ है कि मनुष्य अपनी इन्द्रियों को वश में रख कर संयम-नियम से रहे।

महावीर की शिक्षाओं का बड़ा असर पड़ा। छोटे-बड़े बहुत से लोग उनके शिष्य हो गये। महावीर की मृत्यु ७२ वर्षों की आयु में, बुद्ध के मरने के पहले, पावा में हुई। यह जगह आज कल के देवरिया जिले में कसिया के पास थी।

बुद्ध और बौद्ध धर्म

बुद्ध का जन्म ईसा से पहले लगभग सवा छह सौ वर्ष पहले शाक्य गण की राजधानी कपिलवास्तु में हुआ। उनके पिता शुद्धोदन कुछ समय के लिए कपिलवास्तु के राजा रहे थे। उनका विवाह शाक्य कुल की दो कन्याओं, माया और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बुद्ध की मूर्ति (५ वीं शती ईस्वी में बनी)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
महाप्रजापति गौतमी से हुआ। जब माया को पुत्र होने की आशा हुई, तब दोनों बहनें मायके रवाना हुईं। मार्ग में लुम्बिनी में बुद्ध का जन्म हुआ। यह जगह नेपाल की तराई में है। सात दिनों के बाद बुद्ध की माता माया चल बसीं और बालक का लालन-पालन महाप्रजापति गोतमी ने किया।

बुद्ध का बचपन का नाम सिद्धार्थ था। गौतम गोत्र में जन्म लेने से उन्हें गौतम भी कहते थे। १८ वर्षों की आयु में उनका विवाह यशोधरा के साथ हुआ। उससे एक पुत्र भी पैदा हुआ जिसका नाम राहुल रखा गया। परन्तु, सांसारिक सुख के सारे सामान होते हुए भी गौतम का मन वैराग्य की ओर लगा रहता था। इसीलिए एक रात को घरबार छोड़कर केवल २९ वर्षों की आयु में सन्यास लेने के लिए बाहर निकल पड़े। फिर ७ वर्षों तक शान्ति की खोज में विद्वानों और तपस्वियों के पास भटकते रहे। इस बीच में कठोर तपस्या भी की, परन्तु शान्ति नहीं मिली। तब उन्होंने तपस्या त्याग दी। उनके पाँच साथी थे जो उन्हें मार्ग-भ्रष्ट समझ कर छोड़ गये। एक दिन गया में पीपल के नीचे बैठे ध्यान में लगे थे कि अनेक पाप की बातें उनके मनमें आयीं, परन्तु गौतम ने उनको जीत लिया। तब उन्हें बोध हुआ कि जिस सत्य की खोज में वह भटकते फिरते थे वह सत्य उन्हें मिल गया। उन्होंने अनुभव किया कि सरल और सच्चा जीवन ही **सत्य-धर्म** है। अब वह बुद्ध अर्थात ज्ञानी हो गये। इस घटना के कारण इतिहास में वह पीपल का वृक्ष पवित्र **बोधि वृक्ष** और वह स्थान **बुद्ध गया** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब बुद्ध अपने ज्ञान को फैलाने के लिए पहले काशी में सारनाथ पहुँचे जहाँ उनके पुराने पाँच साथी तप करते थे। उनकी शिक्षा से वे पाँचों बौद्ध भिक्षु बन गये। बुद्ध का यह पहला उपदेश **'धर्मचक्र-प्रवर्त्तन'** कहलाता है। धीरे-धीरे भिक्षुओं की संख्या बढ़ गयी। तब बुद्ध और ये सब भिक्षु चारों ओर धर्म के प्रचार के लिए निकल पड़े। इस प्रकार बुद्ध मगध, काशी, कोसल आदि में उपदेश देते घूमते रहे। राजा, रंक, बच्चे, बूढ़े सभी ने उनका उपदेश सुना। वह कपिलवास्तु भी गये। वहाँ उनके पिता, पत्नी, पुत्र सभी उनके शिष्य हो गये।

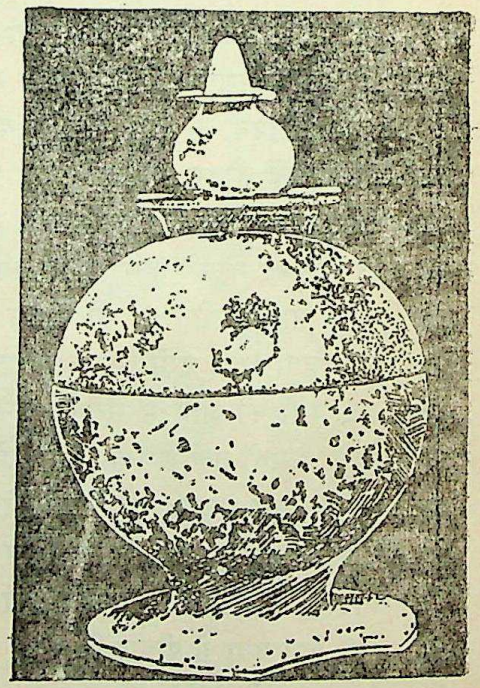

पात्र जिसमें महात्मा बुद्ध की राख है

४५ वर्षों तक पूर्वी भारत में नर-नारियों को शान्ति का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रास्ता दिखा कर ८१ वर्षों की आयु में बुद्ध का कुशीनगर (आजकल की कसिया) में देहान्त हो गया।

शिक्षाओं का सार

महावीर और बुद्ध दोनों ने आर्यों के वर्ण-भेद, वेदवाद, कमकाँड एवं यज्ञों में पशु-हिंसा का विरोध किया। दोनों ने सदाचार और विचारों की पवित्रता का उपदेश दिया। उपनिषदों ने भी ये बातें बतायी थीं, परन्तु उपनिषद वेदों के ज्ञान और ईश्वर, जीव आदि के बारे में सोचने-विचारने पर बहुत जोर देते थे। इसलिए उपनिषदों का ज्ञान-मार्ग साधारण जन के लिए सुगम नहीं था। महावीर और बुद्ध ने वेद या ईश्वर के ज्ञान की चर्चा छोड़ कर लोगों को जनसाधारण की भाषा में अच्छे कर्मों को करने का उपदेश दिया। अतः उनके **कर्म-मार्ग** को लोगों ने बहुत पसन्द किया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—जैन धर्म का किसने और कब प्रचार किया ?

२—वर्धमान महावीर के जीवन-चरित का वर्णन करो।

३—जैन धर्न की शिक्षाएँ क्या हैं ?

४—गौतम बुद्ध के जीवन-चरित के विषय में क्या जानते हो ?

५—बौद्ध धर्म की शिक्षाएं क्या हैं ?

६—महावीर और बुद्ध की शिक्षाओं का सार बताओ। लोगों ने उनकी शिक्षाओं को क्यों पसन्द किया ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सातवां अध्याय

यूनानी आक्रमण-सिकन्दर

बालको, तुमने पिछले मगध के सम्राट शिशुनाग की विजयों और उसके मगध साम्राज्य का इतिहास पढ़ा है। तुम्हें याद होगा कि पंजाब शिशुनाग के मगध साम्राज्य में शामिल नहीं था। शिशुनाग के बाद उसके वंशजों ने भी सतलज या व्यास नदी के पश्चिम की ओर बढ़ने का प्रयत्न नहीं किया और इस प्रकार पंजाब उत्तर भारत की राजनीतिक धारा से अलग रहा। पंजाब में उस समय अनेक वीर और स्वतन्त्र परन्तु छोटे-छोटे राजतन्त्र व गणतन्त्र थे, जिनमें परस्पर लाग-डाँट रहती थी। कोई एक इतना बलवान नहीं था जो उनमें राजनीतिक एकता बना सकता। पंजाब की ऐसी दशा में उस पर बाहर से एक आक्रमण हुआ। यूनान का दिग्विजयी राजा सिकन्दर संसार को जीतने निकला। उसने मिस्र, पश्चिमी एशिया और ईरान को लेकर हिन्दूकोह को पार किया।

हिन्दूकोह के उत्तर में उस समय **शशिगुप्त** राज्य करता था। वह ईरान की ओर से सिकन्दर के विरुद्ध लड़ा भी था, पर हार कर सिकन्दर का सहायक बन गया। इधर **तक्षशिला के राजा आम्भि** ने सिकन्दर को हमला करने के लिए

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बुलाया, क्योंकि वह उसकी मदद से अपने पड़ोसी राजा पुरु को नष्ट करना चाहता था। सिकन्दर को अच्छा अवसर मिला। वह हिन्दूकोह और सिन्धु नदी के बीच की भारतीय वस्तियों को लेने के लिए आगे बढ़ा। पग-पग पर लड़ाई हुई और घोर युद्धों के बाद सिकन्दर की जीत हुई। अब सिकन्दर ने आम्भि की सहायता से सिन्धु नदी को पार किया। तक्ष-शिला में उसकी खूब खातिर हुई।

सिकन्दर

आम्भि ने उसे **केकय जनपद के राजा पुरु** पर चढ़ाई करने के लिए खूब उभाड़ा। सिकन्दर ने पुरु को अपनी अधीनता मनवाने के लिए दूत भेजकर बुलाया। पुरु ने उत्तर दिया कि मैं रणक्षेत्र में ही यवनराज के दर्शन करूँगा। युद्ध सामने दिखाई देने लगा।

पुरु का राज्य झेलम के इस पार था। झेलम के तट पर पुरु की सेना आ जुटी। सिकन्दर को नदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पार करना कठिन हो गया। धोखे से एक रात को वर्षा में सिकन्दर ने झेलम के कुछ ऊपर जाकर अपनी सेना

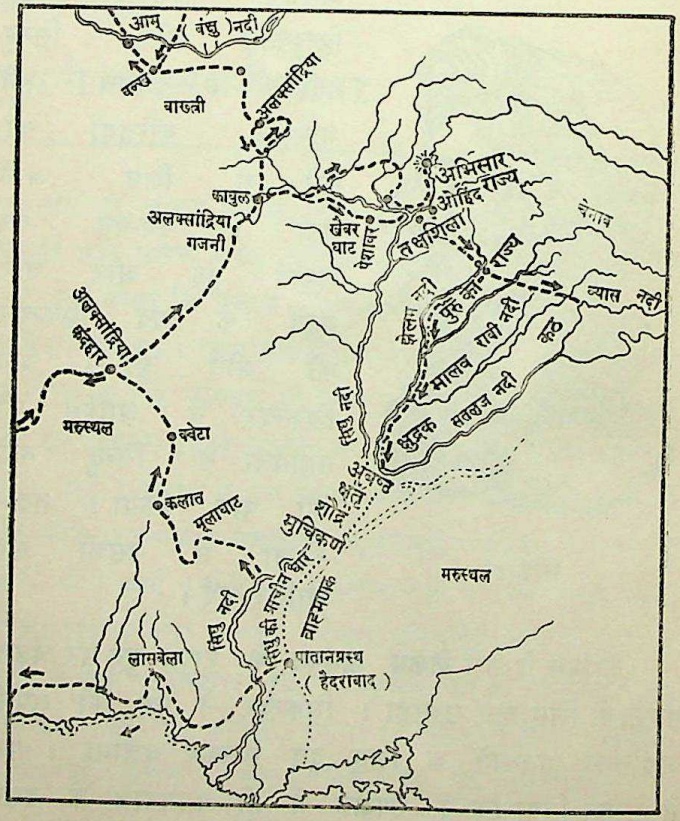

सिकन्दर की विजय-यात्रा

का पार उतार दिया। इसकी खबर मिलते ही पुरु ने अपने पुत्र को सेना देकर सिकन्दर को रोकने के लिए भेजा, परन्तु वह युद्ध में हार गया। अब सिकन्दर और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुरु आमने-सामने हुए। दोनों सेनाओं में जमकर युद्ध हुआ (जुलाई, ई० पू० ३२६)।

पिछली रात को वर्षा से रणक्षेत्र में कीचड़ हो गयी थी। इस कारण पुरु की सेना के १३० रथों की गति रुक गयी। दूसरे, पुरु के सैनिक अपने लम्बे धनुषों को भूमि में टेक कर तीर चलाते थे। कीचड़ के कारण उनके धनुष धरती में धँसने लगे। यूनानी सेना अधिकतर घुड़सवारों की थी जो तेजी से जिधर चाहे उधर घूमकर धावा कर सकती थी। पुरु की २०० हाथियों की सेना तेजी के साथ इधर-उधर नहीं दौड़ सकती थी। इतने में हाथी भी भड़क कर काबू के बाहर हो गये।

पुरु की सेना में भगदड़ मच गयी, परन्तु वीर पुरु जो साढ़ छह फुट लम्बा और भीम की तरह बलवान था बराबर लड़ता रहा। रणभूमि छोड़कर भागा नहीं। अन्त में वह बुरी तरह घायल होकर घिर गया। पुरु को बन्दी बनाकर जब सिकन्दर के सामने लाया गया, तब सिकन्दर ने उससे पूछा, "आपने हमारे साथ युद्ध किया है। अब आपके साथ कैसा बर्ताव किया जाय ?" पुरु ने उत्तर दिया, "वैसा ही बर्ताव, जैसा राजाओं के साथ किया जाता है।" इस उत्तर को सुनकर सिकन्दर प्रसन्न हो गया। उसने पुरु को मित्र बना कर उसका राज्य वापस कर दिया। इससे उसे अगले युद्धों में पुरु की मदद मिल गयी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब सिकन्दर मार्ग में अनेक युद्धों को करते हुए राबी नदी के पूर्व कठ नाम के गणराज्य की ओर बढ़ा। वहाँ कठों ने अपनी राजधानी के चारों ओर रथों का घेरा बना लिया था। उसको भेदना सिकन्दर के लिए असम्भव हो गया। उस समय जब पुरु अपनी सेना लेकर सिकन्दर की सहायता को पहुँचा, तब कहीं सिकन्दर कठों को हरा सका।

कठों को जीत कर सिकन्दर व्यास नदी के किनारे पहुँचा। अब उसकी सेना ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। कारण यह था कि यूनानी सेना लड़ते-लड़ते थक गयी थी। उसे अपना देश छोड़े कई वर्ष बीत गये थे। अब वह घर लौटने की धुन में थी। इसके सिवाय पंजाब के युद्धों से उसे यह भी अनुभव हो गया था कि भारत के सैनिक बड़े विकट योद्धा और एशिया वालों में सबसे अधिक वीर हैं। व्यास के पार नन्द का प्रवल मगध साम्राज्य था। उसकी शक्तिशाली सेना का वृत्त भी यूनानी सेना ने अवश्य सुना होगा। अतः यूनानी सैनिकों ने हिम्मत हार दी। सिकन्दर विवश होकर वहाँ से लौट पड़ा और झेलम पर वापस पहुँचा। वहाँ दो हजार नावों का बेड़ा बनाया गया और जल व स्थल के रास्ते यूनानी सेना ने भारत से कूच किया। सिकन्दर ने पुरु को अपनी ओर से पंजाब का शासक बना दिया।

लौटते हुए मार्ग में मालव, क्षुद्रक आदि बड़े प्रबल गणराज्य पड़ते थे। उन्होंने सिकन्दर का कड़ा विरोध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। मालवों के साथ एक युद्ध में सिकन्दर के बर्छा लगा और वह मरते-मरते बचा। जैसे-तैसे भारत से विदा होकर समुद्र और स्थल के मार्गों से वह अपनी बची खुची सेना के साथ बगदाद के पास **काबुल** पहुँचा। परन्तु सिकन्दर को अपनी मातृभूमि यूनान का दर्शन नहीं बदा था। वहीं बाबुल में केवल ३३ वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गयी (ई०पू० ३२३)।

भारत पर सिकन्दर के आक्रमण का प्रभाव

सिकन्दर के आक्रमण से भारत पर कोई गहरा प्रभाव नहीं पड़ा। इसी से संस्कृत भाषा के प्राचीन ग्रन्थों में उसकी ओर संकेत भी नहीं है। उसके लौटते ही भारतीयों ने यूनानियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। उसका नेता चन्द्रगुप्त नाम का एक युवक था। उसने पंजाब से यूनानी राज्य को मिटा दिया।

सिकन्दर के आक्रमण से यह लाभ अवश्य हुआ कि यूरोप और एशिया के दो सभ्य देशों का सम्बन्ध हो गया। सिकन्दर ने यूनानी, ईरानी और भारतवासियों में परस्पर बहुत से विवाह करवाये। भारत देश के व्यापारी मिस्र और यूनान आने-जाने लगे।

सिकन्दर लौटते समय भारत, अफगानिस्तान आदि देशों में बहुत से यूनानी छोड़ गया था। आगे चलकर भारतवासियों ने ज्योतिष और मूर्तिकला में यूनानियों से बहुत कुछ सीखा तथा यूनानियों पर भी भारत के धर्म और ज्ञान का बहुत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
प्रभाव पड़ा। यूनान के प्रसिद्ध ज्ञानी विद्वान पैथागोरस ने आत्मा और पुनर्जन्म के बारे में जो बातें कही हैं, उन पर भारत की विद्या और ज्ञान का प्रभाव साफ-साफ झलकता है।

एक बात और भी है, सिकन्दर के आक्रमण से पंजाब के राज्य निर्बल हो गये। इस कारण उन्हें मगध साम्राज्य में मिलाने में चन्द्रगुप्त मौर्य की कठिनाई नहीं हुई।

अभ्यास के लिए प्रश्न–

१–सिकन्दर कौन था ? वह भारत में क्यों आया ?

२–सिकन्दर के आक्रमण के समय पंजाब की राजनीतिक दशा क्या थी ?

३–पंजाब में सिकन्दर को किन-किन से युद्ध करने पड़े ?

४–पुरु कौन था ? पुरु और सिकन्दर के युद्ध का वर्णन करो।

५–आम्भि कौन था ? उसे देशद्रोही क्यों कहा जाता है ?

६–सिकन्दर व्यास नदी के आगे क्यों नहीं बढ़ सका ?

७–भारत पर सिकन्दर के आक्रमण का क्या प्रभाव पड़ा ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आठवां अध्याय

मौर्य साम्राज्य

पाठ १—चन्द्रगुप्त मौर्य

बालको, तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि सिकन्दर के भारत से लौटते ही युवक चन्द्रगुप्त के नेतृत्व में पंजाब की जनता ने यूनानियों का विरोध किया और भारत से उनके राज्य को मिटा दिया। चन्द्रगुप्त तक्षशिला में सिकन्दर से मिला भी था और नन्दों के मगध साम्राज्य पर अधिकार करना चाहता था। सिकन्दर के साथ ठहर कर उसने यूनानियों की युद्धकला के भेदों को अवश्य समझ लिया होगा। आगे चलकर ये अनुभव चन्द्रगुप्त के बड़े काम आये।

मगध पर अधिकार

चन्द्रगुप्त नेपाल की तराई में स्थित 'मोरिय' गणराज्य का एक क्षत्रिय युवक था। किसी प्रकार मगध सम्राट से उसकी अनबन हो गया। तब उसने नन्दों के वंश का नाश करने की ठानी। मगध के सम्राट धननन्द ने उसे फांसी देने की आज्ञा निकाली। चन्द्रगुप्त पंजाब की ओर भाग निकला। वहाँ उसकी मुलाकात तक्षशिला विद्यालय के आचार्य और नन्दों के शत्रु विष्णुगुप्त चाणक्य से हुई। चाणक्य की सहायता से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने पंजाब और सिन्ध में यूनानियों के विरुद्ध विद्रोह करा दिया। इसके बाद उसने पंजाबी राज्यों की एक सेना का संगठन करके धननन्द को हरा दिया और स्वयं मगध का सम्राट बन बैठा। चाणक्य उसका मन्त्री बना (ई०पू० ३२२)।

सेलेउकस की हार

चन्द्रगुप्त मौर्य के राज्य-काल में सिकन्दर के एक सेनापति सेलेउकस ने, जो अब पश्चिमी एशिया का शासक था, पंजाब पर चढ़ाई की। चन्द्रगुप्त ने उसे परास्त किया। सेलेउकस को काबुल, हरात, कन्दहार और बलचिस्तान, ये चार प्रदेश तथा विवाह में अपनी राजकुमारी चन्द्रगुप्त को देनी पड़ी। चन्द्रगुप्त ने अपने ससुर को ५०० हाथी दिये और मित्रता निभाने के लिये उसके दूत मेगास्थनेस को अपने राज्य-दरबार में रखा।

सेना का संगठन

चन्द्रगुप्त मौय के दिग्विजय का कारण उसकी बलवान सेना थी। उसमें ६,००,००० पदल, ३०,००० घुड़सवार, ९,००० हाथी और ८,००० के लगभग रथ थे। इनके अलावा उसके पास जलसेना भी थी। इतनी विशाल सेना का प्रबन्ध पांच-पांच सदस्यों की छह समितियों के सुपुर्द था जो (१) जल सेना, (२) रसद, (३) पैदल, (४) सवार, (५) रथसेना और (६) हाथी दल की देखभाल और प्रबन्ध करती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नगर का प्रबन्ध

चन्द्रगुप्त के राज्य का आँखों देखा वर्णन यूनानी राजदूत मेगास्थेनेस ने लिखा है। उसने मगध की राजधानी पाटलिपुत्र का वर्णन भी किया है। पाटलिपुत्र नगर का घेरा ३४½ किलोमीटर था। उसके चारों ओर काठ की भारी और मोटी दीवार थी जिसमें ६४ फाटक और ५७० मीनार थे। फिर नगर के चारों ओर गहरी और पानी भरी खाई थी। नगर में काठ का विशाल राजभवन था। उसके खम्भों पर गंगा-जमुनी का काम और सुनहरी बेलें बनी थीं। ऐसा विशाल नगर और सुन्दर राजभवन उस समय दुनिया में किसी दूसरी जगह नहीं था।

मेगास्थेनेस के अनुसार नगर का प्रबन्ध ३० सदस्यों की एक सभा करती थी। उसे पाँच-पाँच सदस्यों की छह समितियों में बाँट दिया गया था। हरएक समिति अपने-अपने विभाग का काम देखती थी। छह विभाग इस प्रकार थे–(१) शिल्प, (२) विदेशी यात्री, (३) जनगणना, (४) व्यापार, (५) उद्योग-धन्धे और (६) कर। इससे तुम समझ सकते हो कि आज से सवा दो हजार वर्षों पहले भी भारत की राजधानी पाटलिपुत्र का प्रबन्ध एक नगर-सभा करती थी। उसे इतने अधिकार थे जितने कि आजकल की नगर-महापालिकाओं को भी नहीं हैं।

उस समय की नगर-सभा की **शिल्प समिति** कारीगरों की मजदूरी तय करती, कारखाने के कच्चे माल पर निगाह रखती तथा कारीगरों को उत्तम चीजों का उचित मूल्य दिलवाती थी। **विदेशी यात्री समिति** एक तरह से वैदेशिक विभाग का काम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

करती थी। मौर्य-राज्य में बहुत से विदेशी व्यापार करने और विद्या व कलाओं को सीखने के लिए बड़े-बड़े नगरों में रहते थे। समिति का कर्तव्य था कि वह उनके आराम का ध्यान रखे और यह भी जाँचती रहे कि वे लोग भारत के विरुद्ध किसी प्रकार की राजनीति में तो भाग नहीं लेते हैं। **जनगणना समिति** नगर में जन्म और मरण का हिसाब रखती थी। **व्यापार समिति** नाप-तौल की देखभाल रखती और व्यापार करने के लिए आज्ञापत्र (लैसंस) देती थी। **उद्योग समिति** कारखानों की बनी हुई वस्तुओं की देखभाल रखती थी। बेचने वाले नयी और पुरानी चीजों को मिला नहीं सकते थे। मिलावट करने वालों को कठोर दंड मिलता था। **कर समिति** बेची गयी चीजों का दसवां भाग कर के रूप में वसूल करती थी।

मेगास्थेनेस ने लिखा है कि सम्राट चन्द्रगुप्त का राज्य-प्रबन्ध बहुत उत्तम था। वह किसानों और शिल्पियों का बहुत ध्यान रखता था। खेती की उन्नति के लिए राज्य में नहरें, तालाब और झीलें बनी हुई थीं। सेना को कड़ी आज्ञा थी कि प्रयाण के समय खेती की हानि न हो। **शिल्पियों** को कष्ट देने वालों को कठोर दंड मिलता था। चोर-डाकुओं से प्रजा की रक्षा करने के लिए कड़े कानून बनाये गये थे। साधारण चोरी का दंड फांसी था, इसलिए चोरियां नहीं होती थीं। इस कारण लोग अपने घरों में ताला नहीं लगाते थे।

चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी बिन्दुसार

चन्द्रगुप्त मौर्य ने २४ वर्षों तक राज्य किया। उसका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत के इतिहास में बड़ा महत्व है। समूचे देश पर अधिकार करने वाला वह पहला **एकछत्र सम्राट** था। उसने इतिहास में पहली बार भारत में **राजनीतिक एकता** कायम की।

चन्द्रगुप्त मौर्य के बाद उसका पुत्र बिन्दुसार सम्राट बना (ई० पू० २९७)। चाणक्य उसके समय में भी मन्त्री के पद पर था। चाणक्य की सहायता से बिन्दुसार ने पूर्व समुद्र से पश्चिम समुद्र तक की १६ राजधानियों को जीत कर मौर्य साम्राज्य का विस्तार किया। मन्त्री विष्णुगुप्त, चाणक्य या कौटिल्य ने **अर्थशास्त्र** नाम का राजनीति का एक ग्रन्थ लिखा है जिसमें मौर्य-काल के शासन-प्रबन्ध का हाल है। बिन्दुसार ने लगभग २५ वर्षों तक राज्य किया। ई० पू० २७३ में उसकी मृत्यु हुई।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—चन्द्रगुप्त कौन था ? उसे मौर्य क्यों कहते हैं ?

२—चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध साम्राज्य को कैसे प्राप्त किया ?

३—चन्द्रगुप्त मौर्य और सेलेउकस के युद्ध का क्या परिणाम हुआ ?

४—मेगास्थेनेस कौन था ? उसने मौर्य साम्राज्य के विषय में क्या लिखा है ?

५—चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना के संगठन का वर्णन करो।

६—चन्द्रगुप्त मौर्य के समय पाटलिपुत्र नगर और उसके प्रबन्ध के विषय में क्या जानते हो ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—अशोक

बालको, तुमने सम्राट अशोक का नाम सुना होगा। कितने गर्व की बात है कि हमारे देश के इस सम्राट का स्थान संसार के उत्तम सम्राटों में सबसे ऊँचा है। इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान एच० जी० वेल्स ने अपनी पुस्तक 'संसार के इतिहास' में लिखा है कि 'इतिहास में आने वाले राजाओं, सम्राटों, धर्म के आचार्यों, सन्त-महात्माओं आदि के बीच अशोक का नाम उज्ज्वल है। वह आकाश में एक अकेले तारे की तरह चमकता है।'

कलिंग युद्ध

अशोक बिन्दुसार का पुत्र था। अपने पिता और पितामह के समान उसने भी मौर्यों के राज्य को बढ़ाया। उस समय द्रविड़ों का एक प्रबल राज्य कलिंग (आजकल के उड़ीसा) में था जिसे चन्द्रगुप्त और बिन्दुसार नहीं ले सके थे। अशोक ने अपने राज्य के आठवें वर्ष में उस पर आक्रमण किया और उसे जीत कर मौर्य साम्राज्य में मिला लिया। संसार का कोई दूसरा योद्धा या विजेता इस तरह की विजय से फूला न समाता, परन्तु अशोक के चित्त पर इसका उल्टा असर हुआ। उसने जब देखा कि इस युद्ध में लगभग एक लाख आदमी मारे गये, डेढ़ लाख कैद हुए और इसके कई गुना युद्ध के कारण भूख-प्यास और रोगों से तड़प कर मर गये, तब उसे बड़ा शोक हुआ। उसका कठोर हृदय करुणा से पिघल गया। उस समय जैन और बौद्ध धर्म अहिंसा का प्रचार करते थे। अशोक बौद्ध धम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की ओर झुक गया। उसने निश्चय किया कि मैं राज्य-विस्तार के लिए फिर कभी युद्ध नहीं करूँगा। उसने इस निश्चय को अपने लगभग ४० वर्षों (ई० पू० २७३-२३२) के शासन के शेष काल में पूर्ण रूप से निभाया। इतना ही नहीं, वह अपने बेटों-पोतों के लिए भी यह लिख गया कि 'वे नया विजय न करें; जो विजय बाण खींचकर ही हो सके, उसमें भी क्षमा और नरमी से काम लें; धर्म के द्वारा जो विजय हो उसे ही असली विजय मानें।' अशोक ने इस प्रकार के धर्म-विजय के लिए स्वयं अपने पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा को लंका भेजा।

अशोक की धर्म विजय

अशोक ने दिग्विजय की जगह धर्म-विजय शरू की। उसके एक शिलालेख के शब्दों में उसका **भेरी-घोष** अर्थात लड़ाई के नगाड़े की आवाज **धम्म-घोष** यानी धर्म के प्रचार की ध्वनि में बदल गयी। यह एक नयी नीति थी। संसार में ऐसे तो बहुत से राजा-महाराजा हुए हैं जिन्होंने तलवार के बल से देश-विदेशों को जीता, परन्तु अकेला अशोक ही ऐसा राजा है जिसने लोक-सेवा के द्वारा देश-विदेशों की विजय की।

अशोक ने अपने देश, पड़ोस के देश तथा दूर के यूनानी राज्यों में सड़कों के किनारे **पेड़ लगवाये** तथा मनुष्यों और पशुओं की दवा-दारू के लिए **अस्पताल खुलवाये**। लोगों का ध्यान धर्म की ओर खींचने के लिए उसने स्वर्ग-लोक के **दृश्यों के तमाशे दिखलाने** का प्रबन्ध किया और **धर्म-यात्राएं** जारी कीं। उसने **धर्ममहामात्र**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाम के सरकारी कर्मचारी नियत किये जिनका कर्तव्य प्रजा को धर्म का मार्ग दिखाना था।

धीरे-धीरे उनकी श्रद्धा बौद्ध धर्म पर जम गयी। तब उसने बुद्ध के जीवन से सम्बन्ध रखने वाले स्थानों

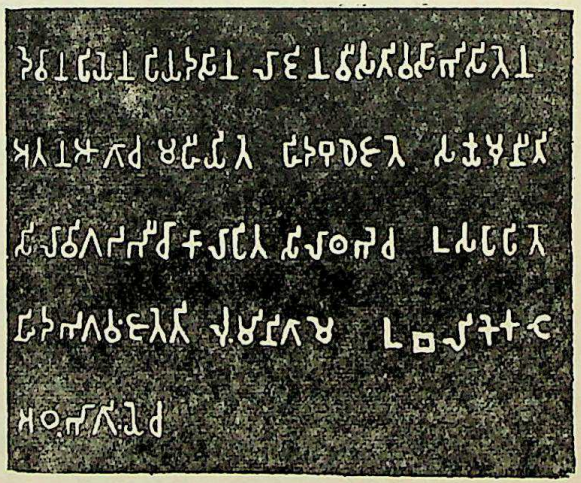

अशोक की धम्मलिपि (लुम्बिनी स्तम्भ) पर

की यात्रा और दर्शन किये तथा अनेक **स्तूप** अर्थात बौद्ध मन्दिर बनवाये। अहिंसा-पालन के लिए शिकार खेलना और मांस खाना बन्द कर दिया। उसने धर्म की बातों को चट्टानों, पत्थर के स्तम्भों और पहाड़ों की गुफाओं में लिखवा दिया है। इन लेखों को अशोक ने **धम्मलिपि** का नाम दिया है। आगे अशोक के साम्राज्य के मानचित्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में उन स्थानों को दिखाया है,जहाँ अभी तक उसके शिलालेख या स्तम्भलेख मिले हैं।

अशोक ने पाटलिपुत्र में बौद्ध धर्म की एक सभा **(संगीति)** बुलायी। उसमें बौद्धों के आपसी मतभेद दूर किये गये। इसके सिवाय उस सभा में धर्म-प्रचारकों के दल बनाये गये जो कश्मीर, नेपाल, गान्धार, मैसूर, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, यूनानियों के राज्य, हिमालय प्रदेश, बरमा और लंका तक धर्म का मार्ग दिखाने के लिए भेजे गये।

अपने इस काम में अशोक को बड़ी सफलता मिली। भारत का सन्देश—**सेवाधर्म से संसार की विजय**—उस समय के सारे संसार में, जिसे भारतवासी जानते थे, पहुँच गया। अशोक ने एक शिलालेख में कहा है कि "देवताओं का प्रिय (अर्थात अशोक) धर्म के द्वारा इस विजय को मुख्य विजय समझता है, यहाँ तथा पड़ोसी देशों, यहाँ तक कि छह सौ योजनों दूर के देशों, में भी यह विजय देवानां प्रिय को प्राप्त हुई है।" **अशोक** के प्रयत्नों का परिणाम यह हुआ कि बौद्ध धर्म की शिक्षाएं संसार की सभ्यता का एक मुख्य अंग बन गयीं।

अशोक के धर्म की विशेषताएं

अशोक बौद्ध होते हुए भी सब धर्मों का आदर करता था। उसने अपने एक लेख में बौद्धों के साथ-साथ ब्राह्मणों और जैनों का आदर करने और उन्हें दान देने के लिए कहा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

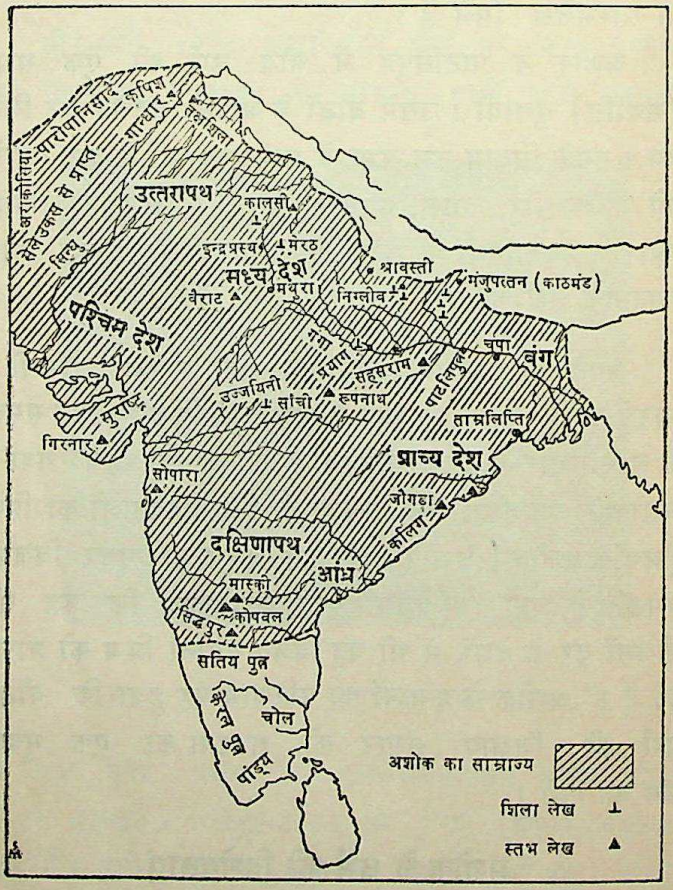

अशोक का साम्राज्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। उसने अपनी धम्मलिपियों में ऐसी शिक्षाएं दी हैं जो सब धर्मों का '**सार**' है—जसे दया, दान, सत्य, शौच या पवित्रता, अहिंसा, माता-पिता की सेवा, बड़ों और गुरुओं का आदर, मित्र, परिवार और बिरादरी के साथ उचित बर्ताव, नौकरों के साथ अच्छा व्यवहार, धन का अधिक जमा न करना, थोड़ा व्यय करना आदि।

अशोक पूर्ण रूप से उदार था और सब धर्मों के मानने वालों पर समान रूप से दयालु था। उसके राज्य में सब लोगों को धार्मिक स्वतन्त्रता थी। अशोक समझता था कि ये ही बातें '**पुराना पकिति**' अर्थात सनातन धर्म हैं जिसका उपदेश बुद्ध ने किया था।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—अशोक कौन था ? संसार में अशोक का इतना नाम क्यों है ?

२—अशोक ने कलिंग पर क्यों चढ़ाई की ? उस पर कलिंग-विजय का क्या प्रभाव पड़ा ?

३—अशोक के धार्मिक विचार क्या थे ?

४—बौद्ध धर्म की उन्नति के लिए अशोक ने क्या किया ?

५—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो:—

भेरी-घोष, धम्म-घोष, पुराना पकिति, धम्मलिपि।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३—अशोक के स्मारक

बालको, तुमने पिछली कक्षा में पढ़ा है कि अशोक ने अपने साम्राज्य में शिलाओं, स्तम्भों और गुफाओं में अपनी धर्मलिपियां खुदवा दी थीं। अब तक उसकी धर्मलिपियां अनेक **शिलाओं, स्तम्भों और गुफाओं** में मिल चुकी हैं।

अशोक ने कई हजार स्तूप भी बनवाये थे। स्तूप आधे अंडे के आकार की ठोस समाधियाँ थीं। उनमें बुद्ध की धातुओं यानी फूलों को रखा गया था। वाराणसी के पास सारनाथ में धर्मराजिका स्तूप का निचला भाग अब भी विद्यमान है। अपनी असली दशा में अशोक के स्तूप २१.३३ मीटर से ९१.४४ मीटर तक ऊँचे थे। जिन स्तम्भों पर अशोक के लेख खुदे हैं, उनकी औसत ऊँचाई १२.१९ मीटर है।

साँची में जो स्तूप है उसे भी अशोक ने बनवाया था, परन्तु उसके चारों ओर जंगला और द्वार बाद में शुंग-काल में बनवाये गये। ये सब इमारतें और स्तम्भ लगभग दो हजार दो सौ वर्षों के बाद अब भी सम्राट अशोक के जीते-जागते स्मारक हैं।

अशोक के स्मारक प्रायः बड़े सुन्दर हैं। उसके स्तम्भ तो कारीगरी के अनुपम नमूने हैं। आओ, इस पाठ में हम अशोक के एक स्तम्भ का अध्ययन करें। पृष्ठ ७५ पर उसका चित्र ध्यान से देखो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह स्तम्भ सारनाथ में था जहाँ बुद्ध ने अपने पाँच साथियों को उपदेश देकर पहले पहल **'धर्मचक्र-प्रवर्त्तन'** किया था। अब सारनाथ का स्तम्भ अपने मूल रूप में नहीं है।

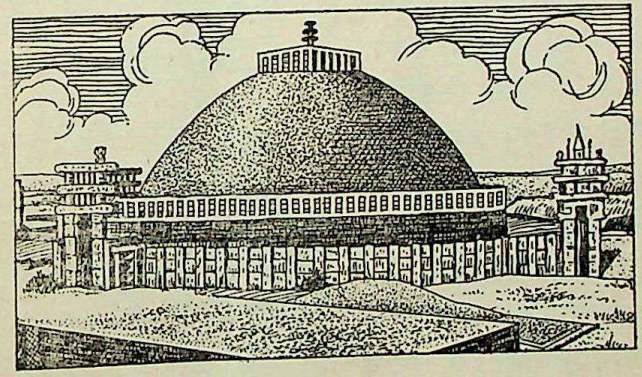

साँची का स्तूप

वह टूट गया है, परन्तु उसके टुकड़े मौजूद हैं। स्तम्भ नीचे से ऊपर को पतला होता जाता है। वह समूचा का समूचा एक ही चट्टान को काट कर बनाया गया था। अध्ययन की आसानी के लिए उसके मोटे-मोटे तीन भाग कर सकते हैं—तना, गला और सिर।

चित्र में गला और सिर दिखलाये गये हैं।

(१) स्तम्भ का तना बिल्कुल सादा है, परन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बहुत ही चिकना और चमकदार है । इस पर अशोक की धर्मलिपि खुदी है ।

(२) स्तम्भ का गला गोल है । उसके चारों ओर चार चक्र हैं तथा चक्रों के बीच में हाथी, बैल, घोड़ा और सिंह की मूर्तियां खुदी हैं । इन चक्रों और पशुओं को चलती हुई दशा में बनाया गया है ।

(३) स्तम्भ के सिर पर चार सिंह अपनी पीठों को एक-दूसरे से सटाये उकड़ू बैठे हैं । उनके मुख चार दिशाओं की ओर हैं ।

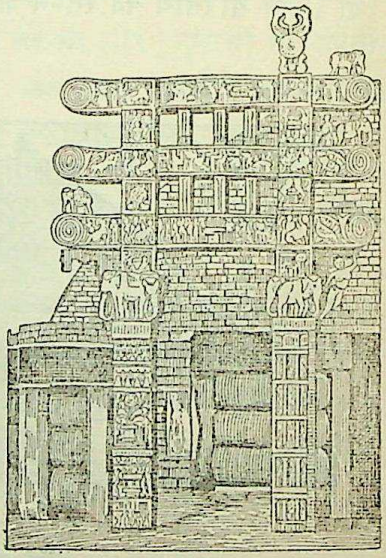

साँची का स्तूप-द्वार

स्तम्भ की असली दशा में ये सिंह अपने मस्तकों पर एक विशाल चक्र उठाए हुए थे जो बाद में कभी टूट गया । इसके कुछ टुकड़े सारनाथ म्युजियम में सुरक्षित हैं । तुमने अशोक के चक्र और सिंह-मूर्तियों के अनेक चित्र देखे होंगे । नव भारत के गणराज्य ने अशोक-चक्र को राष्ट्रीय झंडे में अंकित किया है और सिंह-मूर्तियों को केन्द्रीय सरकार की सील यानी शासन-मुद्रा बनाया है । डाक के टिकटों, सरकारी सिक्कों व कागज-पत्र पर सिंह-मूर्तियों का चित्र अंकित रहता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह स्तम्भ चुनार के पत्थर से बनाया गया था। पत्थर में हल्की गुलाबी झलक है और उसमें धुंधले काले रंग की चित्तियां पड़ी हुई हैं। स्तम्भ के सिर की ऊँचाई, जिस पर सिंह बैठे हैं २.१ मीटर है और चौड़ाई ·८६ मीटर है। पीठ सटा कर उकड़ बैठे हुए सिंह १·१४ मीटर ऊँचे हैं।

सारनाथ का सिंहशीर्षक स्तम्भ अपने मूल रूप में

अशोक-स्तम्भ के शिरोभाग की ये चार सिंह-मूर्तियां कला-कौशल के विचार से सिरमौर हैं। ऐसी सजीव मूर्तियां संसार में अब तक कहीं नहीं बनी हैं। मूर्तियां यद्यपि सिंह जैसे हिंसक पशु की हैं, पर उनके चेहरे से वीरता और साहस के साथ-साथ कोमलता और शान्ति झलकती है। सिंह स्वतः भगवान बुद्ध की याद दिलाते हैं। वह शाक्य सिंह कहलाते थे। सिंहों के मस्तकों पर विशाल धर्मचक्र बुद्ध जी के धर्म चक्र-प्रवर्तन का प्रतीक था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समूचे स्तम्भ और मूर्तियों के ऊपर पालिश (वज्रलेप) है। यह पालिश इतना टिकाऊ है कि दो हजार वर्षों से भी अधिक समय तक धूप और आँधी व पानी सहकर अभी तक बना है। इस लेप से पत्थर इतना सुन्दर, चिकना और चमकदार हो गया है कि पत्थर को देखकर किसी धातु का भ्रम होता है।

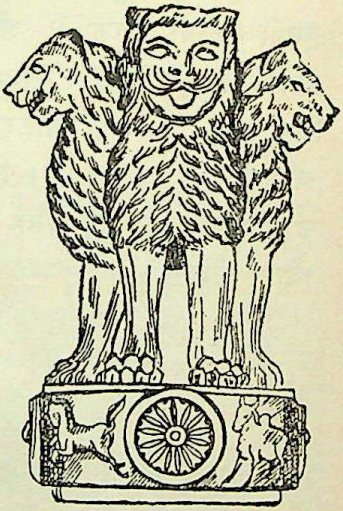

भारत के वर्तमान गणराज्य की शासन-मुद्रा

अभ्यास के लिए प्रश्न–

१–आजकल अशोक के किस प्रकार के स्मारक मिलते हैं ?

२–अशोक के शिलालेख और स्तम्भ कहाँ-कहाँ पाये जाते हैं ? उन स्थानों को मानचित्र में दिखाओ।

३–सारनाथ के सिंहशीर्षक स्तम्भ का विस्तार से वर्णन करो।

४–भारत के गणराज्य की शासन-मुद्रा क्या है ? उसका चित्र अपनी कापी पर अक्स करो।

५–हमारी राष्ट्रीय ध्वजा में जो चक्र बना है वह कहाँ से लिया गया है ? अपनी कापी पर उसका चित्र बनाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवां अध्याय

मौर्य साम्राज्य की अवनति—विदेशियों के आक्रमण

पाठ १—अवनति के कारण और परिणाम

अशोक के मरने के बाद उसके वंश के राजा निर्बल निकले। इस कारण मौर्य साम्राज्य के टुकड़े होते गये और पचास वर्षों के भीतर चन्द्रगुप्त, बिन्दुसार और अशोक का लगभग सौ वर्षों का बनाया हुआ साम्राज्य मौर्यों के हाथ से निकल गया। उसकी जगह भारत में अनेक नये राजवंश कायम हो गये, जिनमें उत्तर भारत में शुंग और दक्षिण भारत में सातवाहन मुख्य थे। पश्चिमोत्तर भारत फिर यूनानियों के हाथों में चला गया।

मौर्य साम्राज्य के नाश के कारण

मौर्य साम्राज्य के नाश के मुख्य कारण दो थे—एक, अशोक के बाद के मौर्य राजा निर्बल और नासमझ थे। उन्होंने सीमान्त के विद्रोहों को दबाने में लापरवाही की। कई ने केन्द्र से विरोध करके अपने स्वतन्त्र राज्य बना लिए। ऐसी दशा में साम्राज्य कैसे टिक सकता था? दूसरे, मौर्यों की सेना भी कमजोर हो गयी, क्योंकि अशोक की शान्तिवादी नीति से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
सेना में युद्ध का अभ्यास जाता रहा। अहिंसा पर अधिक जोर देने से जनता में भी सनिक रुचि कम हो गयी।

इन बातों के बड़े बुरे परिणाम हुए। यनानियों ने फिर हमले शुरू कर दिये और मौर्य राजा उनका सामना नहीं कर सके। मौर्यों को देश-रक्षा में असमथ पाकर जनता में क्रोध और असन्तोष की अग्नि भड़क उठी। तब अन्तिम मौर्य राजा बृहद्रथ को उसके मन्त्री पुष्यमित्र शुंग ने सेना दिखाते समय ही उसके सामने मार डाला (ई० पू० १८७)। अब मगध में पुष्यमित्र शुंग का राज्य हो गया।

शुंग वंश का राज्य

पुष्यमित्र शुंग एक प्राचीन ब्राह्मण वंश से सम्बन्ध रखता था। उसने मगध साम्राज्य के बचे-खुचे अंश का फिर संगठन किया, यूनानियों से लड़ाइयां लड़ीं और मध्यदेश की राजधानी शाकल (स्यालकोट) को जीता। पुष्यमित्र ने पश्चिम पर अधिकार रखने के लिए उज्जैन के समीप विदिशा को अपनी राजधानी बनाया और अपने पुत्र अग्निमित्र को उसका शासक नियुक्त किया। अग्निमित्र ने विदर्भ यानी बरार को अपने वश में किया।

उस समय के इतिहास में पुष्यमित्र शुंग का बड़ा राष्ट्रीय महत्व है।

यवनों से देश की रक्षा—

यनानियों ने, जिन्हें पुराणों ने यवन नाम दिया है, एक ओर चित्तौड़ और दूसरी ओर अवध को घेर लिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था। यवन सेनाएं मथुरा व गंगा-यमुना के दोआब को जीतती हुई पाटलिपुत्र तक आ पहुँची थीं, परन्तु आपस में लड़ने-झगड़ने के कारण वहाँ ठहरी नहीं। पुष्यमित्र ने यवनों से लोहा लिया और उनको उत्तर भारत से निकाल कर सिन्धु नदी के किनारे तक खदेड़ दिया।

वैदिक धर्म का फिर से उठना—

लगभग तीन सौ वर्षों के बौद्ध धर्म के प्रचार के बाद पुष्यमित्र शुंग के समय में वैदिक धर्म पुनः चमका। मौर्यों की कायरता से उस समय जनता बड़ी क्रुद्ध थी। वह समझती थी कि यूनानियों के मुकाबले में मौर्य राजाओं की भीरुता का कारण उनका बौद्ध और जैन धर्म का मानना है। अतः जनता की रुचि प्राचीन वैदिक धर्म की ओर झुकी। ब्राह्मण वंशी शुंगों ने यज्ञ, हवन आदि कर्मों को फिर जारी किया। पुष्यमित्र ने एक घोड़ा छोड़कर अपने पोते वसुमित्र के साथ एक विशाल सेना दिग्विजय के लिए भेजी। पंजाब में उस घोड़े को यनानियों ने पकड़ लिया। तब वसुमित्र ने सिन्धु के किनारे जाकर यूनानियों को परास्त किया।

अपनी विजयों को प्रकट करने के लिए पुष्यमित्र शुंग ने दो बार अश्वमेध किया। ब्राह्मण धर्म के अनुसार अश्वमेध वही राजा कर सकता था जिसे युद्ध में कोई न हरा सके। इस प्रकार पुष्यमित्र ने ब्राह्मण धर्म को अपना राजधर्म बना कर वेदों के धर्म का फिर से उत्थान किया। हिन्दू कानन की प्रसिद्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुस्तक **मनुस्मृति** भी पुष्यमित्र शुंग के ही राज्य-काल में बनी और संस्कृत भाषा का बड़ा प्रचार हुआ।

पुष्यमित्र ने करीब ३६ वर्षों तक राज्य किया। उसके बाद के शुंग राजा इतने प्रतापी न थे। अतः ई० पू० ७५ में शुंग वंश के एक राजा को मारकर उसका मन्त्री मगध का मालिक हो गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—मौर्य साम्राज्य के पतन के दो मुख्य कारण क्या थे ?

२—पुष्यमित्र शुंग कौन था ? उसका इतिहास में क्या महत्व है ?

३—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो:—

अग्निमित्र, वसुमित्र, अश्वमेध, मनुस्मृति।

पाठ २—यज्ञश्री सातकर्णि

बालको, तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि अशोक के मरने के बाद किस प्रकार मौर्य साम्राज्य की अवनति हुईऔर उसकी दुर्बलता का लाभ उठाकर उत्तर में **शुंग वंश** और दक्षिण में **सातवाहन वंश** ने अपने राज्य बना लिए। आन्ध्र देश, जिसे बिन्दुसार ने मौर्य साम्राज्य में मिलाया था, अशोक के मरने के बाद फिर स्वतन्त्र हो गया। अब उसकी शक्ति पूर्व से पश्चिम को बढ़ती हुई महाराष्ट्र तक पहुँच गयी और आन्ध्र वंश के राजा सातवाहन अर्थात सिंह की सवारी वाले कहलाने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आन्ध्र-सातवाहन वंश के राजा भी **ब्राह्मण** थे। उन्होंने ब्राह्मण धर्म को बहुत बढ़ावा दिया। उनके राज्य-काल में दक्षिण भारत ने विद्या, कला और व्यापार में बड़ी उन्नति की। उस समय भारतीय व्यापारी जहाजों में माल लाद कर ईरान, अरब और मिस्र आदि देशों को ले जाते थे।

आन्ध्र-सातवाहन वंश में कई राजा बड़े प्रतापी और पराक्रमी हुए। उनके एक राजा गौतमीपुत्र सातकर्णि ने सारे दक्षिण और मध्य भारत को जीता और विदेशी शकों को उखाड़ फेंका।

शक लोग एक विदेशी लड़ाकू जाति के थे जो सिन्ध पर अधिकार करके सौराष्ट्र और उज्जैन पर छा गये। एक बार तो शकों ने मथुरा पर भी अधिकार कर लिया। पंजाब के यवन राज्य उनके सामने नहीं टिक सके और तक्षशिला शकों की राजधानी बन गयी। कहते हैं कि **गौतमीपुत्र सातकर्णि** ने शकों से उज्जैन जीता और उनका भीषण संहार किया। उसने उत्तर भारत के शुंगों के समान दक्षिण भारत में **वैदिक** धर्म की पताका फहरायी। गौतमीपुत्र के मरने के बाद शक फिर प्रबल हो गये और आन्ध्र-सातवाहनों के प्रताप का सूर्य अस्त होने लगा।

यज्ञश्री शातकर्णि ने पुनः आन्ध्र-सातवाहन वंश की श्री या वभव को ऊपर उठाया। उसने बंगाल की खाड़ी और अरब सागर के बीच के सारे दक्षिण पर आन्ध्र-साम्राज्य कायम कर दिया तथा गुजरात और सौराष्ट्र को शकों से जीता।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उसने शकों के सिक्कों के समान अपने नाम के सिक्के ढलवाये और उन्हें शकों के जीते हुए प्रदेश में चलाया। यहाँ उसके चाँदी के एक सिक्के का चित्र दिया है। उसके चित भाग में राजा का सिर और उसका नाम तथा पट भाग में उज्जैन का चिह्न और उसका नाम है।

यज्ञश्री सातकर्णि का सिक्का

यज्ञश्री सातकर्णि के शासन-काल में स्थल और जल दोनों प्रकार के व्यापार की बड़ी वृद्धि हुई। उसके कुछ सिक्कों पर दो मस्तलों का जहाज बना है। इससे प्रकट होता है कि समुद्रों पर भी उसका अधिकार था। यज्ञश्री सातकर्णि की मृत्यु के बाद सातवाहन वंश के राजा इतने बलवान नहीं थे कि शकों, आभीरों आदि विदेशियों के हमलों को रोक सकते। अतः १३०ई० के लगभग दक्षिण के सातवाहन वंश के राज्य का अन्त हो गया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—सातवाहन कौन थे ? उनके कुछ राजाओं के नाम बताओ।
२—सातवाहन वंश के राज्य-काल में दक्षिण ने क्या उन्नति की ?
३—यज्ञश्री सातकर्णि कौन था ? वह क्यों प्रसिद्ध है ?
४—यज्ञश्री सातकर्णि के सिक्के का चित्र अपनी कापी पर बनाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३ – कुषाण वंश–कनिष्क साम्राज्य

बालको, तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि पश्चिमोत्तर भारत में शकों ने यूनानी राज्यों का अन्त करके अपने राज्य स्थापित कर लिए थे। यह घटना ईस्वी सन् से लगभग सौ वर्षों पहले की है। उसके करीब डेढ़ सौ वर्षों के बाद शकों को भी मध्य एशिया की ओर से आये हुए नये आक्रमणकारी कुषाणों के आगे सिर झुकाना पड़ा। पहले दो कुषाण राजाओं ने शकों से पंजाब, सिन्ध और मथुरा प्रान्त छीन लिये।

कनिष्क कुषाण वंश का तीसरा और सबसे प्रसिद्ध व प्रभावशाली राजा हुआ। वह ७८ ईस्वी में गद्दी पर बैठा था और करीब २३ वर्षों तक राज्य करने के बाद लगभग १०१ ई० में मार डाला गया। उसने साकेत (अयोध्या) और पाटलिपुत्र को जीता। उत्तर में उसने चीनियों से हिन्दू-कोह के उस पार के कुछ प्रान्त ले लिये। इस प्रकार कनिष्क का भारतीय साम्राज्य चीन के गोबी मरुस्थल से लेकर विन्ध्याचल तक तथा कैस्पियन समुद्र, समरकन्द और फारस से लेकर वाराणसी या शायद मगध तक फैला हुआ था। इतने विशाल साम्राज्य के शासन के लिए उसने पाटलिपुत्र के मुकाबले की अपनी राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) में बसायी। वहाँ अब भी खोदने और खोजने से कनिष्क के समय की मूर्तियां एवं इमारतें मिलती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कनिष्क के मरने के कुछ वर्षों बाद कुषाणों का राज्य सिन्धु घाटी के निचले प्रदेश और मालवा से जाता

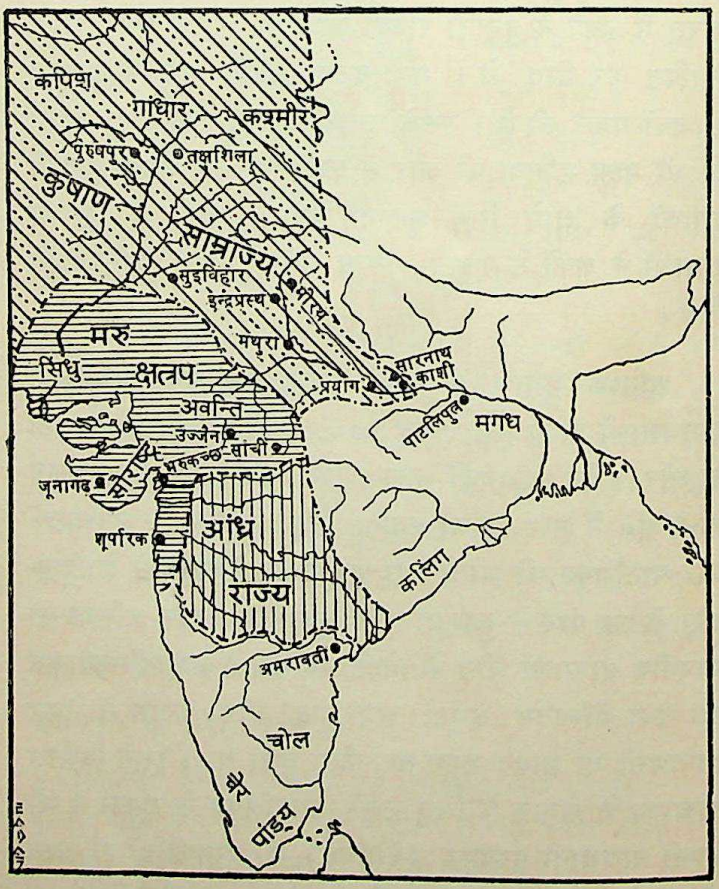

कुषाण साम्राज्य

रहा। वहाँ शक क्षत्रपों ने फिर अपना अधिकार कर लिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पिछले मानचित्र में १५० ई० में कुषाण और शक क्षत्रपों के राज्यों का विस्तार दिखाया गया है। ये दोनों ही राज्य विदेशियों के थे, यद्यपि उन्होंने भारत के धर्मों को ग्रहण कर लिया था।

कनिष्क का धर्म के लिए उत्साह

कनिष्क बौद्ध मत को मानने लगा था। अशोक की भाँति उसने भी बौद्ध धर्म को फैलाया। बौद्धों की चौथी **संगीति** या सभा कश्मीर में बुलवायी जिसमें बौद्ध धर्म की शिक्षाएं संस्कृत भाषा में लिखी गयीं। उन्हें ताँबे के पत्रों पर लिख कर एक स्तूप में रखा गया, परन्तु अभी तक कोई उन्हें खोज और खोद कर निकाल नहीं सका है।

कनिष्क के समय में बौद्ध धर्म में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। बुद्ध की मूर्तियाँ बनीं और उनकी पूजा होने लगी। अब केवल सदाचार और सत्कर्म से ही नहीं, वरन् श्रद्धा और भक्ति के साथ भगवान बुद्ध के पूजन से भी मोक्ष माना जाने लगा। इसे **महायान** का नाम दिया गया। पुराना बौद्ध धर्म **हीनयान** कहलाने लगा। हीनयान के ग्रन्थ पाली भाषा में हैं, किन्तु महायान के संस्कृत में हैं। कनिष्क की सहायता से महायान का चीन में प्रचार हुआ। उसने पुरुषपुर के पास एक बौद्ध स्तूप बनवाया जो ऊँचाई में १२१.९२ मीटर था। उसमें तेरह मंजिलें थीं। सातवीं शती में चीनी यात्री

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ह्वेन्त्सांग उसे देखकर चकित रह गया था। वह स्तूप अब नहीं है। शायद हूणों ने उसे नष्ट कर दिया।

बौद्ध धर्म में आस्था रखते हुए भी कनिष्क सब धर्मों का आदर करता था। उसके बहुत से सिक्के मिले हैं जिन पर बुद्ध की प्रतिमा के अलावा यूनानी, ईरानी, शैव आदि सभी तरह के देवता हैं। आगे दिये सिक्के के पट भाग में चन्द्र देवता (M A O) की आकृति है तथा उसके चित भाग में कनिष्क की मूर्ति है। वह ईरानी ढंग का मोटा लम्बा कोट, लम्बी टोपी और लम्बे जूते पहने है। सम्भव है लम्बे कोट का चलन भारत में कुषाणों के समय से हुआ हो। कनिष्क के बायें

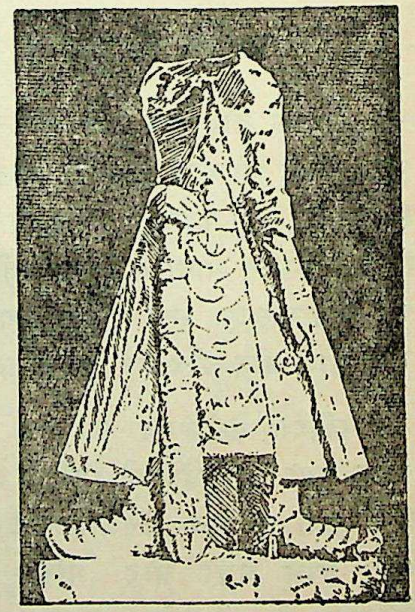

मथुरा के पास मिली कनिष्क की मूर्ति। मूर्ति में अंकित पोशाक की तुलना आगे सिक्के में अंकित पोशाक से करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
हाथ में भाला है। सामने हवन-कुंड बना है जिसमें कनिष्क दायें हाथ से आहुति डाल रहा है।

साहित्य और कला की उन्नति

कनिष्क ने पाटलिपुत्र के मुकाबले में अपनी राजधानी पुरुषपुर को संस्कृति अर्थात धर्म, विद्या, साहित्य और कला का केन्द्र बनाया। उसके राज-दरबार में अनेक काव्यों को रचने वाले **अश्वघोष**, प्रसिद्ध ज्ञानी **नागार्जुन** और **वसुमित्र** तथा आयुर्वेद के महान विद्वान **चरक** रहते थे। उनकी विद्वत्ता का लोहा अब तक माना जाता है।

कनिष्क के सिक्के पर बुद्ध की प्रतिमा

कनिष्क का चन्द्र प्रतिमा वाला सिक्का

कनिष्क के समय में **मूर्तियां बनाने की कला** में बड़ी उन्नति हुई। यूनानी कलाकारों ने भारतीय विषयों को लेकर मूर्तियां बनायीं। पत्थरों पर बड़ी सुन्दर खुदाई की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गयी । उस समय की कला आजकल **'गान्धार कला'** कहलाती है, क्योंकि गान्धार देश में उसका विकास हुआ था ।

व्यापार की उन्नति

कनिष्क के शासन-काल में स्थल और जल के मार्गों से भारत का व्यापार चीन, रोम और पूर्वी देशों के साथ होता था । उसकी राजधानी पुरुषपुर पूर्व में चीन की ओर से पश्चिम में यूरोप की ओर को जाने के लिए एक व्यापारी-केन्द्र बन गयी । कनिष्क ने सोने के सिक्के व्यापारियों की सुविधा के लिए ही ढलवाये थे ।

गौतम बुद्ध (गान्धार शैली)

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—कुषाण कौन थे ? उनका सबसे प्रसिद्ध राजा कौन माना जाता है ?

२—कनिष्क की विजयों और साम्राज्य की सीमाओं का वर्णन करो ।

३—कनिष्क का धर्म क्या था ?

४—कनिष्क ने बौद्ध धर्म की उन्नति के लिए क्या किया ?

५—कनिष्क के समय में साहित्य, कला और व्यापार की उन्नति का वर्णन करो ।

६—गान्धार कला से क्या समझते हो ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दसवां अध्याय

गुप्त साम्राज्य—प्राचीन काल का स्वर्ण युग

पाठ १----स्थापना और विस्तार--समुद्रगुप्त

बालको, तुमने सुना होगा कि गुप्तों का शासनकाल भारत के इतिहास में स्वर्ण युग कहलाता है। उस समय इस देश में लक्ष्मी बरसती थी। सुख और शान्ति का राज्य था। देश में राजनीतिक एकता थी। विदेशी आक्रमणकारी शक, कुषाण और हूण दबे पड़े थे। लोग धर्म पर चलते थे। साहित्य, संगीत और कला का रूप निखर आया था।

साम्राज्य की स्थापना

चौथी शती ई० के शुरू में गुप्त साम्राज्य की स्थापना एक छोटे से चन्द्रगुप्त नाम के राजा ने की थी। इसका अवसर उसे प्राचीन लिच्छवि वंश की एक कन्या कुमारीदेवी के साथ ब्याह करके मिला। इसी कारण लिच्छवियों ने उसे मदद दी और उसने अपना राज्य मगध से प्रयाग तक बढ़ा लिया। उसका पुत्र समुद्रगुप्त एक महान विजेता हुआ।

विस्तार

समुद्रगुप्त (लगभग ३२०-३७५ ई०) ने ५५ वर्षों तक राज्य किया। अपने शासनकाल में पहले तो उसने उत्तर भारत की दिग्विजय की और अपने पिता के छोटे राज्य को बढ़ाकर एक विशाल साम्राज्य बना दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यमुना के तट पर इलाहाबाद के किले में अशोक स्तम्भ पर समुद्रगुप्त का हाल लिखा है। उससे मालूम होता है कि उसने

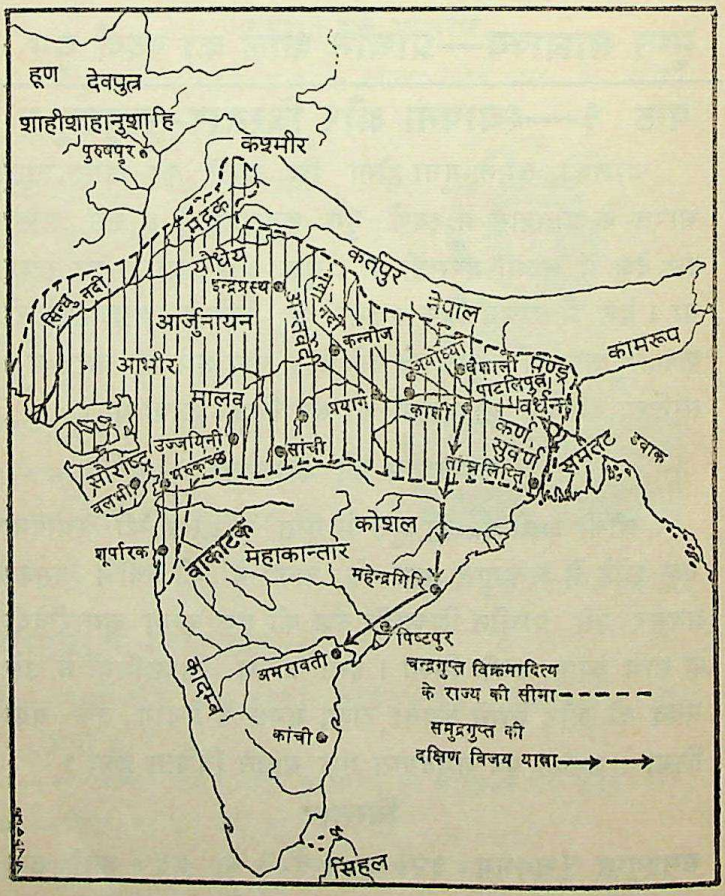

गुप्त साम्राज्य

उत्तर भारत के नौ राजाओं को हरा कर उनके राज्यों को

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। फिर विन्ध्याचल के आस-पास के वनों के राजाओं को अपना सेवक बनाया। इस प्रकार दक्षिण-विजय के लिए मैदान साफ हो गया।

समुद्रगुप्त ने दक्षिण के बारह राजाओं को भी बारी-बारी से हराया, परन्तु उनके राज्य छीने नहीं। अधीनता मान लेने पर उनसे उपहार और कर लेकर राज्य उन्हीं को लौटा दिये।

समुद्रगुप्त की इन विजयों से आसाम, बंगाल, नेपाल, राजस्थान आदि सीमान्तों के राजा और आभीर, यौधेय आदि गण इतने डर गये कि उन्होंने स्वयं ही उसको अपना स्वामी मान लिया। उसकी धाक ऐसी जम गया कि पड़ोस के विदेशी राज्य, पश्चिमोत्तर के कुषाण, उज्जैन के शक और लंका के राजा भी उसकी मित्रता और कृपा चाहने लगे। कहते हैं कि उसके पास जहाजी बेड़ा भी था, जिससे उसने हिन्द महासागर के कई द्वीप अपने अधिकार में कर लिए थे। इस प्रकार दिग्विजय के कारण गुप्तों का गरुड़ध्वजी सिक्का भारत और पड़ोस के देशों और द्वीपों में चलने लगा।

गरुड़ध्वजी सिक्का

अश्वमेध सिक्का

समुद्रगुप्त **वैदिक धर्म** का मानने वाला था। विदेशियों का दमन और भारत में राजनीतिक एकता कायम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करके उसने अश्वमेध किया । इसकी याद में उसने सोने के सिक्के ढलवाये । इन पर एक ओर अश्व या घोड़े की मूर्ति और दूसरी ओर रानी की मूर्ति अंकित है । सिक्के पर लिखा है—'**अश्वमेधपराक्रमः**' अर्थात अश्वमेध के योग्य वीरता वाला ।

समुद्रगुप्त जैसा वीर और कुशल योद्धा था, वैसा ही विद्वान, गुणी, दानी और कलाकार व विद्वानों का सहायक था । एक सिक्के पर उसने अपनी मूर्ति वीणा के साथ बनवायी । इससे उसका संगीत प्रेम प्रकट होता है । इलाहाबाद के स्तम्भ-लेख में समुद्रगुप्त को ज्ञान में देवताओं के गुरु वृहस्पति के बराबर और गान में नारद को भी लजाने वाला बतलाया गया है । वह स्वयं कविता करता था और 'कविराज' कहलाता था ।

वीणावादक सिक्का

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—गुप्त साम्राज्य किसने स्थापित किया और किस प्रकार ?

२—समुद्रगुप्त की दिग्विजय का वर्णन करो ।

३—समुद्रगुप्त के चरित्र के विषय में क्या जानते हो ?

४—नीचे लिखे सिक्कों के चित्र अपनी कापी पर बनाओ—

(क) गुप्तों का गरुड़ध्वजी सिक्का, (ख) अश्वमेध सिक्का, (ग) वीणावादक सिक्का ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २---चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (३७६-४१४ ई०) का नाम इतिहास में अपने पिता समुद्रगुप्त से भी अधिक प्रसिद्ध है।

दिग्विजय

चन्द्रगुप्त ने अपने पिता के काम को आगे बढ़ाया। समुद्रगुप्त से डर कर सीमा पर के अनेक राजाओं व गणों ने उसकी अधीनता मान ली थी तथा पश्चिम की ओर शकों व कुषाणों ने मित्रता कर ली थी। पर यह मैत्री भय के कारण थी, हृदय से नहीं। समुद्रगुप्त के मरते ही शक और कुषाणों ने गुप्त साम्राज्य पर हमला किया। चन्द्रगुप्त ने उन्हें हरा दिया। उसने सिन्धु नदी को पार कर बल्ख को भी जीत लिया। फिर उसने बंगाल को जीता। दिल्ली में कुतुबमीनार के पास गड़े लोहे के एक प्राचीन स्तम्भ पर ये सब घटनाएं अंकित हैं।

कुषाणों से निबट कर और बंगाल को जीत कर चन्द्रगुप्त ने गणराज्यों का विनाश किया। उसके बाद उसकी सबसे बड़ी विजय उज्जैन और सौराष्ट्र के शकों के ऊपर थी। इस विजय से गुप्त साम्राज्य अरब सागर तक पहुँच गया, जिसके जलमार्ग से भारत का पश्चिमी देशों से व्यापार होता था। इस व्यापार से गुप्त साम्राज्य मालामाल होने लगा।

प्रबल शक विदेशियों को हरा कर चन्द्रगुप्त ने विक्रमादित्य की पदवी धारण की। ऐसा मालूम होता है कि प्राचीन भारत में विदेशियों के ऊपर मार्के की विजय पाने वाला **विक्रमादित्य**

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

की पदवी ग्रहण करता था। विक्रम का अर्थ है **वीरता** और आदित्य का अर्थ है **सूर्य**। शकों के दाँत खट्टे करने के कारण चन्द्रगुप्त को **शकारि** अर्थात शकों का शत्रु भी कहते हैं।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के सोने के कई प्रकार के सिक्के मिले हैं जो कला की दृष्टि से अत्यन्त सुन्दर हैं। विद्वानों का विचार है कि सौराष्ट्र में शकों पर विजय पाने के बाद उसने सिंहयुद्ध वाला सिक्का चलाया। इसमें एक ओर सम्राट को धनुष-बाण से सिंह को मारते हुए दिखाया गया है और दूसरी ओर सिंह पर विराजमान लक्ष्मी की मूर्ति है।

गुप्त राजा भागवत धर्म अर्थात विष्णु के अवतारों की पूजा करते थे। अतः उनके सिक्कों पर गरुड़ध्वज या लक्ष्मी की मूर्ति का होना स्वाभाविक है।

सिंहयुद्ध वाला सिक्का

साहित्य

चन्द्रगुप्त विद्वानों का बहुत आदर करता था। संस्कृत के कवियों में **कालिदास** सबसे अच्छा कवि माना जाता है। वह चन्द्रगुप्त के राज-दरबार में था। उसने कई काव्य और नाटक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लिखे हैं, जिनमें रघुवंश, मेघदूत और शकुन्तला बहुत प्रसिद्ध हैं। चन्द्रगुप्त के समय में संस्कृत भाषा और ब्राह्मण धर्म की बड़ी उन्नति हुई। **पुराण** तभी बने, जिनमें धर्म, समाज और इतिहास की बातें लिखी हैं। **गणित** और **ज्योतिष** विद्या की भी बड़ी उन्नति हुई।

फाह्यान

तुम पढ़ चुके हो कि कुषाण राजा कनिष्क के समय में चीन में बौद्ध धर्म का बड़ा प्रचार हुआ। वहाँ के कुछ यात्री बुद्ध की जन्म भूमि भारत की यात्रा को आने लगे।

चीनी यात्री फाह्यान चन्द्रगुप्त के समय में भारत में आया। उसका उद्देश्य बुद्ध भगवान की पावन भूमि का दर्शन और बौद्ध धर्म की पुस्तकों की खोज करना था। फाह्यान ने पाटलिपुत्र में तीन वर्षों तक संस्कृत पढ़ी और सात वर्षों तक भारत में रहकर खूब भ्रमण किया। उसने अपनी यात्रा का हाल चीनी भाषा में लिखा है जिसका अनुवाद यूरोप और भारत की कई भाषाओं में हो गया है। वह लिखता है कि उस समय देश में शान्ति और सुख था। मगध में कई नगर थे जहाँ पढ़ने के लिए दूर-दूर से विद्यार्थी आते थे। चोर-डाकुओं का डर न था। प्रजा से साधारण कर लिये जाते थे। शासन-विधान भी कड़ा न था। फाँसी नहीं दी जाती थी। सड़कों के किनारे धर्मशालाएं थीं। पाटलिपुत्र में रोगियों को दवाएं मुफ्त मिलती थीं। चारों ओर धर्म की चर्चा सनायी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देती थी। देश में व्यापार और धन की वृद्धि थी। लोग शौकीन थे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य कौन था ? उसकी विजयों का वर्णन करो।

२—गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त (द्वितीय) को शकारि और विक्रमादित्य क्यों कहा जाता है ?

३—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य को सौराष्ट्र की विजय से क्या लाभ हुआ ?

४—चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के समय में विद्या की उन्नति का वर्णन करो।

५—फाह्यान कौन था ? वह भारत में कब आया ? उसने इस देश के विषय में क्या लिखा है ?

६—चन्द्रगुप्त के सिंहयुद्ध वाले सिक्के का चित्र बनाओ। वह क्या प्रकट करता है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ३----अवनति और हूण

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की मृत्यु के बाद उसके पुत्र **कुमारगुप्त** (४१५-४५५ई०) के ४० वर्षों के राज्य-काल में भी प्रजा अत्यन्त सुखी रही। उसके राज्य-काल के अन्तिम दिनों में हूणों ने अवश्य भारत पर हमला किया, परन्तु युवराज स्कन्दगुप्त ने उनको करारी हार दी।

स्कन्दगुप्त का सिक्का

कुमारगुप्त के बाद **स्कन्दगुप्त** ने कोई १२ वर्षों तक राज्य किया। उसने हूणों की एक न चलने दी। वह भी विक्रमादित्य बना, परन्तु उसके सिक्के पूर्वजों के सिक्कों के मुकाबले में बहुत घटिया थे। गुप्त सम्राट के खजाने में सोने की कमी हो गयी थी।

स्कन्दगुप्त की मृत्यु के (४६७ ई०) के बाद गुप्तों के सामन्त स्वतन्त्र होने लगे। अतः केन्द्र की शक्ति घटती गयी और साम्राज्य के टुकड़े होते गये। ऐसी दशा में हूणों की बन आयी।

ये हूण कौन थे ? इनका इतिहास में क्या स्थान है ? अब ये बातें जानना आवश्यक हैं।

हूण चीन के पश्चिमोत्तर में रहने वाली बर्बर जातियों में से थे। दूसरी शती के बाद वे लोग मध्य एशिया में आ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बसे। चौथी शती के अन्त में वहाँ से निकल कर टिड्डी दलों की भाँति अनेक सभ्य देशों पर छा गये। उनके कुछ दल यूरोप पहुँचे और रोम साम्राज्य पर टूट पड़े। वहाँ अतिला नाम के एक हूण सरदार ने रोम को जीता और उसे खूब लूटा। यूरोप का हंगेरी (हुंगारी) नाम का देश अब भी हूणों की याद दिलाता है।

भारत में हूणों के आक्रमण कुमारगुप्त के समय में हुए। युवराज स्कन्दगुप्त ने उन्हें गान्धार से आगे नहीं बढ़ने दिया।

गान्धार में तब हूणों ने अपनी शक्ति को अच्छी तरह संगठित किया और स्कन्दगुप्त की मृत्यु के कोई तीस वर्षों के बाद गुप्त साम्राज्य को दुर्बल पाकर फिर आक्रमण किया (५०० ई०)। इस बार पंजाब से मालवा तक का प्रदेश उनके अधिकार में आ गया। इस समय उनका राजा **तोरमाण** था। उसके अनेक सिक्के मध्य भारत में मिलते हैं।

तोरमाण के पश्चात **मिहिरकुल** हूणों का राजा हुआ। उसने शाकल (स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाया और प्रजा पर बड़े अत्याचार किये। जहाँ उसकी सेनाएं जातीं, भीषण लूटमार मचाती। अतः पंजाब और राजस्थान की जनता उसके विरोध के लिए उठ खड़ी हुई। मालवा का **यशोधर्मन** उनका नेता था। उसने मगध के गुप्त राजा नरसिंहगुप्त बालादित्य के साथ मिलकर मिहिरकुल को हराया (५२७ ई०)। मिहिरकुल तब कश्मीर भागा और वहाँ के राजा को मार कर स्वयं राजा बन बैठा। वह अपने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को पशुपति (शिव) का उपासक कहता था। उसने बौद्धों पर विशेषरूप से अत्याचार किये और उनके अनेक स्तूप और विहार नष्ट कर दिये।

हूणों के हमलों का परिणाम यह हुआ कि गुप्त साम्राज्य खोखला हो गया। उसकी जगह भारत में अनेक राज्य उठ खड़े हुए। उनको भी प्रायः हूणों से लड़ना पड़ा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—कुमारगुप्त और स्कन्दगुप्त के विषय में तुम क्या जानते हो ?

२—हूण कौन थे ? उनके आक्रमण का वर्णन करो।

३—मिहिरकुल कौन था ? उसके विषय में क्या आनते हो ?

४—निम्नलिखित के विषय में क्या जानते हो:—

(क) तोरमाण (ख) यशोधर्मन।

पाठ ४—भारतीय कला का स्वर्ण युग

भारतीय कला के इतिहास में गुप्त-काल **स्वर्ण युग** समझा जाता है। उस समय के सिक्के, मूर्तियां और चित्र सुन्दरता की सीमा को पहुँच गये। वास्तुकला अर्थात इमारतों के बनाने की कला में भी बड़ी उन्नति हुई, परन्तु हूणों की तोड़-फोड़ के फलस्वरूप उसके नमूने बहुत कम मिलते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूर्तियाँ

गुप्त-काल में जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म से सम्बन्ध रखने वाली अनेक देवी और देवताओं की मूर्तियाँ बनीं। ये मूर्तियाँ खड़ी और बैठी दोनों प्रकार की मिलती हैं। ये अधिकतर पत्थर या मिट्टी और कोई-कोई ताँबे की

शिव और पार्वती की मिट्टी की मूर्तियाँ (अहिच्छत्र)

बनी हैं। सभी मूर्तियाँ शुद्ध भारतीय ढंग की हैं। इन पर यूनानी गान्धार कला का प्रभाव बिलकुल नहीं है। गुप्त-काल की मूर्तियों में चेहरे की आकृति और भाव पर विशेष ध्यान दिया गया है।

तुम पिछले एक पाठ में पृष्ठ ५० पर **सारनाथ की बुद्ध की मूर्ति** का चित्र देखा है। गुप्त-काल में बनी यह मूर्ति अब भी सारनाथ के म्यूजियम में रखी है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बरेली के पास अहिच्छत्र में गुप्त-काल की **शिव** और **पार्वती की मिट्टी की मूर्तियाँ** मिली हैं। वे कला के कैसे उत्तम नमूने हैं! तुमने आजकल के साइंस युग की बनी अनेक मिट्टी की मूर्तियों को देखा होगा। उनसे तुलना करने पर तुमको उनकी कला की महत्ता का अनुमान होगा।

गुप्त-काल में बनी विष्णु की मूर्ति

शिव, विष्णु, सूर्य आदि पौराणिक देवताओं की उस समय की अनेक मूर्तियाँ मथुरा, कलकत्ता व लखनऊ के म्यूजियम में हैं। शुद्ध ताँबे की करीब ११२० किलोग्राम भारी और २·२८६ मीटर ऊँची एक बुद्ध-मूर्ति इंग्लैंड में बरमिंघम के म्यूजियम में है। वह बिहार के सुल्तानगंज में मिली थी। मूर्ति में बुद्ध भगवान खड़े अपने हाथ की अभयदान-मुद्रा से संसार को अभयदान दे रहे हैं।

पौराणिक मूर्तियों के नमूने के लिए मथुरा म्यूजियम में रखी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विष्णु की मूर्ति देखने योग्य है। इसके हाथ खंडित हो गये हैं। विष्णु सिर पर मुकुट पहने हैं। उनके कानों में कुंडल, गले में हार, बाहों में अंगद,कमर में मेखला और कन्धे पर यज्ञोपवीत है। चेहरे से शान्ति टपकती है।

चित्र

अजन्ता की अनेक गुफाएं और उनमें सबसे सुन्दर चित्र गुप्त-काल में ही बने। उनमें फूल, पत्तियां, पशु और मनुष्य सभी को दीवारों पर चित्रित किया गया है। वे ऐसे सजीव हैं कि उन्हें देखते ही बनता है। अजन्ता के चित्र ऐसे वज्रलेप पर बनाये गये हैं कि उनमें बहुत से अब भी देखे जा सकते हैं।

वास्तु और शिल्प कला

वास्तुकला में उस समय के पत्थर के बने कुछ स्तम्भ मिलते हैं। कुछ मन्दिर भी हूणों के विध्वंस से बच रहे हैं। इनमें से एक कानपुर के समीप **भीतर गाँव** में है। यह ईटों का बना है। उसकी दीवारों का बाहरी अंश मिट्टी के पकाये फलकों से बनाया गया है। इन फलकों पर अनेक मूर्तियाँ और चित्र बने हैं। एक इमारत ललितपुर जिले में **देवगढ़** में है जो **दशावतार मन्दिर** कहलाती है। इसमें विष्णु के दश अवतारों की मूर्तियाँ स्थापित की गयी थीं। गुप्त-काल का एक मंदिर **साँची** में है जिसकी छत सपाट है। उसके ऊपर शिखर नहीं है।

शिल्प में सबसे विलक्षण वस्तु दिल्ली में कुतुबमीनार के पास .४१ मीटर व्यास का, ७.१६ मीटर ऊँचा और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
करीब ६४ कुन्तल भारी लोहे का स्तम्भ है। इसे संसार के आश्चर्यों में गिना जाता है। शतियों तक खुले स्थान में रहने पर भी इसमें जंग नहीं लगी है। ऐसा शुद्ध लोहा है कि साइंस के वर्तमान युग में भी बहुत कम ऐसे कारखाने हैं जो शुद्ध लोहे का इतना बड़ा स्तम्भ बना सकेंगे।

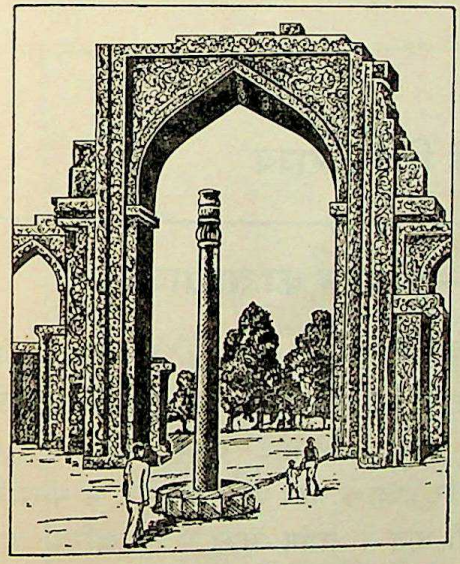

चन्द्र का लौह स्तम्भ

तुमने इस पाठ में गुप्त-काल की कला के केवल कुछ नमूनों का अध्ययन किया है। उनको देखने से इसमें कोई सन्देह नहीं रहता कि गुप्त-काल में भारतीय कला उन्नति की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच गयी थी।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—गुप्त-काल की किन्हीं दो मूर्तियों का वर्णन करो।

२—गुप्त-काल की शिल्प-कला के किसी नमूने का वर्णन करो।

३—सिद्ध करो कि गुप्त-काल में भारतीय कला उन्नति की सबसे ऊँची चोटी पर पहुँच गयी थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्यारहवां अध्याय

सातवीं शती के विविध राज्य

पाठ १—हर्षवर्धन का साम्राज्य

बालको, तुमने पिछले पाठ में गुप्त साम्राज्य की अवनति का वृत्तान्त पढ़ा है। छठी और सातवीं शती में गुप्त साम्राज्य की जगह अनेक छोटे-छोटे राज्य उठ खड़े हुए। उनमें से हमारे उत्तर प्रदेश के मध्य एवं पूर्वी भाग में **मौखरि** राज्य और पश्चिमी भाग में **वर्धन** राज्य थे। मौखरियों की राजधानी कन्नौज और वर्धनों की राजधानी थानेसर (प्राचीन नाम स्थाण्वीश्वर) में थी। थानेसर के महाराज प्रभाकर वर्धन को अपने राज्य के पश्चिम में प्रायः हूणों से लड़ना पड़ता था। अतः उसने अपनी पूर्वी सीमा की रक्षा के लिए अपनी पुत्री राज्यश्री मौखरि राजा को व्याह दी।

सिक्के पर हर्ष की मूर्ति

हर्षवर्धन महाराज प्रभाकरवर्धन का दूसरा पुत्र था। पहले पुत्र का नाम राज्यवर्धन था। प्रभाकर-वर्धन के मरते ही हूण पश्चिम में उत्पात मचाने लगे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
और बंगाल व मालवा के गुप्त राजाओं ने मौखरियों की राजधानी कन्नौज पर आक्रमण कर दिया। मौखरि राजा

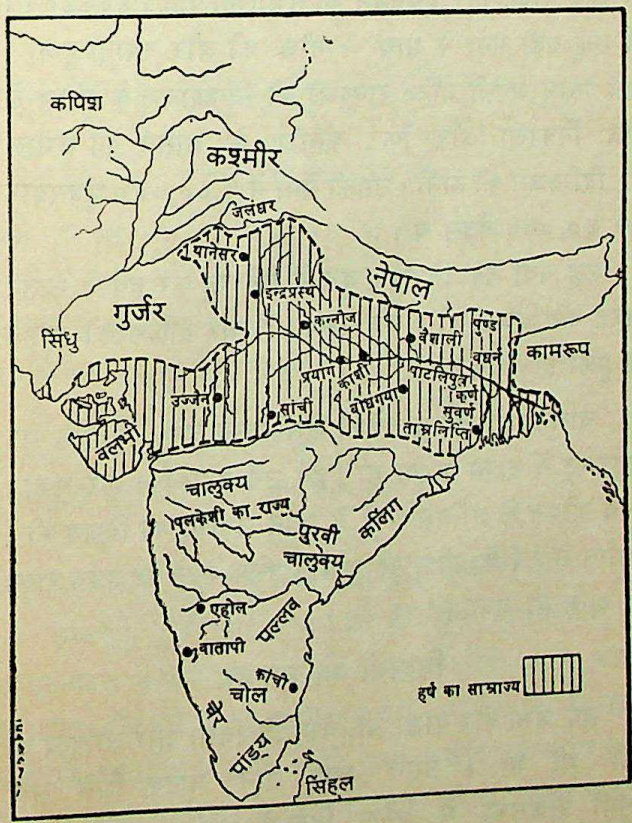

हर्ष का साम्राज्य

मारा गया और राज्यश्री कैद में डाल दी गयी। राज्यवर्धन हूणों से युद्ध करके लौटा ही था कि उसने यह समाचार सुना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सुनते ही वह अपनी बहिन की सहायता के लिए बढ़ा, परन्तु बंगाल के राजा शशांक ने धोखे से उसको मार डाला।

अब राज्य-भार हर्षवर्धन को संभालना पड़ा (६०६ई०)। हर्ष एक बड़ी सेना के साथ कन्नौज की ओर रवाना हुआ। पहले उसने अपनी बहिन राज्यश्री को विन्ध्याचल के जंगल से खोज निकाला और फिर कन्नौज के शासन को संभाल कर दिग्विजय की ठानी। उसकी सेना में १,००,००० घुड़सवार और ६०,००० पैदल थे।

छह वर्षों तक निरन्तर युद्ध में लगे रह कर हर्ष ने उत्तर भारत की विजय की। अब उसका विचार दक्षिण को जीतने का हुआ।

चालुक्य वंश का **पुलिकेशी द्वितीय** उस समय नर्मदा के पार महाराष्ट्र में राज्य करता था। हर्ष उसे परास्त न कर सका। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में उसने उड़ीसा की विजय की। दुर्भाग्य से हर्ष के कोई पुत्र न था। उसके मरने पर वर्धन राज्य का अन्त हो गया (६४६ ई०)।

विद्वानों को आश्रय

हर्ष जैसा वीर योद्धा था, वैसा ही विद्या और साहित्य का प्रेमी भी था। उसने स्वयं तीन नाटक लिखे और अपनी राजसभा में अनेक विद्वानों को आश्रय दिया। हर्ष का मित्र **बाण** कई ग्रन्थों का लेखक माना जाता है जिनमें **हर्षचरित** और **कादम्बरी** बड़े प्रसिद्ध हैं। कादम्बरी एक उपन्यास है और संस्कृत में गद्य की सबसे उत्तम पुस्तक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मानी जाती है। हर्ष के सुन्दर हस्ताक्षर एक ताम्रपत्र के लेख पर मिलते हैं। उसका चित्र नीचे दिया गया है। देखो अक्षर कैसे सुन्दर हैं।

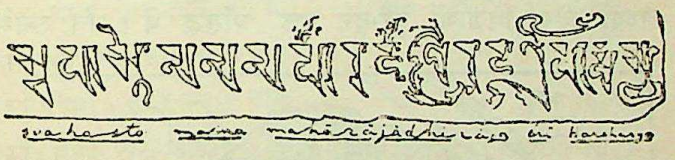

स्व ह स्तो म म म हा रा जा धि रा ज श्री ह र्ष स्य

हर्ष के हस्ताक्षर

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—हर्षवर्धन कौन था ? राजगद्दी पर बैठने के बाद उसे किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ?

२—हर्ष का साम्राज्य कहाँ-कहाँ था ?

३—शशांक ,पुलिकेशी द्वितीय और बाण कौन थे ?

पाठ २—चीनी यात्री ह्वेन्त्सांग

बालको, तुम्हें याद होगा कि चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासन-काल में फाह्यान नाम का एक बौद्ध चीनी यात्री भारत में आया और लौटने पर उसने इस देश का वृत्तान्त लिखा। महाराज हर्षवर्धन के समय में भी इसी प्रकार ह्वेन्त्सांग नाम का एक बौद्ध चीनी यात्री आया। उसका लिखा हुआ भारत का वृत्तान्त फाह्यान के वृत्तान्त से भी अधिक बड़ा और विस्तार के साथ है।

ह्वेन्त्सांग ने पन्द्रह वर्षों तक भारत में यात्रा की। उसने पाँच वर्ष **नालन्दा** विश्वविद्यालय में पठन-पाठन में लगाये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ह्वेन्त्सांग ने नालन्दा विश्वविद्यालय की जी खोलकर प्रशंसा की है। उसमें उसके सामने १० हजार विद्यार्थी पढ़ते थे तथा उसमें करीब १०० विद्वान पढ़ाने के लिए रहते थे। वहाँ के अध्यापक या विद्यार्थी दूर-दूर तक प्रसिद्ध थे। अतः उसमें

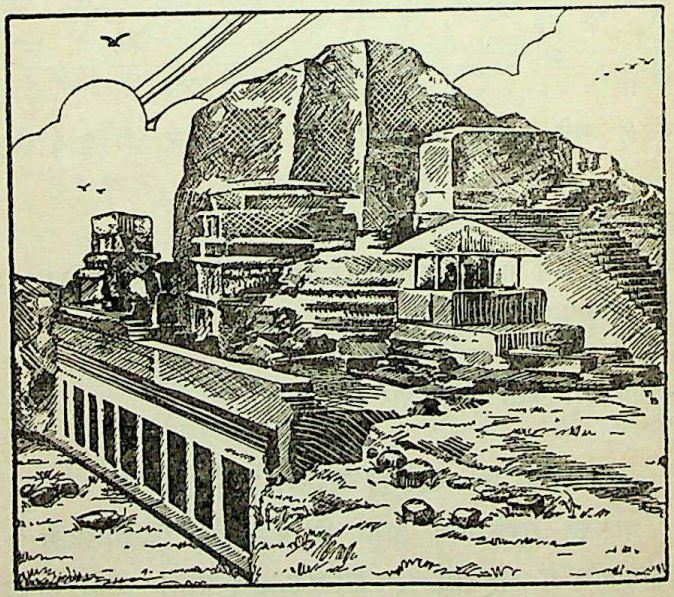

नालन्दा विश्वविद्यालय के खंडहर

अध्यापक या विद्यार्थी होना गौरव की बात समझी जाती थी। वहाँ एक विशाल पुस्तकालय था जिसका भवन ९१·४४ मीटर ऊँचा था। उसमें अनगिनत पुस्तकें थीं। हर्ष के राज्य की अवस्था को जानने के लिए ह्वेन्त्सांग के लेखों का बड़ा मूल्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। उनके पढ़ने से विदित होता है कि उस समय देश में वैसी शान्ति न थी जैसी कि गुप्तों के समय में थी। चोर, डाकू, ठग बढ़ने लगे थे। इसी कारण दंड-विधान कड़ा कर दिया गया था। नाक, कान, हाथ, पैर काटने के दंड अधिक दिये जाने लगे थे। ह्वेन्त्सांग और हर्ष में परस्पर बड़ी मित्रता हो गयी थी। सम्भव है कि इसी कारण शैव धर्म की जगह हर्ष के अन्दर बौद्ध धर्म के लिए विशेष श्रद्धा पैदा हुई और वह उस धर्म का पक्ष लेने लगा। उसने एक बार अपनी राजधानी कन्नौज में **बौद्ध महासभा** बिठायी।

चीनी यात्री ह्वेन्त्साँग

उसने ह्वेन्त्सांग को बुलाया और उसे महासभा का प्रधान बनाया। इस सभा में ब्राह्मण धर्म के विद्वानों को ह्वेन्त्सांग से शास्त्रार्थ करने के लिए चुनौती दी गयी। ह्वेन्त्सांग १८ दिनों तक महायान पर प्रवचन देता रहा। सभा के अन्त में हर्ष ने उसे बहुत से उपहार दिये।

प्रयाग का महोत्सव

कन्नौज की महासभा के बाद हर्ष ह्वेन्त्सांग को अपने साथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयाग महोत्सव में ले गया जिसे वह हर पाँचवें वर्ष गंगा-यमुना के संगम पर किया करता था। चीनी यात्री ने अपनी पुस्तक में उस महोत्सव का वर्णन बड़े विस्तार के साथ लिखा है। उसने लिखा है कि वह मेला दान-दक्षिणा देने के लिए किया जाता था। पाँच वर्षों तक की जमा की हुई सारी सम्पत्ति हर्ष वहाँ दान कर देता था। इस बार उसने अपने शरीर के सब वस्त्र व आभूषण तक दे डाले थे। अपनी बहिन राज्यश्री से वस्त्र उधार लेकर अपने शरीर को ढका था। महोत्सव में लाखों मनुष्य जमा हुए थे। हर्ष के अधीन सारे सामन्त, राजा और कर्मचारी भी वहाँ आये थे। इस उत्सव में पहले दिन बुद्ध की मूर्ति की पूजा की गयी। दूसरे दिन सूर्य की और तीसरे दिन शिव की मूर्ति पूजी गयी। चौथे दिन दस हजार भिक्षुओं को स्वर्ण-मुद्राएं, रत्न, वस्त्र, भोजन आदि दिया गया। अगले बीस दिनों तक ब्राह्मणों को, उसके आगे दस दिनों तक जैन आदि को दान दिया गया। फिर एक मास बराबर दीन-दुखियों असहायों, लूले लँगड़ों और अनाथों को दान-दक्षिणा दी गयी। इस प्रकार उसने सर्वस्व दान कर दिया। तुम्हें इतिहास में दानी का ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं मिलेगा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—ह्वेन्त्सांग कौन था ? वह भारत में कब और क्यों आया ?

२—ह्वेन्त्सांग ने भारत में क्या देखा ?

३—नालन्दा विश्वविद्यालय, कन्नौज की बौद्ध महासभा और प्रयाग के महोत्सव के विषय में ह्वेन्त्सांग ने क्या लिखा है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारहवां अध्याय

इस्लाम का उदय, भारत में अरबों का आगमन

बालको, तुम्हारे कितने ही साथी इस्लाम धर्म के मानने वाले हैं। क्या तुम यह जानते हो कि इस्लाम किसने चलाया? कब चलाया? कहाँ चलाया तथा भारत में इस्लाम कब और कैसे आया?

तुमने पिछले पाठ में पढ़ा है कि सातवीं शती में भारत में महाराज हर्षवर्धन राज्य करते थे। उसी समय अरब देश में **हजरत मुहम्मद** इस्लाम धर्म फैलाते थे। उनके पहले अरब देश में न तो राजनीतिक एकता थी और न वहाँ के रहने वालों में आपस में मेल-मिलाप। उनकी सामाजिक और धार्मिक दशा भी बड़ी गिरी हुई थी। छोटे-छोटे कबीले आपस में लड़ते-झगड़ते थे। वे लोग पत्थरों को पूजते, अनेक देवी-देवताओं को मानते और अज्ञान व अन्धविश्वासों में फँसे थे। पुरुषों को अधिकार था कि वे चाहे जितनी स्त्रियों से ब्याह कर लें।

जब मुहम्मद साहब ने इन बुराइयों को दूर करने के लिए उपदेश देना शुरू किया, तब अरबों ने उनका कड़ा विरोध किया। अतः उन्हें अपनी जन्मभूमि **मक्का** को छोड़कर **मदीना** जाना पड़ा (६२२ ई०)। इसी घटना की तिथि से इस्लाम के इतिहास में हिजरी सन् का आरम्भ होता है। मदीना में पहुँच कर भी मुहम्मद साहब ने अपना उपदेश जारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रखा। वह अपने उपदेशों को इलहाम (**ईश्वर की वाणी**) और अपने को पैगम्बर (**ईश्वर का दूत**) कहते थे। थोड़े ही समय में बहुत से अरब उनके शिष्य बन गये।

मुहम्मद साहब ने जिस नये धर्म का प्रचार किया, वह **इस्लाम** कहा जाता है। उसमें विश्वास की तीन मुख्य बातें हैं–(१) **खुदा** (२) उसका भेजा हुआ **रसूल** और (३) धर्म पुस्तक **कुरान**। मुहम्मद साहब के उपदेशों ने अरबों में एक नया जीवन और नयी उमंग पैदा कर दी। वे लोग बड़े उत्साह से इस्लाम को देश-विदेश में चारों तरफ फैलाने लगे।

मुहम्मद साहब की मृत्यु (६३२ ई०) के बाद भी उनका काम जारी रहा। मुस्लिमों ने अपना एक नया नेता, जिसे खलीफा कहते हैं, चुन लिया। खलीफा के नेतृत्व में उन्होंने अपने बाहुबल और धर्मबल से लगभग सारे अरब को मुसलमान बना लिया। धार्मिक एकता हो जाने से अरबों में राजनीतिक और राष्ट्रीय एकता भी हो गयी। अब अरब लोग दिग्विजय को निकले और शीघ्र ही एशिया के सीरिया और ईरान देश तथा मिस्र के इस्कन्दरिया नगर को जीत लिया और विजय करते-करते पश्चिम में स्पेन तथा पूर्व में भारत की सीमा तक पहुँच गये।

सिन्ध-विजय

सातवीं शती के अन्तिम वर्षों में अरबों और सिन्धियों में झगड़ा हो गया। अरबों ने खलीफा से आज्ञा लेकर सिन्ध पर हमला किया। अरबों का पहला और दूसरा हमला सफल नहीं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ। तीसरे भीषण हमले (७१२ई०) का नेता खलीफा का सबसे उत्तम वीर सेनापति **मुहम्मद इब्न कासिम** था। उसने सिन्ध के राजा को हरा दिया। अब सिन्ध में अरबों का अधिकार हो गया। अरबों ने सिन्ध के पूर्व में राजस्थान की ओर भी बढ़ना चाहा, परन्तु वहाँ गुर्जरों का राज्य था। गुर्जरों ने अरबों को सिन्ध में ही रोक दिया।

प्रभाव

अरबों के शासन-काल में सिन्ध का व्यापार पश्चिमी एशिया के देशों से खूब बढ़ा। भारतवासियों और अरबों द्वारा मिलने-जुलने से हमारे देश की विद्याएं-गणित, ज्योतिष, वैद्यक, दर्शन आदि—अरबों में फैलीं और अरबों द्वारा यूरोप तक पहुँची। अनेक संस्कृत ग्रन्थों का अरबी में अनुवाद हुआ। इस प्रकार अरबों को सिन्ध-विजय से लाभ ही लाभ हुए। भारत के एक प्रान्त में उनका राज्य हो गया और भारत के ज्ञान-विज्ञान को सीखने से अरबों में ज्ञान-विज्ञान की उन्नति हुई।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—मुहम्मद साहब कौन थे और कब हुए ?

२—मुहम्मद साहब ने अरब देश का क्या उपकार किया ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

३—इस्लाम का प्रचार इतने शीघ्र कैसे हो गया ?

४—भारत के किस प्रान्त पर अरबों ने हमला किया ?

५—सिन्ध की विजय से अरबों को क्या लाभ हुए ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तेरहवां अध्याय

कन्नौज की कीर्ति-गुर्जर-प्रतिहार, पाल, राष्टकूट

बालको, पिछले एक पाठ में तुमने हर्ष के साम्राज्य के विषय में पढ़ा है। बताओ हर्ष साम्राज्य की राजधानी कहाँ थी ? हर्ष के समय उसकी राजधानी कन्नौज की कीर्ति संसार में वैसी ही फैली थी, जैसे कि मौर्यों और गुप्तों के समय पाटलिपुत्र की और कुषाणों के समय पुरुषपुर की, परन्तु हर्ष के मरने के बाद ७५ वर्षों तक कन्नौज भारत के इतिहास में अँधेरे में छिप-सा गया।

आठवीं शती के शुरू में फिर कन्नौज पूर्णमासी के चन्द्रमा की तरह चमकने लगा। उस समय **यशोवर्मा** कन्नौज का राजा था। उसने मगध, बंगाल, मालवा, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, पंजाब और हिमालय प्रदेश को जीता तथा हर्ष की भाँति साहित्य और कला की उन्नति की। संस्कृत का प्रसिद्ध विद्वान भवभूति उसकी राजसभा की शोभा था।

यशोवर्मा के बाद लगभग दौ सौ पचास वर्षों तक कन्नौज भारत की राजनीति का **केन्द्रविन्दु** बना रहा। भारत के बड़े से बड़े राजा कन्नौज विजय करके सम्राट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनने के लिए ललचाते रहे। कारण यह था कि गंगा के किनारे उत्तर भारत के बीच में कन्नौज की भौगोलिक स्थिति बड़े मार्के की थी। दिल्ली उस समय तक बनी नहीं थी।

नवीं शती में भारत में तीन खास राजवंश थे—

(१) कन्नौज के गुर्जर-प्रतिहार, (२) बंगाल के पाल तथा (३) दक्षिण के राष्ट्रकूट। तीनों में कन्नौज पर कब्जा करने के लिए संघर्ष हुआ और अन्त में गुर्जर-प्रतिहार सफल हुए।

(१) **गुर्जर-प्रतिहार वंश** के नागभट ने कन्नौज पर अधिकार करके एक साम्राज्य खड़ा किया (लगभग ८१६ ई०)। उसके वंशजों में **मिहिरभोज** का नाम प्रसिद्ध है। उसने लगभग ५० वर्षों (८३६-८८५ ई०) तक राज्य किया। अरब यात्री सुलेमान ने उसके साम्राज्य, शासन-प्रबन्ध और सेना को महान बतलाया है और उसे इस्लाम और अरबों का सबसे बड़ा शत्रु माना है। मिहिरभोज के पुत्र **महेन्द्रपाल** (लगभग ८८५-९०८ ई०) ने मगध, उत्तर बिहार और उत्तर बंगाल को विजय करके साम्राज्य का विस्तार किया। महेन्द्रपाल विद्या का बड़ा प्रेमी और आश्रय दाता भी था। भारत के इतिहास में प्रतिहार राजाओं को इस बात का श्रेय है कि उन्होंने मुसलमान अरबों को मरु (राजस्थान) के उस पार ही सिन्ध में रोके रखा और आगे नहीं बढ़ने दिया।

(२) **पालवंश** के राजाओं का यश विशेषतः उनके विद्या-प्रचार के कारण है। इस वंश के संस्थापक **श्रीगोपाल**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(लगभग ७५०-७७० ई०) ने उद्दंडपुर में एक महान विद्यालय बनवाया और उसके पुत्र **धर्मपाल** (लगभग ७७०-८१०ई०) ने

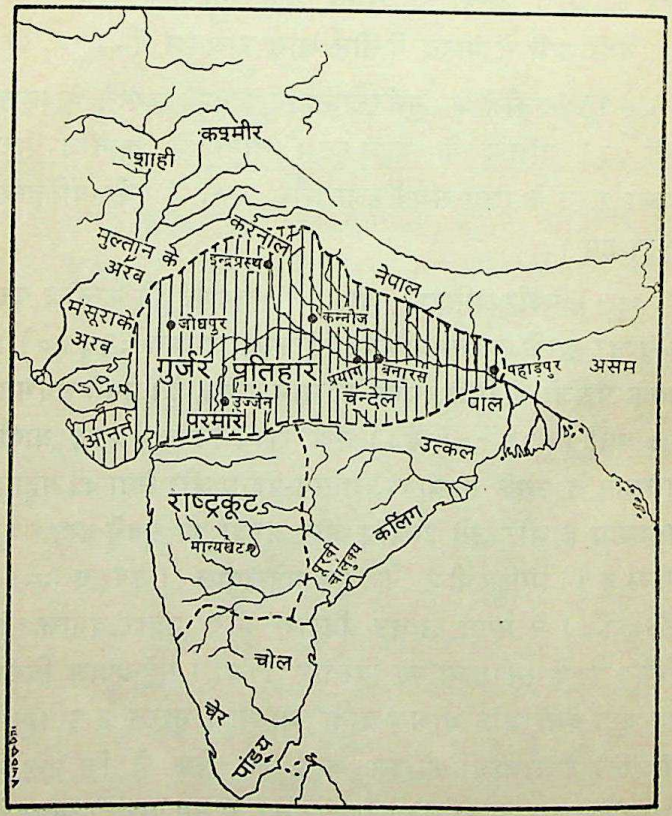

गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य तथा दक्षिण के राज्य

वर्तमान भागलपुर के पास **विक्रमशील** विश्वविद्यालय। इन राजाओं ने कन्नौज के प्रतिहार राजाओं को भी परास्त किया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाल वंश का सबसे प्रतापी राजा **देवपाल** (लगभग ८१०-८५० ई०) हुआ। उसने उड़ीसा और आसाम को विजय किया और कन्नौज के मिहिरभोज को पूर्व की ओर बढ़ने से रोका। बरमा, सुमात्रा, जावा आदि पूर्वी देशों से भी उसका सम्बन्ध था। विद्या और कला की उसके समय में बड़ी उन्नति हुई। पाल वंश के अधिकांश राजा बौद्ध धर्म के मानने वाले थे। सारे बंगाल में उन्होंने मूर्तियाँ, चैत्य और बिहार बनवाये।

पाल-काल की काँसे की बनी बोधित्सव की मूर्ति

(३) **राष्ट्रकूट वंश** के राजा हिन्दू मन्दिरों के बनवाने के लिए प्रसिद्ध हैं। पहाड़ काटकर बनवाया गया वेरूल (एलोरा) का **कैलाश मन्दिर** जो संसार के आश्चर्यों में माना जाता है, राष्ट्रकूट राजा कृष्ण ने बनवाया था। इस वंश के दो विजयी राजाओं ध्रुव और गोविन्द ने कन्नौज के प्रतिहार और बंगाल के पाल राजाओं को हराया। **गोविन्द राष्ट्रकूट** अपने समय (७९३-८१४ ई०) का सम्राट माना जाता है। समूचा दक्षिण भारत और विन्ध्याचल उसके अधिकार में था। अरब यात्री सुलेमान ने राष्ट्रकूट राज्य को संसार के चार महान राज्यों में से एक माना है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आगे चलकर राष्ट्रकूट राजाओं ने अपने राज्य में मुस्लिम अरबों को व्यापार की अच्छी सुविधाएं दीं। उनको अपनी मसजिदें बनाने और अपने कानून बरतने की स्वतन्त्रता थी ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—नवीं शती में भारत में कौन-कौन से मुख्य राजवंश थे ?

२—गुर्जर-प्रतिहार वंश इतिहास में क्यों प्रसिद्ध है ?

३—पाल वंश ने कहाँ राज्य किया ? वह किसलिए प्रसिद्ध है ?

४—राष्ट्रकूट वंश ने कब और कैसे उन्नति की ?

५—सातवीं से नवीं शती तक कन्नौज की स्थिति महत्वपूर्ण क्यों समझी जाती थी ?

६—नवीं शती में कन्नौज के लिए कौन राजा लड़े और वह किसके हाथ रहा ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौदहवां अध्याय

राजपूतों की प्रमुखता

पाठ १—ग्यारहवीं शती के राजपूत राज्य

बालको, तुमने पिछले पाठ में कन्नौज के प्रतापी गुर्जर-प्रतिहारों का वर्णन पढ़ा है। ग्यारहवीं शती में उनके पतन (१०१९ ई०) के बाद उत्तर भारत में अराजकता फैल गयी। अनेक छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गये। भारत के विविध भागों में गुर्जर-प्रतिहारों के कई सामन्तों ने अपने-अपने वंश के स्वतन्त्र राज्य खड़े कर लिये, जैसे कन्नौज व वाराणसी में **गहरवार**, अजमेर में **चौहान**, बुन्देलखण्ड में **चन्देल**, जबलपुर के पास त्रिपुरी में **कलचुरि**, मालवा में **परमार** और यमुना के पास दिल्ली में **तोमर** वंश ने। ये छोटे-छोटे स्वतन्त्र राजपूत राज्य केवल उत्तर भारत में ही न थे, वरन् शेष भारत में भी इसी प्रकार के अन्य अनेक छोटे-छोटे राज्य थे।

ये राजपूत कौन थे, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। राजपूत किसी एक जाति या कुल का नाम नहीं है। इनमें कुछ प्राचीन क्षत्रिय वंश के थे, कुछ आदिम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

निवासियों के वंश के एवं कुछ विदेशी शक, हूण आदि थे। ये लोग क्षत्रियों की तरह रहते, काम करते और राजपूत कहलाते थे, चाहे वे किसी जाति या कुल के हों। हिन्दू धर्म ग्रहण करने के कारण विद्वान पुरोहितों ने उनका सम्बन्ध प्राचीन चन्द्र व सूर्य वंश या नये अग्नि वंश से जोड़ दिया था।

राजपूतों ने भारत के इतिहास में हिन्दू धर्म और सभ्यता की रक्षा के लिए अपना खून बहाया। उन्होंने अपने-अपने राज्यों की रक्षा के लिए शत्रुओं का कड़ा मुकाबला भी किया, परन्तु उनके आपस के सम्बन्ध बड़े अजीब थे। स्वयं तो वे लोग अपनी स्वतन्त्रता और आनबान की रक्षा के लिए अपनी जान हथेली पर रखे रहते थे, परन्तु दूसरे राजपूतों की स्वतन्त्रता या सम्मान का उन्हें वैसा ध्यान नहीं था। मामूली-सी बात पर जोश में आकर तलवार खींच लेना उनकी आदत थी। लड़ाई उनका धर्म था और उसमें मर जाना मानो स्वर्ग को प्राप्त करना था। आपस में लड़ने-झगड़ने और मेल न होने से अन्त में उनकी वीरता कुछ काम नहीं आयी। भारत के इतिहास में इस फूट का परिणाम उस समय देखने को मिलता है, जब महमद गजनवी के सामने बारी-बारी से वे हारे और उनके नगर व मन्दिर लूटे गये।

विद्या की उन्नति

संस्कृत साहित्य की उन्नति का जो काम गुप्तों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समय में शुरू हुआ था, वह राजपूत-काल में भी जारी रहा। संस्कृत की उन्नति को राजपूत राजा अपना कर्तव्य और संस्कृत के विद्वानों की सहायता को अपना गौरव समझते थे। कई राजपूत राजा बड़े विद्वान और विद्या प्रेमी हुए हैं। उदाहरण के लिए परमार वंश के राजा भोज ने साहित्य, व्याकरण, गणित, वैद्यक, धर्म, दर्शन और वास्तुकला पर पुस्तकें लिखी हैं। उसकी राजसभा में विद्वानों और कवियों की भरमार थी। चौहान वंश का राजा बीसलदेव प्रसिद्ध कवि और लेखक था। उसने दो नाटक लिखे। राजपूतों के समय में हिन्दू तीर्थों का महत्व भी बढ़ा और मन्दिरों का खूब निर्माण हुआ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के अन्त होने पर आजकल के उत्तर प्रदेश में कौन से राज्य कायम हो गये थे ? नाम बताओ।

२—राजपूत कौन लोग थे ?

३—राजपूतों की वीरता के विषय में क्या जानते हो ?

४—राजपूतों के समय में विद्या की क्या उन्नति हुई ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ २—मन्दिरों का निर्माण

राजपूत-काल में राजाओं, सामन्तों और धनी-मानी लोगों को मन्दिरों के बनवाने का बड़ा शौक था। पिछले कई सौ वर्षों से देश में अपार धन-दौलत जमा हो गयी थी। राजा और प्रजा में धर्म के लिए आस्था थी। अतः रुचि और धन के योग से देश में जगह-जगह बड़े सुन्दर और विशाल मन्दिर बनाये गये। उस समय के अनेक मन्दिर संसार के आश्चर्य माने जाते हैं। आजकल के देखने वाले भी उन्हें देख कर दंग रह जाते हैं। ग्यारहवीं शती में महमूद गजनवी जब मथुरा में मन्दिरों को तोड़ने के लिए घुसा, तब वह भी उनकी भव्यता देख कर भौचक्का रह गया। उसने अपने जीवन-चरित में वहाँ के बीच वाले मन्दिर के बारे में कहा है कि अगर हजार-हजार सोने की दीनारों के एक लाख थैले खर्च किये जायँ, तो भी अच्छे से अच्छे कारीगर २०० वर्षों में ऐसे मन्दिर को बनाकर पूरा नहीं कर सकते।

भारत पर हमला करने वाले मुसलमानों की तोड़-फोड़ से न जाने कितने मन्दिर उत्तर भारत में नष्ट हो गये। उस काल के कुछ मन्दिरों में से जो अब तक बचे हैं उड़ीसा राज्य में पहाड़ों की दुर्गम दीवारों के पीछे **भुवनेश्वर** का लिंगराज और **कोणार्क** का सूर्यदेवल बड़े ही विलक्षण हैं। सूर्यदेवल रथ के आकार का बनाया गया है जिसे सरपट

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

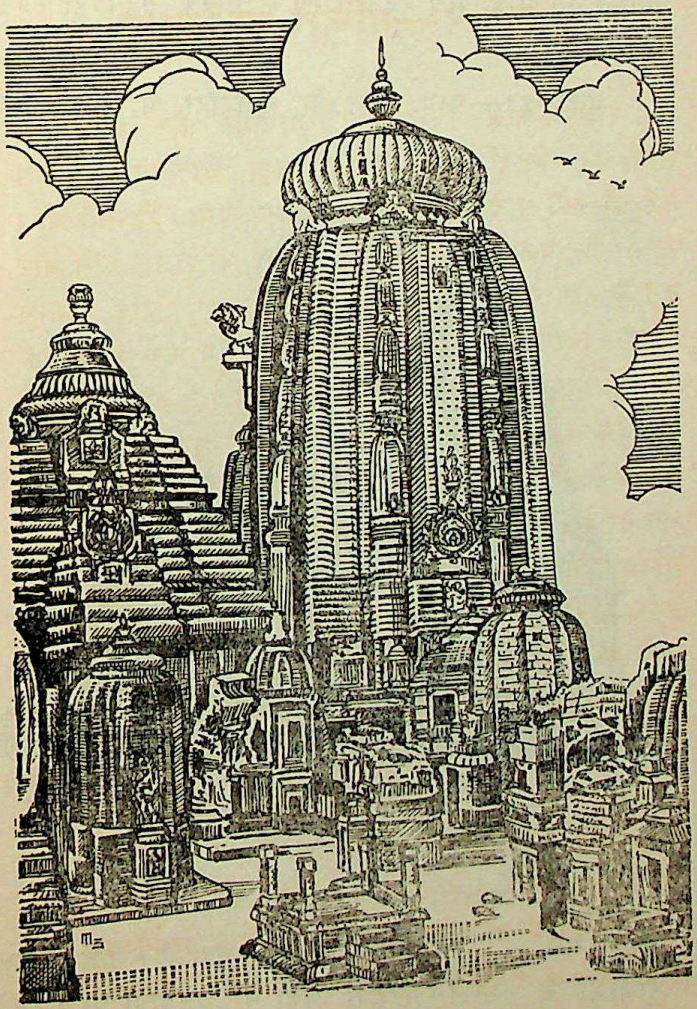

भुवनेश्वर का लिंगराज मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भागते हुए घोड़े खींच रहे हैं। रथ के पहिये बहुत ही बड़े और सजे हुए हैं।

बुन्देलखंड—मध्य प्रदेश के खुजराहो में जैन और

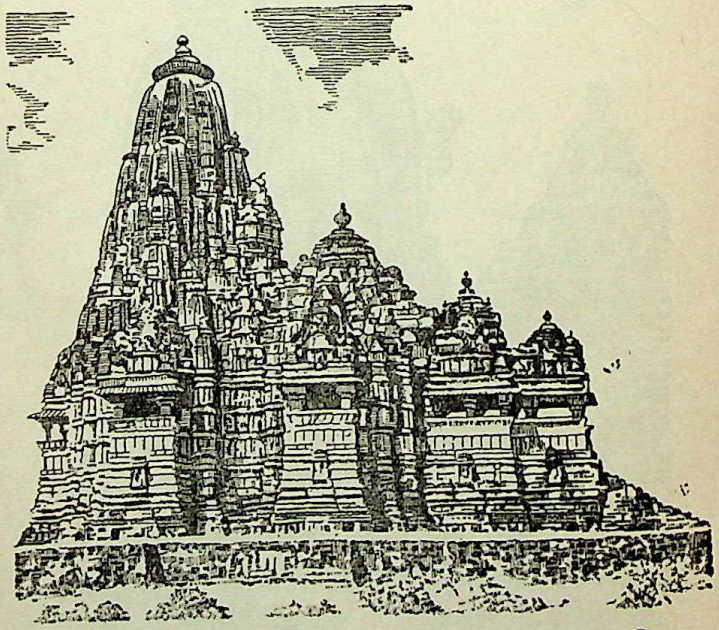

खुजराहो में कन्दर्य महादेव का मन्दिर

हिन्दू धर्म के ३० मन्दिरों का समूह है। उन्हें चन्देल राजाओं ने दसवीं-ग्यारहवीं शती में बनवाया था। इनमें कन्दर्य महादेव का मन्दिर सबसे सुन्दर है। वह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३३.२२ मीटर लम्बा, १८.२८ मीटर चौड़ा और ३५.३५ मीटर ऊँचा है। प्रदक्षिणा के रास्ते में बड़े-बड़े खम्भे हैं और चारों ओर बारजेदार सुन्दर झरोखे बने हैं। शिखर को छोड़ कर मन्दिर का चप्पा-चप्पा मूर्तियों और अलंकारों से सजा है।

राजस्थान में अनेक मन्दिर हैं। उनमें **आबू पर्वत** के दिलवाड़ा में दो जैन मन्दिर संसार में अनोखे माने जाते हैं। उनमें एक मन्दिर विमलशाह वैश्य ने ग्यारहवीं शती में बनवाया था। दूसरा तेरहवीं शती में बनवाया गया। ये दोनों संगमरमर के बने हैं। उनमें संगमरमर की नक्काशी, बेलबूटे, झालरें आदि देखकर आदमी दंग रह जाता है। दिलवाड़ा के जैन मन्दिरों की कला ने आगरे के ताजमहल की कारीगरी को भी मात कर दिया है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—महमूद गजनवी ने मथुरा के मुख्य मन्दिर के बारे में क्या कहा था ?

२—राजपूत-काल के किन्हीं तीन मन्दिरों के नाम बताओ। वे कहाँ पाये जाते हैं ?

३—कन्दर्य महादेव का मन्दिर कहाँ है ? उसका वर्णन करो।

४—आबू पर्वत पर स्थित जैन मन्दिरों के विषय में क्या जानते हो ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पन्द्रहवां अध्याय

दक्षिण भारत के राज्य

पाठ १ —चालुक्य, राष्ट्रकूट, पल्लव तथा चोल

बालको, तुम पीछे उत्तर भारत के राजपूत कालीन (नवीं-ग्यारहवीं शती) अनेक छोटे-छोटे राज्यों को देख चुके हो। तुम्हें उनके आपस के लड़ाई-झगड़ों का संकेत भी मिल चुका है। उस काल में दक्षिण भारत की राजनीतिक दशा भी लगभग वैसी ही थी जैसी उत्तर भारत की। वहाँ भी कई राजवंशों ने अपने छोटे-छोटे राज्य खड़े कर लिये थे। आगे मानचित्र में देख कर उनके नाम बताओ। इन राजवंशों में भी आपस में लड़ाई-झगड़ा चलता रहता था। नमूने के लिए इस पाठ में तुम दक्षिण में वातापी के चालुक्य वंश और कांची के पल्लव वंश तथा चोल साम्राज्य का कुछ हाल पढ़ोगे।

वातापी के चालुक्य और राष्ट्रकूट

वातापी में, जो आजकल के बीजापुर जिले में बदामी कहलाता है, हर्षवर्धन के समय में चालुक्य वंश के पुलिकेशी द्वितीय की राजधानी थी। तुम जानते हो कि पुलिकेशी द्वितीय ने हर्ष को दक्षिण की ओर नहीं बढ़ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया था। पुलिकेशी बड़ा प्रतापी राजा था। आगे चल कर पुलिकेशी पर कांची के पल्लव राजा **नरसिंहवर्मा** ने हमला किया और शायद पुलिकेशी

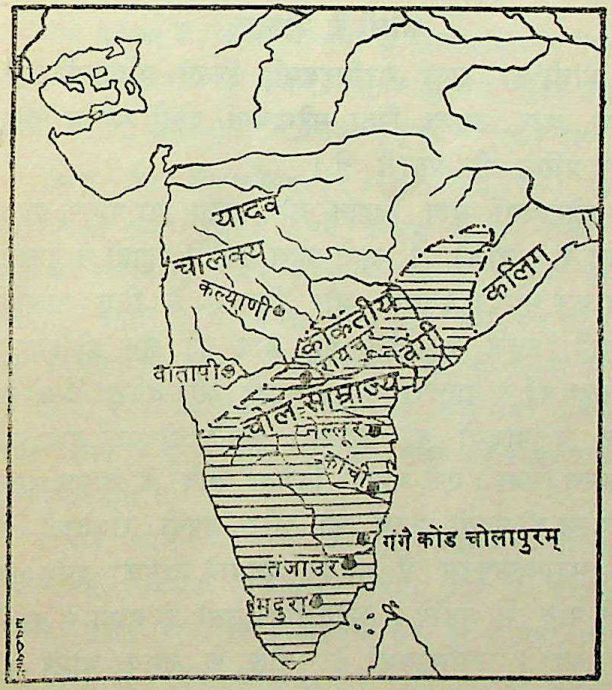

दक्षिण भारत के प्राचीन राज्य

वातापी की रक्षा करता हुआ मारा गया (६४२ ई०)। उसके पुत्र **विक्रमादित्य** ने पल्लव राजा नरसिंहवर्मा के पोते को हरा कर अपने पिता की मृत्यु का बदला लिया

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और कांची को विजय कर लिया। चालुक्यों और पल्लवों की यह छीना-झपटी अगले सौ वर्षों तक इसी तरह चलती रही। अन्त में चालुक्यों का राज्य उनके एक सामन्त दन्तिदुर्ग राष्ट्रकूट ने छीन लिया (७५३ ई०)।

कांची के पल्लव

कांची का राजा **नरसिंहवर्मा**, जिसने पुलिकेशी को हराया, और उसका पिता **महेन्द्रवर्मा** दोनों पल्लव वंश में बड़े प्रसिद्ध और प्रतापी थे।

महेन्द्रवर्मा बड़ा विद्वान और कला का पोषक था। दक्षिण के राजाओं में पहले पहल उसी ने पहाड़ों में गुफाएं कोल कर मन्दिर बनवाये और सिंचाई के लिए तालाब खुदवाये। पहले वह जैन था, बाद को शैव हो गया। **नरसिंहवर्मा** ने वातापी के चालुक्यों और दक्षिण के चोल, केरल व पांड्यों को हराया। उसने दो बार लंका पर आक्रमण किया। एक महान विजेता होने के कारण उसने महामल्ल की पदवी धारण की और अपनी राजधानी के पास महामल्लपुरम में मन्दिर बनवाये जिसका वर्णन तुम अगले पाठ में पढ़ोगे। ह्वेन्त्सांग उसी के समय में कांची गया था। नरसिंहवर्मा के पोते के समय कांची को चालुक्यों ने ले लिया, यह तुम ऊपर पढ़ चुके हो परन्तु कांची फिर शीघ्र ही पल्लवों के अधिकार में आ गयी। आठवीं शती में एक बार फिर चालुक्यों और पल्लवों में कांची की अदला-बदली हुई। नवीं शती के अन्त तक पल्लवों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शक्ति क्षीण हो गयी और पल्लवों का स्थान चोलों ने ले लिया।

चोल साम्राज्य

धुर दक्षिण में चोल पल्लवों के सामन्त थे, पर पल्लवों का पतन होने पर वे न केवल स्वतन्त्र हो गये, बल्कि उन्होंने कांची पर भी अधिकार कर लिया (लगभग ८९३ ई०)।

चोल वंश में राजेन्द्र (१०१६-१०४४ ई०) सबसे प्रतापशाली राजा हुआ। उसने दक्षिण के सारे राज्यों को जीत कर उत्तर भारत पर आक्रमण किया। उसकी सेनाएं उड़ीसा, बंगाल और मगध होती हुई गंगा तक पहुँची। इस विजय की खुशी में उसने 'गंगैकोंड' की पदवी धारण की और गंगैकोंडचोलपुरम नाम का एक नगर बसाया। उसमें उसने एक विशाल सरोवर तथा अनेक महल और मन्दिर बनवाये।

राजेन्द्र चोल के पास एक बडा समुद्री बेड़ा भी था। उसने लंका, अन्दमन निकोबार, बरमा तट के अराकान और पेगू, मलय अन्तरीप तथा इंडोनेशिया के सुमात्रा, जावा आदि द्वीपों की विजय की।

बत्तीस वर्षों तक राज्य करने के बाद राजेन्द्र चोल परलोक सिधारा। इतने विशाल चोल साम्राज्य को कायम रखना आसान काम नहीं था, क्योंकि पराजित राज्य बराबर विरोध, उपद्रव और युद्ध करते रहे। राजेन्द्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की मृत्यु के करीब ७५ वर्षों के बाद चोलों की अवनति हो गयी, क्योंकि उनके राजवंश ही में आपस में ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्य पैदा हो गया।

चोलों ने दक्षिण में शासन का बड़ा अच्छा प्रबन्ध किया था। आजकल जैसा पंचायती राज्य है, वैसा ही चोलों का शासन-विधान था। चोल राजाओं ने सिंचाई के लिए नहरें, तालाब और कुएं खुदवाये। व्यापार की सुविधा के लिए घाट और सड़कें बनवायीं। उनके समय में संस्कृत और तमिल साहित्य तथा शैव और वैष्णव धर्म की बड़ी उन्नति हुई।

उस समय के मन्दिर और मूर्तियां इस देश की अमूल्य निधि हैं। उनका वृत्तान्त तुम अगले पाठ में पढ़ोगे।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—वातापी कहाँ है? उसके राजा पुलिकेशी द्वितीय के विषय में क्या जानते हो?

२—कांची के राजा नरसिंहवर्मा का हाल बताओ।

३—राजेन्द्र चोल कौन था और कब हुआ? उसके राज्य का वर्णन करो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ २—दक्षिण के मन्दिर

आजकल उत्तर भारत के मुकाबले में दक्षिण भारत में अधिक बड़े मन्दिर पाये जाते हैं, क्योंकि मुसलमान विजेताओं की तोड़-फोड़ से दक्षिण के मन्दिर बहुत कुछ बचे रहे। इसके सिवाय जब उत्तर भारत में तुर्क लोग

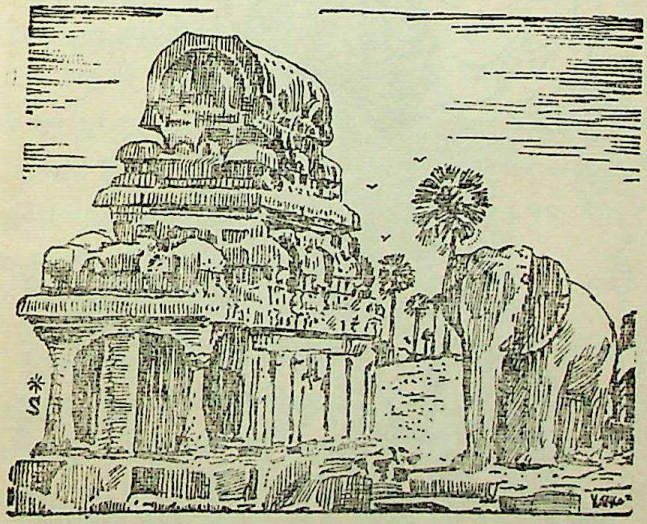

महामल्लपुरम का रथ

मन्दिरों को नष्ट कर रहे थे, तब दक्षिण में बड़े विशाल मन्दिर बन रहे थे। उदाहरण के लिए जब महमूद गजनवी देवों के जैसे बनाये मथुरा और सोमनाथ के मन्दिरों का नाश कर रहा था, उन्हीं दिनों दक्षिण में राजेन्द्र चोल का महान साम्राज्य था और उसके अपने बसाये हुये

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

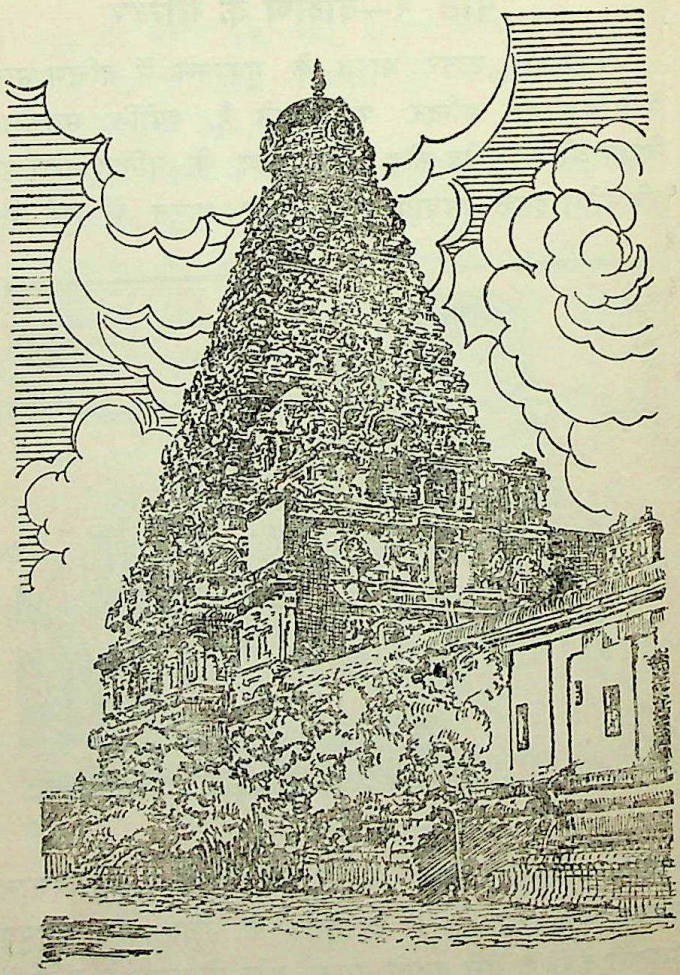

चोलों का बनवाया तंजाउर का मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नगर गंगैकोंडचोलपुरम में विशाल महल और मदिर बन रहे थे।

पल्लव मन्दिर

सातवीं शती में पल्लव वंश के राजाओं ने कांची के समीप समुद्र के किनारे **महामल्लपुरम** में चट्टानों को काट-छाँट कर मन्दिर बनवाये। ये मन्दिर रथ कहलाते हैं। इनके नाम महाभारत के पांडव भाइयों पर रखे गये हैं—जैसे भीमरथ, अर्जुनरथ, सहदेवरथ आदि, लेकिन असल में थे शैव मन्दिर हैं। इन मन्दिरों में मूर्तियाँ बड़ी विशाल और विलक्षण हैं। उदाहरण के लिए गंगा को पृथ्वी पर लाने वाले भगीरथ की मूर्ति २९.४७ मीटर ऊँची और १३.११ मीटर चौड़ी एक चट्टान में से काटी गयी है।

चालुक्य और राष्ट्रकूट मन्दिर

चालुक्य वंश के राजाओं ने भी अपनी राजधानी वातापी में अनेक मन्दिर बनवाये। आठवीं शती में राष्ट्रकूट राजा कृष्ण के बनवाये हुए वेरूल (एलोरा) का कलाश मन्दिर संसार में प्रसिद्ध है। यह मन्दिर ५७.९१ मीटर ऊँचा एक ही चट्टान को काट कर बनाया गया था। इसमें कई मंजिलें हैं और दीवारों पर पौराणिक कथाएं खुदी हैं। बम्बई से ९.६ किलोमीटर दूर के **एलीफेंटा** टाप में पहाड़ को काट कर बनाये गये मन्दिर भी इसी युग के हैं। वहीं पर प्रसिद्ध त्रिमूर्ति विराजती है जो कुछ समय पूर्व हमारे पोस्ट-कार्ड पर अंकित थी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चोल मन्दिर

सुदूर दक्षिण में चोल राजाओं ने दसवीं शती

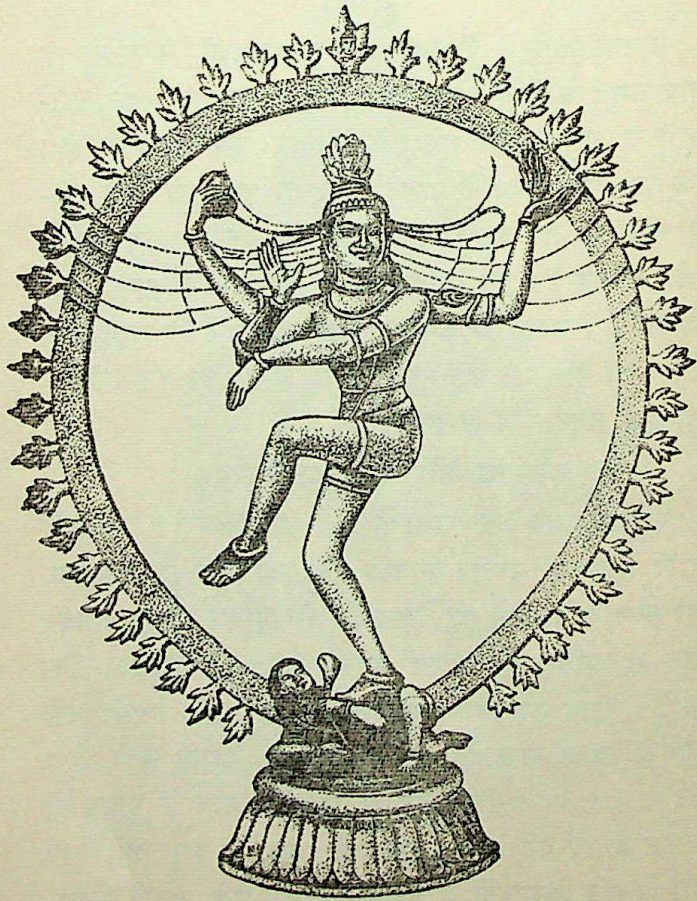

नटराज की मूर्ति

में बहुत से विशाल मन्दिर बनवाये। उनमें **तंजाउर** का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
राजराजेश्वर नाम का शिवालय बहुत प्रसिद्ध है। इसका विशाल विमान अर्थात ऊपर का शिखर ही १४ मन्जिलों का और ऊँचाई ५७.६१ मीटर है। दीवारों पर राजेन्द्र चोल के पिता राजराज प्रथम के दिग्विजयों का इतिहास खुदा है। धुर दक्षिण में बारहवीं शती में धातु से नटराज की मूर्तियाँ बनीं। तुमने पन्द्रह पैसे के डाक टिकट पर एक चार भुजाओं वाली मूर्ति का चित्र देखा होगा। यह नटराज की मूर्ति का चित्र है। इसके अतिरिक्त उस समय शिव, विष्णु आदि देवताओं, शैव सन्तों और राजा-महाराजाओं की मूर्तियाँ भी बनायी गयीं। ये मूर्तियाँ ताँबे या कांसे की ढाली गयी हैं और शिल्पकला की अति उत्तम कृतियाँ हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—महामल्लपुरम कहाँ है और क्यों प्रसिद्ध है ?

२—वेरूल (एलोरा) का कैलाश मन्दिर कहाँ है ? उसका वर्णन करो।

३—एलिफेंटा कहाँ है और क्यों प्रसिद्ध है ?

४—तंजाउर के चोल मन्दिर राजराजेश्वर के विषय में क्या जानते हो?

५—नटराज की मूर्ति का चित्र बनाओ। यह कब और कहाँ बनी ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोलहवाँ अध्याय

वृहत्तर भारत

प्राचीन काल में भारत की सीमाओं के पार जिस विशाल भूखंड में भारतीय संस्कृति अर्थात धर्म व कला

दक्षिण-पूर्व का वृहत्तर भारत

तथा भारतीय बस्तियाँ फली फलीं, उसे 'वृहत्तर' भारत कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्य एशिया का वृहत्तर भारत

वृहत्तर भारत का एक अंग उत्तर में पामीर पार मध्य एशिया में था। वहाँ अब चीनी तुर्किस्तान या सिकिआंग नाम का देश है। ईसा पूर्व तीसरी शती में वहाँ भारतीय बस्तियाँ बसनी शुरू हुईं। इसके बाद पाँचवीं शती ईस्वी में अर्थात ८०० वर्षों के बाद जब चीनी यात्री फाह्यान वहाँ पहुँचा, तब उसने देखा कि सारा मध्य एशिया भारतीय बन चुका था। आधुनिक खुदाइयों में वहाँ से हजारों बौद्ध मूर्तियाँ एवं बीसों ब्राह्मी अक्षरों में लिखे संस्कृत के लेख मिले हैं।

दक्षिण-पूर्वी एशिया का वृहत्तर भारत

वृहत्तर भारत का दूसरा अंग **दक्षिणी-पूर्वी एशिया** में था। वहाँ भारतवासियों ने न केवल अपनी संस्कृति फैलायी, अपितु अनेक राज्य एवं साम्राज्य कायम किये। पीछे दिये मानचित्र में अनेक स्थानों के प्राचीन नामों से ही यह बात साफ हो जाती है।

दक्षिण-पूर्वी द्वीपों की ओर भारत के व्यापारी महाजनपद काल अर्थात ईसा पूर्व छठी शती से ही आते-जाते थे। प्राचीन ग्रन्थों से पता चलता है कि कलिंग तट से जहाजों के द्वारा बहुत से व्यापारी वहाँ पहुँचे और वहीं बस गये। यह आना-जाना और बसना बराबर जारी रहा। उन्हें वहाँ सोने की खानें मिली थीं। अतः उन्होंने वहाँ के प्रदेशों का नाम **सुवर्ण भूमि और सुवर्ण द्वीप**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रखा। आधुनिक 'सुमात्रा' शब्द सुवर्ण द्वीप का बिगड़ा रूप है। धीरे-धीरे उन लोगों ने **मलाया**, **सुमात्रा**, **जावा**, **बाली**, **बोर्नियो** आदि में हिन्दू राज्य एवं साम्राज्य बना लिये। हजारों वर्षों से ऊपर वहाँ उनके राज्य बने रहे। १४वीं-१५वीं शती के लगभग इस्लाम ने वहाँ के हिन्दू राज्यों और उन राज्यों की हिन्दू संस्कृति को नष्ट कर दिया।

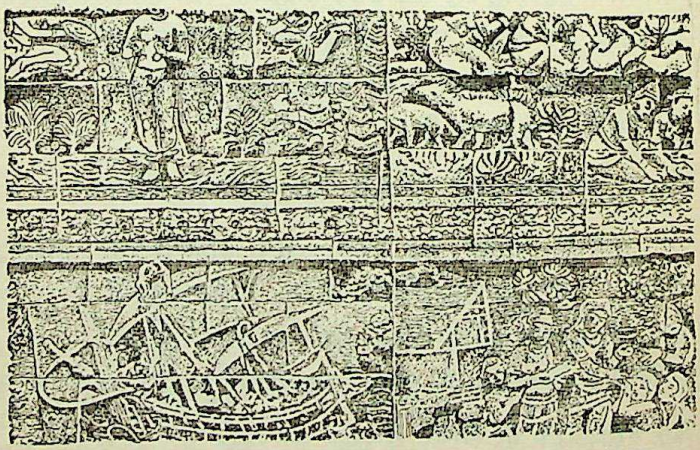

भारतीय जहाज का जावा में आगमन (बराबुदुर स्तूप पर खुदा एक दृश्य)

इंडोनेशिया के केवल बाली द्वीप में इस समय भी हिन्दू संस्कृति पायी जाती है।

हिन्द-चीन में, जिसे अब व्येतनेम कहते हैं, भारतीयों के दो राज्य कायम हुए—पहला कम्बोडिया में और दूसरा अनाम में। उस समय **कम्बोडिया** का नाम **कम्बुज** और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनाम का नाम **चम्पा** था। ११-१३ वीं शतियों में वहाँ के हिन्दू-राज्यों ने अपर्व उन्नति की। उस समय जब भारत में महमूद गजनवी ने मथुरा एवं सोमनाथ के मन्दिर तोड़े तथा जब मुहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ने दिल्ली और अजमेर के मन्दिरों को ढाया, कम्बोडिया के नगर अंकोरथोम में संसार का सबसे बड़ा शिवालय बना। १४वीं शती के बाद वहाँ हिन्दू राज्यों की अवनति होने लगी। उन्हें पहले तो स्याम ने जीता। बाद को १९वीं शती में फ्रांस ने ले लिया। अब वे स्वतन्त्र हैं।

वृहत्तर भारत के मन्दिर

जब भारतीयों ने दक्षिण-पूर्वी एशिया में अपनी बस्तियाँ बसायीं या राज्य बनाये, तब वहाँ के रहने वाले सभ्य नहीं थे। हिन्दुओं ने उन्हें अपनी भाषा, वर्णमाला, रीति-रिवाज, आचार-विचार, पूजा-पाठ, साहित्य, संगीत, कला आदि जीवन की सारी बातें सिखाकर सभ्य बनाया। इसी से वहाँ हिन्द धर्म के लिए ऐसा उत्साह पैदा हुआ जसा शायद भारत में भी न था। उन देशों और द्वीपों में पुराणों के देवताओं जैसे शिव, विष्णु, लक्ष्मी, गरुड़, बुद्ध आदि की सैकड़ों मर्तियाँ मिली हैं; और बाली द्वीप में अब भी वहाँ के कारीगर इन्द्र, विष्णु कृष्ण आदि देवताओं और अवतारों की मूर्तियाँ बनाते हैं।

क्या यह कम आश्चर्य की बात है कि विश्व में सबसे बड़ा बौद्ध स्तूप भारत में न बनकर जावा में और सबसे बड़ा हिन्दू मन्दिर कम्बोडिया में बना!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जावा के बौद्ध और हिन्दू मन्दिर

जावा के बराबुडुर में एक पहाड़ी के ऊपर साँची की तरह एक अनोखा बौद्ध मन्दिर बनाया गया (७५०-८५० ई०)। यह विशाल मन्दिर या स्तूप चारों ओर एक के ऊपर दूसरे सीढ़ीनुमा नौ चक्करों से मिलकर बना है। ऊपर की ओर का हरएक चक्कर नीचे वाले चक्कर से थोड़ा छोटा होता गया है। पहले चक्कर की लम्बाई ११९.७८ मीटर और नवें चक्कर की लम्बाई पहले का दसवां भाग यानी ११·९७ मीटर है। ऊपर के तीन चक्करों में चारों और छोटे-छोटे स्तूप और अंतिम चक्कर के ऊपर घंटे के आकार का महान चैत्य अर्थात बौद्ध मन्दिर है। चैत्य की गैलरियों में बुद्ध के जीवन और जातकों के सैकड़ों दृश्य मूर्तिमान हैं। उन्हें 'पत्थरों पर तराशे हुए महाकाव्य' कहना उचित होगा। वहीं जावा के पूर्वी भाग में प्राम्बनन में नवीं शती के बनवाये विशाल शैव मन्दिर हैं जिन पर शुरू से लेकर लंका पर आक्रमण तक की रामायण की कथा मूर्तियों में चित्रित है।

कम्बोडिया के हिन्दू मन्दिर

बारहवीं शती में कम्बुज की राजधानी यशोधरपुर यानी आजकल के **अंकोरथोम** के ठीक बीच में शिव का एक विशाल मन्दिर बनाया गया। इसके तीन खंड हैं और हर एक खंड पर एक ऊँची मीनार है। टूटी-फूटी दशा में इस समय भी बीच की मीनार की ऊँचाई ४५·७२ मीटर है। ऊँची मीनारों के चारों ओर अन्य छोटी-छोटी मीनारें हैं। मन्दिर केभीतर-बाहर चारों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
तरफ शिव की विशाल मूर्तियाँ और मन्दिर में जगह-जगह पत्थरों की सुन्दर चित्रकारी का गयी है ।

कम्बोडिया के **अंकोरवात** विष्णु के मन्दिर की बनावट बड़ी आश्चर्यजनक है । उसके परकोटे के चारों ओर जो खाई है,

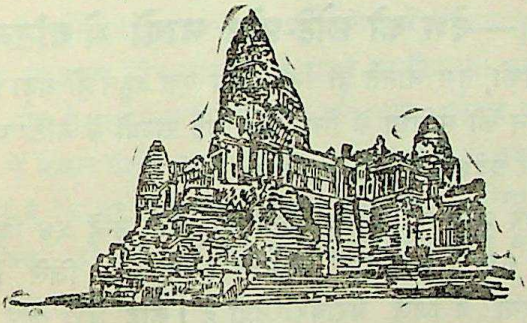

अंकोरवात का विष्णु मन्दिर

उसकी चौड़ाई लगभग २१३.३६ मीटर और लम्बाई ४ किलोमीटर है । खाई को पार करने के लिए १०.६७ मीटर चौड़ा एक पुल बना है । उसे पार करके महान द्वार आता है जिसकी चौड़ाई ३०.४८ मीटर है । द्वार में प्रवेश करके विशाल मन्दिर के दर्शन होते हैं ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—वृहत्तर भारत किसे कहते हैं? उसमें मध्य एशिया का कौन-सा भाग शामिल था ?

२—वृहत्तर भारत में दक्षिण-पूर्वी एशिया के कौन-कौन से देश और द्वीप शामिल थे ?

३—इंडोनेशिया के किस द्वीप में अब भी हिन्दू संस्कृति पायी जाती है?

४—जावा के बराबुदुर और प्राम्बनन के मन्दिरों का वर्णन करो ?

५—अंकोरथोम और अंकोरवात कहाँ हैं और क्यों प्रसिद्ध हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

खंड २—नागरिक जीवन

पहला अध्याय

जिले का शासन-प्रबन्ध

पाठ १—देश को छोटे-छोटे भागों में बाँटना

बालको, तुम जानते हो कि भारत एक बहुत ही बड़ा देश है। शासन की सुविधा के लिए उसे कई राज्यों में बाँटा गया है। उत्तर प्रदेश उनमें से एक है।

उत्तर प्रदेश को ११ **कमिश्नरियों** और उन्हें ५४ **जिलों** में बाँटा गया है। हरएक कमिश्नरी में ७-८ जिले हैं। कमिश्नरियां व जिले बराबर नहीं हैं। कोई जरा छोटे हैं, कोई बड़े। औसत जिले का क्षेत्रफल करीब चार हजार वर्ग मील और आबादी करीब दस लाख है। शासन के लिए जिलों को **तहसीलों** और तहसीलों को **परगनों** में बाँटा गया है। एक परगने में कई **गाँव** हैं।

अब तुम अपनी कापी पर लिखो कि तुम किस गाँव या शहर, किस परगने, किस तहसील और किस जिले के रहने वाले हो।

देश के शासन में जिले का बड़ा महत्व है, इसलिए उसका प्रबन्ध अति योग्य अधिकारी के हाथ में रखा जाता है।

जिले का मुख्य अधिकारी

जिले का मुख्य सरकारी अफसर **कलक्टर** या **जिलाधीश** कहलाता है। उसे **जिला मैजिस्ट्रेट** भी कहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'कलक्टर' शब्द का अर्थ है 'इकट्ठा करने वाला'। वह जिले में **मालगुजारी या भूमिकर** की वसूली का सबसे बड़ा अफसर है। उसका काम है तहसीलदारों, कानूनगो, लेखपालों (पटवारियों) आदि के द्वारा सरकार की मुख्य आय 'मालगुजारी' को इकट्ठा करवाना, भूमि के बारे में कागज-पत्रों को ठीक रखवाना और आवश्यकता पड़ने पर किसानों को सरकार की ओर से सहायता दिलवाना। यदि बाढ़, अकाल व टिड्डी दल से फसल मारी जाती या खराब हो जाती है,तो कलक्टर का काम है कि वह किसानों के लगान की छट के लिए सरकार से लिखा-पढ़ी करे। वह किसानों को सरकारी ऋण या तकावी भी दिला सकता है।

मैजिस्ट्रेट का अर्थ है **न्याय करने वाला अधिकारी**। कलक्टर होने की वजह से वह जिले में लगान के मुकदमों का फैसला करता था। मैजिस्ट्रेट होने से फौजदारी या मारपीट के मुकदमों को सुनता था। उसे अपराधी को दो साल तक कैद और एक हजार रुपये तक जुर्माना करने का अधिकार था। अब उत्तर प्रदेश की सरकार ने न्याय का काम दूसरे अफसरों को सुपुर्द कर दिया है और उत्तर प्रदेश के प्रायःसभी जिलों में रेवेन्यू अफसरों और जुडीशल मैजिस्ट्रेट नियत किए हैं।

लगान की वसूली और फौजदारी में न्याय करने को छोड़कर अब वह जिलाधीश अर्थात **जिले का सबसे ऊँचा अफसर है**। जुलूसों की व्यवस्था, दंगों का दमन, पिस्तौल और बन्दूक के लैसंस की स्वीकृति वही करता है। जिले के अधिकतर सरकारी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
अधिकारी उसके अधीन हैं। जो उसके मातहत नहीं हैं, उन्हें भी आवश्यकता पड़ने पर जिलाधीश की आज्ञा माननी पड़ती है।

जिलाधीश पुलिस, जेल, स्कूल, अस्पताल, सार्वजनिक निर्माण (पी०डब्लू०डी०), कृषि आदि के विभागों के कामों की देखभाल रखता है। राज्य-सरकार की प्रायः सारी बातें जिलाधीश के द्वारा जनता तक पहुँचती है। सरकार भी जिले के बारे में बहुत सी बातें उसी के द्वारा जान पाती है। इस प्रकार वह राज्य सरकार का हाथ व मुख ही नहीं, वरन आँख व कान भी है।

जिलाधीश जिला परिषद और नगरपालिकापर निगरानी रखता है। नियोजन अधिकारी (प्लानिंग अफसर उसकी देखरेख में काम करता है। हमारी राज्य-सरकार ने जनता की उन्नति के लिए जो पंच-वर्षीय योजनाएँ बनायी हैं उनको सफल बनाने का भार भी जिलाधीश पर है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—उत्तर प्रदेश में कितने जिले और कितनी कमिश्नरियाँ हैं?

२—कलेक्टर, जिला मैजिस्ट्रेट और जिलाधीश ये नाम जिले के सबसे ऊँचे अफसर के क्यों रखे गये हैं?

३—जिलाधीश को सरकार का हाथ व मुख और आँख व कान क्यों समझना चाहिए?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २--जिले के प्रमुख अधिकारी और विभाग

तुमने पिछले पाठ में जिलाधीश के कर्तव्यों के बारे में पढ़ा है। वह अकेला इन कर्तव्यों को पूरा नहीं कर सकता। अतः उसकी सहायता के लिए अनेक विभाग और उनके अधिकारी होते हैं।

पुलिस

जिले में शान्ति और सुरक्षा के लिए जिलाधीश पुलिस से सहायता लेता है। स्वतन्त्र होने से पहले लोग प्रायः पुलिस से डरा करते थे। अब समय बदल गया है। पुलिस जनता की सेवा के लिए है। बड़े होकर तुम्हारा यह कर्तव्य होगा कि तुम सदा पुलिस के साथ सहयोग करो। तभी वह तुम्हारी रक्षा कर सकेगी। कोई-कोई लोग डर या लालच से चोर या डाकू को अपने यहाँ छिपा लेते हैं। यह बड़ा पाप है। तुम्हें कभी अगर इस प्रकार छिपे चोर या डाकू का पता चले, तो चपके से थाने में सूचित कर देना चाहिए।

जिले में पुलिस का सबसे बड़ा अधिकारी **सुपरिंटेंडेन्ट आफ पुलिस** (एस०पी०) कहलाता है। बड़े-बड़े जिलों में कई एस० पी० होते हैं—सीनियर एस०पी० और असिस्टेंट एस०पी०।

एस० पी० जिले के सदर या प्रधान नगर में रहता है। उसके नीचे एक या अधिक **डिप्टी सुपरिंटेंडेंट, इंस्पेक्टर, सब-इंस्पेक्टर** या **थानदार**, हेड **कांस्टेबिल** और **कांस्टेबिल** होते हैं। इनके सिवाय जिले के सदर में रिजर्व पुलिस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी होती है। यह **सशस्त्र पुलिस** कहलाती है। इसका अफसर रिजर्व इंस्पेक्टर कहलाता है। इसकी सहायता के लिए सब-इंस्पेक्टर भी होते हैं। सशस्त्र पुलिस को घोड़े की सवारी, बंदूक चलाना और अश्रुगैस का प्रयोग सिखाया जाता है।

जिले के प्रधान नगर में शहर **कोतवाल** रहता है जिसका पद इंस्पेक्टर या डिप्टी सुपरिंटेंडेंट का होता है। इसके अतिरिक्त **खुफिया पुलिस** होती है। उसके सिपाही प्रायः सादे वेश में या वेश बदल कर अपराधियों का पता लगाते हैं।

जेल

सजा पाये हुए अपराधियों को रखने के लिए हरएक जिले में **डिस्ट्रिक्ट** या **जिला जेल** होती है। उसका **सुपरिंटेंडेंट** जिले का सिविल सर्जन होता है। उसके नीचे **जेलर** और **डिप्टी जेलर** होते हैं। लम्बी सजा पाये हुए कैदियों को रखने के लिए कई जिलों पर सेन्ट्रल या केन्द्रीय जेल होती है।

जेलों का उद्देश्य अपराधियों के जीवन को सुधारना है। इसलिए देश के स्वतन्त्र होने पर अब जेलों में अनेक सुधार किये जा रहे हैं। कैदियों को पढ़ने-लिखने व दस्तकारियों की शिक्षा दी जाती है। लखनऊ में एक **आदर्श जेल** खोली गय है जिसमें अपराधियों को उत्तम नागरिक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। बच्चों के लिए लखनऊ और बरेली में तथा स्त्रियों के लिए नैनी (इलाहाबाद) और लखनऊ में "नारी बन्दी निकेतन" नामक अलग जेल हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्कूल

जिले में शिक्षा की उन्नति और देखभाल के लिए एक **जिला विद्यालय निरीक्षक** (डिस्ट्रिक्ट इंस्पेक्टर), एक **डिप्टी-इंस्पेक्टर** और कई **सब-डिप्टी इंस्पेक्टर** रहते हैं। कन्या पाठशालाओं के निरीक्षण के लिए **महिला इन्स्पेक्टर** भी होती हैं। अधिकारी विद्यालयों का निरीक्षण करते समय उनमें पढ़ाई-लिखाई, खेल-कूद स्वास्थ्य, सफाई आदि का उचित प्रबन्ध कराते हैं।

अस्पताल

हरएक जिले के प्रधान नगर में जिला अस्पताल होता है। उसका मुख्य अधिकारी **सिविल सर्जन** है। उसके नीचे **असिस्टेंट सर्जन** और **सब-असिस्टेंट सर्जन** होते हैं। जिला अस्पताल में कठिन रोगों की परीक्षा अथवा बड़े आपरेशन या चीर-फाड़ का अच्छा प्रबन्ध होता है। इसलिए यदि तुम्हें कोई दुखिया या पीड़ित रोगी मिले, तो उसे ये बातें अवश्य बता देना। यदि दीन दुखी, रोगियों को तुम लोग मिल कर अस्पताल पहुँचा सको, तो बहुत अच्छा काम करोगे।

कृषि और सिंचाई

खेती की उन्नति के लिए हर जिले में **जिला कृषि अधिकारी** रहता है। यदि तुम्हारे कोई सम्बन्धी खेती करते हों, तो तुम उन्हें बता सकते हो कि कृषि अधिकारी की देखरेख में सरकारी फार्मों में अच्छी खेती के नमूने तैयार किये जाते हैं। वह उन्हें अच्छे बीज और उत्तम हल आदि दिला सकता है। कभी-कभी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिला कृषि अधिकारी कृषि-प्रदर्शना करते हैं। उसे अवश्य देखना चाहिए।

जिन जिलों में नहरें होती हैं वहाँ उसकी देखरेख व पानी का वितरण करने के लिए सिंचाई इंजीनियर, ओवरसियर, इंस्पेक्टर, अमीन आदि सरकारी कर्मचारी रहते हैं। आजकल सरकार का ध्यान सिंचाई के लिए नलकूप, कुएँ, तालाब आदि बनवाने में लगा है।

सार्वजनिक निर्माण

सरकारी भवन, सड़कें, पुल आदि बनाने, उनकी देखभाल व मरम्मत आदि कामों के लिए जिले में **इंजीनियर** और **ओवरसियर** होते हैं।

नियोजन

आजकल देश की चौमुखी उन्नति के लिए सहयोग समितियाँ, रक्षादल, सूचना विभाग, श्रमदान आदि अनेक काम जिलों में चल रहे हैं। उनमें समन्वय अर्थात उचित सहयोग बनाये रखने के लिए हर जिले में **नियोजन अधिकारी** (प्लानिंग अफसर) रखा गया है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—जिले में कौन-कौन से पुलिस अधिकारी होते हैं ? पुलिस से हमें क्या लाभ है ?

२—जिले में कृषि और सिंचाई के काम में सहायता के लिए कौन-कौन सरकारी अधिकारी नियत हैं ? उससे क्या लाभ हैं ?

३—अपने जिले के इन पदाधिकारियों के नाम बताओ—

जिलाधीश, सुपरिंटेंडेंट पुलिस, सिविल सर्जन।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ ३— जिले के न्यायालय

हरएक जिले में एक **जिला जज** होता है। जिले में वह न्याय के सम्बन्ध में सबसे बड़ा अधिकारी है। वह जिलाधीश के आधीन नहीं है।

तुमने सुना होगा कि कभी-कभी रुपये के लेन-देन या सम्पत्ति के सम्बन्ध में झगड़े उठ खड़े होते हैं। उनके निर्णय के लिए व्यवहार न्यायालय अर्थात् दीवानी अदालत होती है।

दुर्भाग्य से हमारे समाज में कुछ लोग ईमानदारी से रोटी नहीं कमाते, घस लेते हैं, धोखा देते हैं, चोरी करते हैं, इत्यादि। इस प्रकार के मामलों में दंड के निर्णय के लिए दंड न्यायालय अर्थात् फौजदारी अदालत होती है।

व्यवहार न्यायालय

दीवानी के मुकदमों के लिए **जिला अदालत** का प्रधान **जिला जज** होता है। जिला जज के नीचे **सब-जज** होते हैं। उनके नीचे **मुंसिफी** की अदालतें होती हैं।

दंड न्यायालय

साधारण रूप से हरएक जिले में फौजदारी के मुकदमों के लिए **सेशंस कोर्ट** होता है। इसका प्रधान जिला जज होता है और वह **जिला व सेशंस जज** या **दौरा जज** कहलाता है। उसे फौजदारी के मुकदमों में कालापानी व फाँसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तक की सजा देने का अधिकार है। बड़े जिलों में **एडिशनल सेशंस जज** भी होते हैं। फौजदारी के मुकदमे की

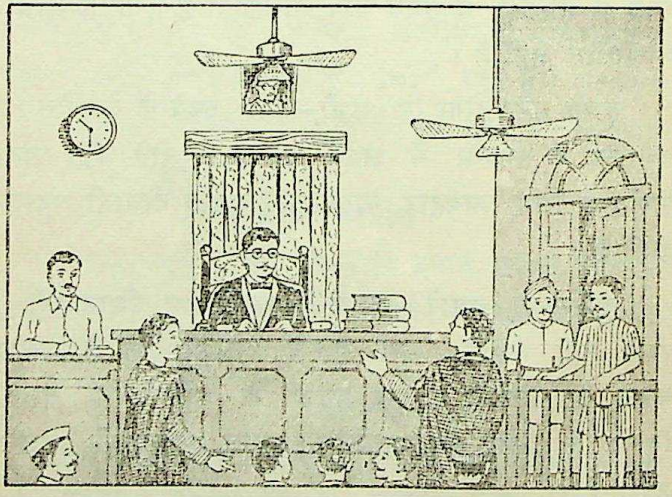

जिला जज मुकदमा सुन रहा है और वकील बहस कर रहा है।

अपीलों के लिए जिले के क्षेत्रों में वे सबसे बड़े अधिकारी हैं।

सेशंस कोर्ट के नीचे मैजिस्ट्रेटों की अदालतें होती हैं। मैजिस्ट्रेट तीन श्रेणियों के होते हैं। उनके पद और अधिकार का ब्योरा नीचे लिखा है :—

प्रथम श्रेणी—२ वर्ष कैद, १००० रु० जुर्माना
द्वितीय श्रेणी-६ मास कैद, २०० रु० जुर्माना
तृतीय श्रेणी-१ मास कैद, ५० रु० जुर्माना

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिला मैजिस्ट्रेट, नगर (सिटी) मैजिस्ट्रेट और सब-डिवीजनल मैजिस्ट्रेटों को प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट के अधिकार होते हैं।

हरएक जिले में कुछ आनरेरी अर्थात अवैतनिक मैजिस्ट्रेट भी होते थे, जिन्हें प्रथम, द्वितीय व तृतीय श्रेणी के मैजिस्ट्रेट के अधिकार दिये जाते थे। आनरेरी मैजिस्ट्रेटों से सरकार का खर्चा कुछ कम हो जाता था। भारत में अंग्रेजी राज्य के समय सरकार अपने राजभक्तों को इन पदों पर नियुक्त किया करती थी। कांग्रेस-मंत्रिमंडल ने इस प्रथा में सुधार किया। संयुक्त विधायक दल की सरकार ने उनको समाप्त कर दिया।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—अपने जिले के जज का नाम मालूम करो।

२—जिलाधीश के पास किस प्रकार के मुकदमे जाते हैं? रेवेन्यू अफसर और जुडिशल मैजिस्ट्रेट क्यों नियत किये गये हैं?

३—व्यवहार न्यायालय का क्या काम है? उनके अधिकारी क्या कहलाते हैं?

४—दंड न्यायालय से क्या लाभ है? उसके अधिकारी क्या कहलाते हैं?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—जिले के भाग और उनके अधिकारी

तहसील

तहसील के मुख्य अधिकारी को **तहसीलदार** कहते हैं। वह तहसील के सदर में रहता है। भमिकर या लगान की वसूली उसका मुख्य काम है। इस काम में उसकी सहायता के लिए **नायब तहसीलदार**, कई **कानूनगो, अमीन** व **लेखपाल** (पुराना नाम पटवारी) नियत हैं।

तहसीलदार लगान के छोटे मुकदमों का निर्णय करता है। फौजदारी के मुकदमों के लिए उसे द्वितीय श्रेणी के मैजिस्ट्रेट के अधिकार मिले होते हैं। तहसील में जो खजाना होता है, उसका प्रभार भी तहसीलदार पर होता है। साथ ही एक **सब-रजिस्ट्रार** का दफ्तर होता है जहाँ सम्पत्ति के बेचने व मोल लेने आदि को सरकारी रजिस्टरों में दर्ज कराने का काम होता है। हरएक तहसील के लिए **सब-डिवीजनल मैजिस्ट्रेट** होता है जो प्रायः जिले के मुख्य नगर में रहता है। ये लोग वास्तव में कलेक्टर के काम में मदद देते हैं और इसलिए **डिप्टी कलेक्टर** कहलाते हैं।

तहसील में शान्ति और व्यवस्था रखने का भार तहसील-दार और सब-डिवीजनल मैजिस्ट्रेट पर है। अतः इनका पुलिस पर भी अधिकार होता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पुलिस का प्रबन्ध

पुलिस के प्रबन्ध के लिए हर जिला पाँच-सात सर्किलों में बँटा होता है। सर्किल का मुख्य अधिकारी पुलिस इंस्पेक्टर कहलाता है। हर सर्किल में आठ-दस थाने होते हैं। हर थाने में एक हेड सिपाही और आठ-दस दूसरे सिपाही होते हैं। थाने में मुन्शी और मुहर्रिर भी होते हैं जो अपने हल्के की रिपोर्ट लिखते हैं। थाने का प्रधान अधिकारी

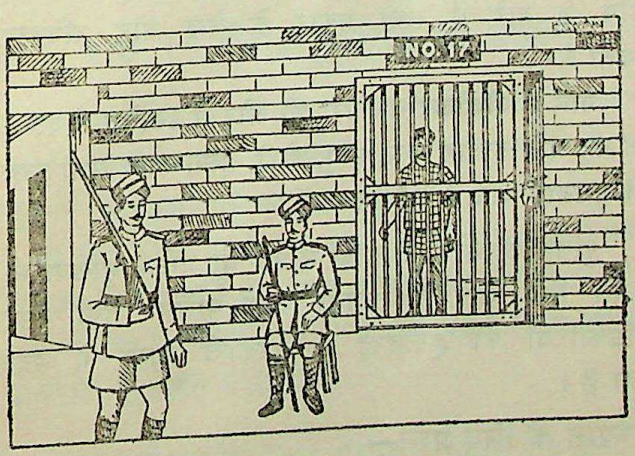

गाँव के थाने का दृश्य

सब-इंस्पेक्टर कहलाता है। वह अपराधियों का पता लगाता है।

शहर के थाने में कुछ चौकियां भी होती हैं जिनमें एक प्रधान सिपाही और कुछ अन्य सिपाही रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परगने के अधिकारी

लगान वसूल करने के लिए परगना **कानूनगो** के अधीन होता है। वह लेखपालों की सहायता से भूमिकर की वसूली करता है।

गाँव के अधिकारी

हरएक गाँव या कई छोटे गाँवों को मिलाकर उनके ऊपर **लेखपाल** होता है जिसे पहले **पटवारी** कहते थे। वह भूमि के बारे में सभी प्रकार के लेख और रजिस्टर रखता है।

गाँव में **चौकीदार** सरकार की ओर से इसलिए नियत है कि वह प्रति सप्ताह जन्म, मृत्यु, चोरी, हत्या आदि सभी तरह की सूचनाएँ थाने में पहुँचाता रहे।

पुलिस की ओर से गाँवों में एक या अधिक **मुखिया** भी नियत किये जाते हैं। उनका काम पुलिस तथा दूसरे अधिकारियों को हर तरह से सरकारी कामों में मदद देना है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—नीचे लिखे अधिकारियों का क्या काम है :—

(क) तहसीलदार (ख) कानूनगो (ग) लेखपाल

(घ) चौकीदार।

२—तहसील में शान्ति और सुरक्षा का क्या प्रबन्ध है ?

३—सब-रजिस्ट्रार और सब-डिवीजनल मैजिस्ट्रेट का क्या काम है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दूसरा अध्याय

जिला परिषद और नगरपालिका

पाठ १—जिला परिषद का संगठन

बालको, तुमने पिछले पाठों में जिले के सरकारी शासन–विभागों का हाल पढ़ा है। जिला-निवासियों को सुख व सुविधाएं पहुँचाने के लिए एक विभाग ऐसा भी है जो जनता की इच्छा से चुना जाता है। इसे **स्थानीय स्वायत्त शासन** कहते हैं। जिला परिषद, नगरपालिकाएं और ग्राम पंचायतें इसमें शामिल हैं। इस पाठ में तुम जिला परिषद के संगठन के विषय में पढ़ोगे।

नीचे लिखे व्यक्ति जिला परिषद के सदस्य होते हैं—

(१) जिले की क्षेत्र समितियों के प्रमुख;

(२) क्षेत्र समितियों द्वारा चुने गये व्यक्ति;

(३) जिले की नगरपालिकाओं के प्रधान;

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) (क) जिला सहकारी बैंक का प्रबन्ध-निदेशक (डाइरेक्टर);

(ख) जिला सहकारी संघ का प्रतिनिधि;

(ग) सहकारी समिति का प्रतिनिधि;

(घ) जिले की गन्ना यूनियन का प्रतिनिधि;

(५) सरकार द्वारा चुने हुए ऐसे तीन व्यक्ति तक जो सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक या व्यावसायिक कामों में कुशल हों;

(६) लोक सभा और राज्य विधान सभा के ऐसे सब सदस्य जिनके निर्वाचन-क्षेत्र का कोई भाग उस जिले में हो;

(७) राज्य सभा और विधान परिषद के ऐसे सब सदस्य वो उस जिले में रहते हों।

नोट—खंडों की क्षेत्र समितियों के सदस्यों की संख्या कम से कम २० और जनसंख्या के अनुसार २० से भी अधिक होगी।

जिला परिषद अधिनियम में ऐसा नियम रखा गया है जिससे परिषद में महिलाओं तथा अनुसूचित जातियों के लोगों को भी उचित स्थान मिल सके।

सदस्य की योग्यता

परिषद के वे ही व्यक्ति सदस्य होते हैं जो कि राज्य की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विधान सभा के लिए मत देने के योग्य हों। जो व्यक्ति २१ वर्षों से कम उम्र के, पागल, राजद्रोही या किसी दूसरे भयंकर अपराध में दंडित होते हैं, वे सदस्य नहीं बन सकते।

अध्यक्ष और उपाध्यक्ष

जिला परिषद के सदस्य गुप्त मतदान से परिषद का अध्यक्ष और उपाध्यक्ष चुनते हैं। अध्यक्ष पद के लिए उसे कम से कम ३० वर्षों की उम्र का होना चाहिए। संसद या राज्य के विधान मंडल के सदस्य और नगरपालिका के प्रधान अध्यक्ष नहीं बनाये जा सकते।

कार्य-काल

परिषद का कार्य-काल ५ वर्षों का है, लेकिन सरकार चाहे तो अवधि बढ़ा भी सकती है। अध्यक्ष परिषद के पूरे कार्य-काल के लिए चुना जाता है; परन्तु उपाध्यक्ष का चुनाव प्रति वर्ष होता है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—जिला परिषद किसे कहते हैं ?

२—जिला परिषद के सदस्य कौन-कौन होते हैं ?

३—परिषद के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का चुनाव कौन करता है ?

४—अपने जिले के परिषद के अध्यक्ष और पांच सदस्यों के नाम मालूम करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ २—परिषद की कार्य समिति

जिला परिषद विविध कार्यों के लिए अपने उपाध्यक्ष तथा सदस्यों की कई समितियां और उनके अध्यक्ष चुनती है। मुख्य समितियां ये हैं—**कार्य समिति, वित्त समिति, शिक्षा समिति, सार्वजनिक निर्माण समिति और जन-स्वास्थ्य समिति।**

अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, परिषद द्वारा चुने परिषद के तीन या छह सदस्य (यदि सदस्यों की संख्या ४० से अधिक है) और समितियों के अध्यक्षों को मिलाकर जिला परिषद की **कार्य-समिति** बनती है। वह परिषद के कामों का संचालन करती और आमदनी व खर्च का बजट बनाती है। परिषद का मुख्य अधिकारी कार्य समिति का सेक्रेटरी होता है।

परिषद के वतनिक अधिकारी—जिला परिषद कानून ने साधारण रूप से परिषद के लिए १२ अधिकारियों का विधान किया है—मुख्य अधिकारी, वित्त अधिकारी, स्वास्थ्य अधिकारी, कार्य अधिकारी, अभियन्ता, कर अधिकारी, शिक्षा अधिकारी, पंचायत राज अधिकारी, सिंचाई अधिकारी, पशुधन अधिकारी, कृषि अधिकारी और सहकारिता अधिकारी।

जिला परिषद के कर्तव्य

जिला परिषद के कर्तव्यों को याद रखने के लिए उनको तीन वर्गों में बाँट सकते हैं—(१) जनता का स्वास्थ्य, (२) जनता की सुविधाएं और (३) जन शिक्षा और संस्कृति।

जनता का स्वास्थ्य—जिला परिषद गाँवों में पशुओं और मनुष्यों की चिकित्सा के लिए **अस्पताल** खोलती है। हैजा,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चेचक, प्लेग आदि छूत की बीमारियों को रोकने के लिए टीका लगवाती है। वह दाइयों के **शिक्षण** का भी प्रबन्ध करती है।

जनता की सुविधायें—आने-जाने की सुविधा के लिए **सड़कों, पुलों** आदि का बनवाना, मरम्मत करवाना और उन्हें अच्छी दशा में सुरक्षित रखना, यात्रियों की सुविधा के लिए सड़कों के दोनों ओर **वृक्ष लगवाना,** सराय, धर्मशाला आदि खुलवाना, घाटों का प्रबन्ध करना, सुन्दर बगीचे व पार्क बनवाना, सिंचाई की सुविधा के लिए कुएं, तालाब, बाँध, नहरें नालियां आदि बनवाना, खेतीबारी को पशुओं से बचाने के लिए **कांजी हाउस** चलाना, कृषि व उद्योग-धन्धों की उन्नति के लिए **मेले, बाजार, प्रदर्शनी,** आदि का प्रबन्ध करना आदि काम जिला परिषद को करने होते हैं।

जन शिक्षा और संस्कृति—**स्कूल की इमारतें बनवाना** व उनकी देखभाल रखना, **जूनियर हाई स्कूल खोलना, पुस्तकालय** व **वाचनालय** खोलना, प्रौढ़ों की शिक्षा का प्रबन्ध करना, रात्रि **पाठशालाएं** खोलना आदि जिला परिषद के कर्तव्य हैं।

आय के साधन

जिला परिषदों के कामों में लाखों-करोड़ों रुपयों का व्यय है। इनमें से अधिकांश तो सरकार से सहायता के रूप में मिल जाता है। शेष परिषदों को निजी आय से खर्च करना होता है। यह आय स्थानीय टैक्सों, गाँवों में होने वाले बाजारों, मेलों व प्रदर्शनियों, स्कूलों की फीस, घाटों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पर लगने वाली उतराई, काँजी हाउस, सड़कों पर लगे वृक्षों आदि से होती है।

क्षेत्र समिति

हरएक जिले को कई खण्डों में बाँटा गया है। हरएक खंड में एक क्षेत्र समिति होती है। **खंड विकास अधिकारी** उसमें मुख्य अफसर है। क्षेत्र समिति का **काम** कृषि, सिंचाई, सहकारिता, पशुपालन, कुटीर उद्योग, स्वास्थ्य, बेसिक शिक्षा, हरिजन-कल्याण, नियोजन, लोक-निर्माण कार्य से सम्बन्ध रखता है। क्षेत्र समिति गाँव सभाओं पर निरीक्षण रखती है। क्षेत्र समिति की **रचना** गाँव सभाओं के प्रधानों, खंड के विधायकों तथा कुछ अन्य व्यक्तियों को मिलाकर की गयी है।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—परिषद के मुख्य वैतनिक अधिकारी कौन-कौन से हैं ?

२—जिला परिषद के कामों की सूची बनाओ।

३—क्षेत्र समिति के विषय में क्या जानते हो ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ ३--नगरपालिका का संगठन

उत्तर प्रदेश के नगरों और बड़े कस्बों में जिला परिषदों की तरह नगरपालिकाएँ बनायी गयी हैं। इनका देहातों से कोई सम्बन्ध नहीं होता।

हरएक नगरपालिका में सभी सदस्य चुने जाते हैं। उनकी संख्या अलग-अलग नगरों की आबादी के हिसाब से अलग-अलग १५ से ६० तक हो सकती है।

चुनाव के लिए नगर विभिन्न क्षेत्रों में बाँटा जाता है जो अंग्रेजी में 'वार्ड' कहलाते हैं। हरएक वार्ड से नगर-पालिका के लिए सदस्य चुने जाते हैं। वे 'नगरपिता' कहलाते हैं, क्योंकि नगर की रक्षा और उन्नति का भार उन पर होता है।

चुनने का अधिकार

२१ वर्षों के ऊपर के हरएक स्त्री व पुरुष को, जो ६ महीनों या अधिक समय से उस नगर में रहता है, वोट देने का अधिकार है। केवल पागल, दिवालिये या किसी अपराध में एक साल से ज्यादा की सजा पाये हुए को मत देने का अधिकार नहीं है। जेल जाने की अयोग्यता को सरकार दूर कर सकती है; जेल से छूटने के चार वर्षों बाद वह स्वयं खत्म हो जाती है।

प्रधान का चुनाव

१९५३ ई० के नगरपालिका चुनाव में प्रधान का निर्वाचन सीधे जनता ने किया था। हरएक मतदाता अपने वार्ड से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सदस्यों को मत देने के साथ-साथ प्रधान के लिए भी वोट देता था। अब १९५७ ई० से प्रधान का चुनाव सदस्य ही करते हैं।

सदस्यों का चुनाव

कोई भी वोटर सदस्य बनने के लिए खड़ा हो सकता है। उसे पहले नाम-निर्देशन कराना पड़ता है जिसके लिए ५०) जमा करने होते हैं। इसके बाद चुनाव होता है।

नगरपालिका के अधिकारी

नगरपालिका का सबसे ऊँचा अधिकारी **प्रधान** ही होता है। उसके काम करने की अवधि नगरपालिका के समान ५ वर्षों की होती है। इस बीच में उसको हटाया भी जा सकता है, यदि नगरपालिका उसमें अविश्वास का प्रस्ताव पास कर दे। राज्य-सरकार भी उसके आचार से असन्तुष्ट होकर उसे अलग कर सकती है।

प्रधान नगरपालिका की बैठकों में सभापति का काम करता है। उसे कुछ कर्मचारियों को नियुक्त करने, दंड देने या अलग करने का अधिकार है। प्रधान के अलावा नगरपालिका प्रति-वर्ष अपने सदस्यों में से एक **सीनियर (ज्येष्ठ) उपप्रधान** और एक **जूनियर (कनिष्ठ) उपप्रधान** चुनती है। ये अधिकारी प्रधान के उपस्थित न रहने पर या उसके कहने पर प्रधान के अधिकारों को काम में लाते हैं।

वैतनिक अधिकारी

नगरपालिका का काम चलाने के लिए वैतनिक अधिकारियों में सबसे ऊँचा **ऐक्जीक्यूटिव आफिसर** होता है। छोटी नगर-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
पालिकाओं में उसका काम **सेक्रेटरी** ही कर लेता है। इन अधिकारियों को राज्य-सरकार की स्वीकृति से नगरपालिका नियुक्त करती है। नगरपालिका के निर्माण, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि विभागों के मुख्य वैतनिक अधिकारी **इंजीनियर, हेल्थ-आफिसर, बिजली इंजीनियर**, पानी, चुंगी व शिक्षा आदि के **सुपरिंटेंडेंट** होते हैं।

नगरपालिका की समितियाँ

अपने कामों को अच्छी प्रकार से चलाने और उनकी देखरेख के लिए नगरपालिका आठ-आठ, दस-दस सदस्यों की कई समितियां और उनके अध्यक्ष हर साल चुनती है। समितियों को यह अधिकार है कि यदि वे चाहें तो विशेष योग्यता वाले लोगों को बाहर से अपनी संख्या के एक तिहाई सदस्य नियुक्त कर सकती हैं।

नगरपालिका में साधारण रूप से **वित्त, शिक्षा, स्वास्थ्य, निर्माण, चुंगी** या टैक्स समिमियां होती हैं। बड़े नगरों में इनके सिवाय **पानी, नगर-सुधार** आदि अन्य कई समितियाँ भी होती हैं। इनकी बैठकें महीने में एक बार होती हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—नगरपालिका से तुम क्या समझते हो ? यह कैसे बनती है ?

२—नगरपालिका के अधिकारी कौन-कौन से होते हैं ?

३—यदि तुम किसी नगर के रहने वाले हो, तो अपनी नगरपालिका के प्रधान, एक्जीक्यूटिव आफिसर, सेक्रेटरी और अपने वार्ड के नगरपिता के नाम मालूम करो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठ ४—नगरपालिका के काम

नगरपालिका के कामों का क्षेत्र जिला बोर्ड के कामों से बढ़ा चढ़ा है। नगरपालिका को कुछ काम तो अवश्य करने पड़ते हैं, जैसे सड़कें बनाना, स्वास्थ्य व सफाई, रोशनी, शिक्षा, चुंगी लेना आदि। कुछ काम ऐसे हैं जिनको यदि वह चाहे तो कर सकती है, जैसे ऊँची शिक्षा की व्यवस्था, पुस्तकालय खोलना, उद्योग-धन्धों की वृद्धि, अजायबघर कायम करना आदि।

आसानी से याद रखने के लिए नगरपालिका के कामों को चार वर्गों में बाँट सकते हैं:---

(१) **सर्वसाधारण की रक्षा के कार्य**--सड़कों पर रोशनी का प्रबन्ध जिससे अंधेरे में चोट खाने और चोर-उचक्कों से लोगों की रक्षा हो सके, आग बुझाने का प्रबन्ध तथा हानिकारक पशुओं को पकड़ कर बन्द करना या मारना जो कि धन-सम्पत्ति की रक्षा के लिए आवश्यक हैं।

(२) **स्वास्थ्य-रक्षा के कार्य**--अस्पताल या औषधालय खोलना, चेचक, हैजा या प्लेग के टीके लगाना, शहर की गन्दगी, सड़कों व नालियों की सफाई, रोगों को फैलाने वाले मच्छरों, चूहों आदि का नाश, गली-सड़ी वस्तुओं की बिक्री रोकना, पीने के लिए साफ पानी का प्रबन्ध करना, व्यायाम के लिए उचित जगहों, ठहराने के लिए धर्मशालाओं तथा सार्वजनिक टट्टियों व स्नानगृहों का प्रबन्ध करना, जन्म-मरण के आँकड़े रखना इत्यादि।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इन स्वास्थ्य के कामों पर नगरपालिका सबसे अधिक खर्च करती है।

(३) **शिक्षा का कार्य**—बालकों व बालिकाओं के लिए बेसिक स्कूलों को खोलना व चलाना नगरपालिका का एक मुख्य कर्तव्य है। परन्तु वह शिक्षा की उन्नति के लिए बहुत से दूसरे काम भी करती है, जैसे प्रौढ़ों की शिक्षा के लिए रात्रि पाठशालाएं, बड़े स्कूल व कालेज खोलना या कला-कौशल सिखाने का प्रबन्ध करना, पुस्तकालय या वाचनालय खोलना, अजायबघर म्यूजियम स्थापित करना।

(४) **जनता की सुविधा के कार्य**—सड़कें बनाना, उनकी मरम्मत व उन पर छिड़काव कराना, पार्क बनाना, गरीबों और मजदूरों के लिए मकान बनाना, दुकानें या बाजार बनाना, लोगों के आने-जाने की सुविधा के लिए मोटर बसें चलाना, नगर का सुधार करके उसे उत्तम रीति से बसाना इत्यादि।

आय के साधन

राज्य-सरकार-प्रति वष स्कूलों, सड़कों व अस्पतालों आदि के खर्चे के लिए नगरपालिकाओं को एक अच्छी रकम देती है। आवश्यकता पड़ने पर सरकार से कर्ज भी मिलता है।

नगरपालिका की निजी आय के तीन साधन हैं—

(१) **टैक्सों या करों से आय**—मकानों पर टैक्स, पानी पर टैक्स, बोझा ढोने वाले पक्षुओं व गाड़ियों पर टैक्स, बाहर से आने वाले माल पर चुंगी इत्यादि।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

(२) **फीस से आय**—नगरपालिका की फीस की आय स्कूल, अस्पतालों आदि से होती है। कागज-पत्रों की नकल देने या कुछ दूसरे कार्यों के बदले में भी फीस मिलती है।

(३) **सम्पत्ति और उद्योगों से आय**—बाजार, डाक बंगले, नजूल की जमीन आदि से किराया अथवा लगान मिलता है और पानी देने, बिजली पहुँचाने, मोटर बसों के चलाने आदि से काफी लाभ होता है।

राज्य का निरीक्षण

नगरमहापालिकाएं अपना काम ठीक तरह से करती रहें इसके लिए राज्य सरकार ने उनके ऊपर देखभाल का काम कलक्टर और कमिश्नर को सौंप रखा है। राज्य-सरकार के अन्य विभागों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि के उच्च अधिकारी भी अपने विभाग से सम्बन्धित नगरपालिका के कार्यों का निरीक्षण करते हैं।

यदि कोई सदस्य अपना काम ठीक ढंग से न करे, तो राज्य-सरकार उसे सदस्यता से हटा सकती है। यदि पूरी नगरपालिका अपना काम ठीक न करे, तो उसे तोड़ कर नया चुनाव करा सकती है अथवा उसका प्रबन्ध खुद अपने हाथों में ले सकती है।

नगर महापालिका

लखनऊ, आगरा, इलाहाबाद, वाराणसी और कानपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इन पाँच बड़े नगरों में नगर महापालिकाएं बनायी गयी हैं। इन्हें नगरपालिकाओं से अधिक अधिकार दिये गये हैं।

अभ्यास के लिए प्रश्न–

१–नगरपालिका के क्या-क्या काम हैं ?

२–नगरपालिका की आय के साधन बताओ।

३–नगरपालिका पर राज्य की ओर से क्या देखरेख रहती है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तीसरा अध्याय

ग्राम सभा और गाँव पंचायत

पाठ १--ग्राम सभा

हमारे उत्तर प्रदेश की सरकार ने सन् १९४७ में **पंचायत राज एक्ट** बनाकर गाँवों में ग्राम स्वराज्य के लिए ग्राम सभाओं, गाँव पंचायतों और पंचायती अदालतों

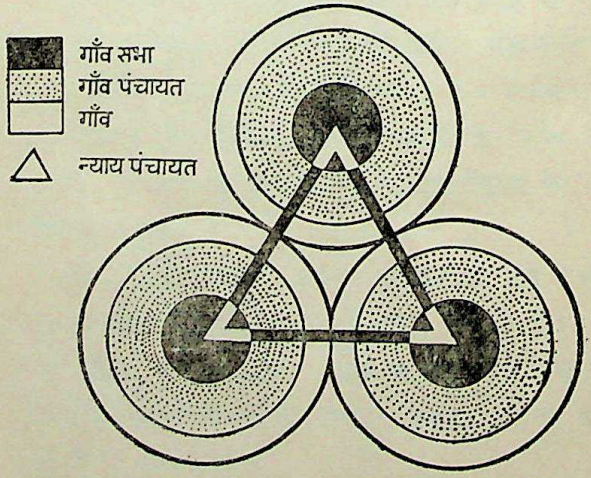

ग्राम स्वराज्य का संगठन

का संगठन किया था। उसके बाद सरकार ने सन् १९५५ में एक्ट का संशोधन करके पंचायती अदालत का नाम बदल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
कर 'न्याय पंचायत' रख दिया और उसके सदस्यों के चुनाव का तरीका भी बदल दिया।

इस समय उत्तर प्रदेश के लगभग १लाख१२हजार गाँवों में गाँव पंचायतों की संख्या ७२,००० से भी अधिक है। इस पाठ में तुम ग्राम सभा और गाँव पंचायत के बारे में पढ़ोगे।

ग्राम स्वराज्य के संगठन के तीन अंग हैं–(१) ग्राम सभा, (२) गाँव पंचायत, (३) न्याय पंचायत।

ग्राम सभा

जिन गाँवों की जनसंख्या २५० या उससे अधिक है, उनमें ग्राम सभा है। २५० से कम जनसंख्या वाले छोटे गाँव दो-दो या तीन-तीन या उससे अधिक मिलकर ग्राम सभा बनाते हैं। इस तरह हरएक गाँव किसी न किसी ग्राम सभा में है।

ग्राम सभा के वे सभी ग्रामवासी सदस्य हैं जिनकी आयु २१वर्षों की या उससे अधिक है। जो व्यक्ति भारत का नागरिक न हो या उसका दिमाग खराब हो गया हो, ग्राम सभा का सदस्य नहीं हो सकता। कोढ़ी, दिवालिया, सरकारी कर्मचारी और अपराधी लोग भी अब ग्राम सभा के चुनाव में वोट दे सकते हैं, यद्यपि वे किसी पद के लिए खड़े नहीं हो सकते।

प्रधान और उपप्रधान

ग्राम सभा के सदस्य प्रधान का चुनाव ५ वर्षों के लिए करते हैं। सरकार उचित समझे तो इनका समय १ वर्ष के लिए और बढ़ा सकती है। उपप्रधान का चुनाव भी अब तक ग्राम सभा के सभी सदस्य करते थे और प्रधान के बराबर ही उसका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

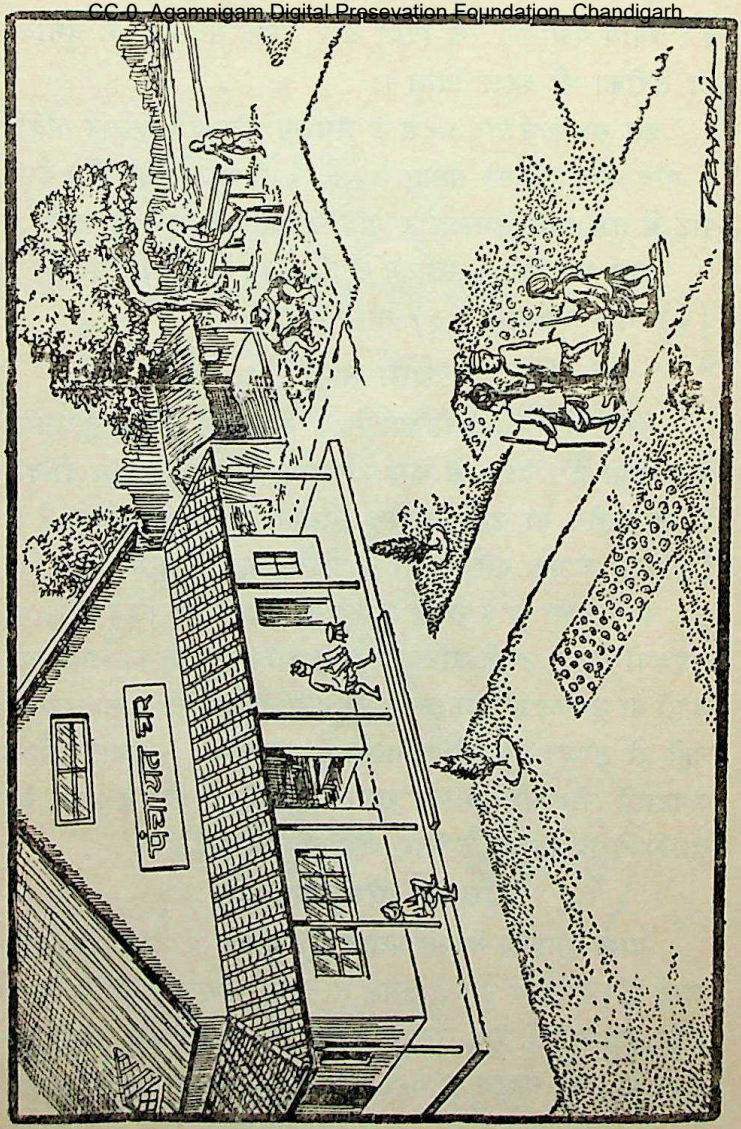

गाँव का पंचायतघर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्य-काल होता था, परन्तु संशोधित अधिनियम के अनुसार उपप्रधान का चुनाव ग्राम पंचायतों के सदस्य करते हैं और उनकी अवधि एक वर्ष होती है।

बैठकें और उनका काम

हर साल ग्राम सभा की दो साधारण बैठकें रबी और खरीफ की फसलों के बाद होती हैं। खरीफ की बैठक में ग्राम सभा अगले साल का बजट, जो गाँव पंचायत बनाती है, पास करती है। रबी की बैठक में सभापति पिछले साल में किये गये कामों के ऊपर विचार करता है। कोई भी सदस्य उनमें विचार करने के लिए प्रस्ताव पेश कर सकता है।

यदि किसी बैठक में सदस्यों की संख्या का कम से कम पाँचवां भाग उपस्थित नहीं है, तो उस बैठक में कोई काम नहीं होता। वह बैठक स्थगित कर दी जाती है।

गाँव पंचायत

ग्राम सभा में सदस्यों की संख्या बहुत होती है। इतनी बड़ी सभा गाँव का प्रबन्ध प्रतिनिधि नहीं देख सकती। अतः एक छोटी कार्यकारिणी समिति बनायी जाती है जिसे **गाँव पंचायत** कहते हैं।

इसका चुनाव ग्राम सभा अपने सदस्यों में से ही पाँच वर्षों के लिए करती है। ग्राम सभा के प्रधान और उपप्रधान गाँव पंचायत के भी प्रधान और उपप्रधान होते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिकार और कर्तव्य

इसके बहुत से काम वही हैं जो नगरों में नगरपालिकाओं के हैं, जैसे सफाई, रोशनी व मरम्मत, औषधालय, जन्म-मरण व विवाह का लेखा, कुओं की सफाई व मरम्मत, पैठों (बाजारों) व मेलों का प्रबन्ध, गोचर भूमि, घरों को सड़कों पर बढ़ने से रोकना, खेती, उद्योग-धन्धों व व्यवस्थाओं की उन्नति, छूत की बीमारी को फैलने से रोकना, मुर्दाघाटों व कब्रिस्तानों की देखभाल करना आदि ।

साधनों के अनुसार गाँव पंचायतें चाहें तो इस प्रकार के काम भी कर सकती हैं, जैसे खेती की उन्नति के लिए अच्छे बीजों व औजारों का बेचना या बाँटना,सहकारी समितियों की उन्नति करना, पुस्तकालय या वाचनालय खोलना, सरकार से तकाबी ऋण दिलवाने व बँटवाने में मदद देना इत्यादि ।

हरएक पंचायत में दफ्तर के काम के लिए एक कमचारी रहता है जिसे **सेक्रेटरी** कहते हैं ।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—ग्राम सभा किसे कहते हैं ? वह किस लिए बनायी जाती है ?
२—गाँव पंचायत कैसे बनती है ?
३—गाँव पंचायत के क्या कर्तव्य हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पाठ २—न्याय पंचायत

तुमने सुना होगा कि मुकदमेबाजी में अनेक ग्रामवासियों का समय और धन बर्बाद हो जाता है, तिस पर भी न्याय शीघ्र नहीं मिल पाता। ग्राम-स्वराज्य को सार्थक करने के लिए **न्याय पंचायतें** बनी हैं।

पाँच से लेकर दस ग्राम सभाओं तक के क्षेत्र के लिए एक न्याय पंचायत है। न्याय पंचायत के लिए गाँव पंचायत से निर्धारित संख्या में पंच चुने जाते हैं। फिर जिलाधीश उनमें से निर्धारित संख्या के अनुसार शिक्षित व्यक्तियों को न्याय पंचायत का पंच नामजद करता है। इस प्रकार १० से लेकर २५ तक सदस्य एक पंचायत बनाते हैं। हरएक न्याय पंचायत अपने में से एक सरपंच और एक सहायक सरपंच चुनती है। यह भी पाँच वर्षों के लिए चुने जाते हैं।

सरपंच हर मुकदमे के लिए न्याय पंचायत में से पांच पंचों का एक बेंच नियुक्त करता है।

न्याय पंचायत का मुख्य **दफ्तर** सरकार से नियुक्त किये हुए केन्द्र में होता है। पंचायतें महीने में जितने दिन आवश्यक हो, काम करती हैं।

न्याय पंचायत को छोटे-मोटे दीवानी और फौजदारी के मुकदमे सुनने का अधिकार है।

न्याय पंचायतों को ५००) तक की मालियत के दीवानी के मुकदमे सुनने का अधिकार है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फौजदारी के मुकदमे—सार्वजनिक स्थानों पर झगड़ा करना, ५० रु० तक की चोरी के मुकदमे, किसी को पीटना या जान-बूझ कर चोट पहुँचाना, किसी स्त्री का अपमान, जुआ इत्यादि अपराधों के मुकदमे न्याय पंचायतें सुन सकती हैं।

अब न्याय पंचायतों को यह भी अधिकार मिल गया है कि पंचायत की मानहानि करने वालों को वे अपराधी घोषित कर उसे दंड दे सकें। यह दंड ५ रु० तक जुर्माना हो सकता है।

न्याय पंचायतें किसी को जेल नहीं कर सकतीं, १००रु० तक जुर्माना कर सकती हैं। उनके निर्णयों की अपील किसी न्यायालय में दायर नहीं हो सकती, केवल उस क्षेत्र के सब डिवीजनल मैजिस्ट्रेट (एस० डी० एम०) की अदालत में पुनरवलोकन (निगरानी) की प्रार्थना की जा सकती है।

इन अदालतों में किसी पक्ष की ओर से वकील को परवी करने का अधिकार नहीं है। मुकदमा दायर करने के लिए फीस भी बहुत कम यानी चार आने से डेढ़ रुपया तक है।

गाँव पंचायतें कैसे सफल हो सकती हैं ?

पंचायत राज एक्ट बने कई वर्ष व्यतीत हो गये हैं। उनके संगठन में राज्य-सरकार ने उचित सुधार भी कर दिये हैं, परन्तु उन्हें सफल और उपयोगी बनाने के लिए गाँव वालों को अपने ऊपर भी भार उठाना चाहिए। सच्ची लगन के ईमानदार आदमियों को ही पंच बनाना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुम लोग दस-ग्यारह वर्षों में बड़े होकर देश के नागरिक बन जाओगे। तुम लोगों में से जो गाँव में रहेंगे, पंच भी बनेंगे। अतः तुम्हें यह जानना उचित है कि गाँव वालों की क्या-क्या समस्याएं हैं और गाँव के सुधार के लिए क्या-क्या प्रयत्न करने चाहिए। अगले पाठ में इन बातों का वर्णन किया जायगा।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—ग्राम पंचायतें कैसे बनती हैं ?
२—न्याय पंचायतों के क्या काम हैं ?
३—पंचायतें कैसे सफल हो सकती हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चौथा अध्याय

गाँवों की समस्याएं और उनका इलाज

'अपने देश में अपना राज' हो जाने के बाद से राज्य-सरकारें और हमारे नेता दोनों की रुचि ग्रामोन्नति के कामों के लिए पायी जाती है। स्कूल, कालेज, सभा, समाज, सबत्र गाँव वालों की दशा को सुधारने के लिए चर्चाएँ और प्रयत्न हो रहे हैं। सारे देश का ध्यान गाँवों की ओर है।

हमारे गाँवों के लोग निर्धन हैं। उनके शरीर दुर्बल हैं। उनमें शिक्षा की कमी है। यदि इन बातों का इलाज हो जाय, तो गाँव के सौ में नब्बे के कष्ट दूर हो जायँ।

निर्धनता के कारण

हमारे गाँवों में खेत प्रायः छोटे-छोटे हैं। हल हलके व पुराने ढंग के हैं जिनसे मिट्टी नीचे तक नहीं खुद पाती। खेती के लिए खाद उचित मात्रा में नहीं मिलती। गाँवों के महाजनों की खत्तियों का बीज जोरदार नहीं होता, अतः फसल कमजोर होती है। सिंचाई के लिए नहरें बहुत थोड़ी हैं और तालाबों या कुओं से पानी देने में बहुत परिश्रम व समय लगता है। पशु कमजोर हैं और कम दूध देते हैं। ब्याह-शादी, जन्म-मृत्यु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
आदि के अवसरों पर खर्चों के लिए महाजनों से **ऊँचे** ब्याज पर **उधार** लिया जाता है। जमीन-जायदाद के लिए आपस में मुकदमेबाजी बरबाद करती है। ढीली-ढाली खेती के अलावा कोई **दूसरा आय का साधन** न होने से अधिकतर किसान साल में छह महीने और खेतिहर मजदूर साल में आठ महीने बेकार रहते हैं।

निर्धनता दूर करने के साधन—

(१) खेती की उन्नति के लिए आवश्यक है कि किसी की भी जोत १० एकड़ से कम न हो। एक आदमी के खेत इकट्ठे **एक चक** में हों; इसके लिए आपस में खेतों की अदल-बदल हो। इसके साथ सहकारी खेती को भी बढ़ाया जाय।

(२) खेतों में खाद के लिए गोबर, पेशाब व घास-फूस आदि का **कम्पोस्ट** बड़े पमाने पर तैयार हो।

(३) अच्छे बीजों को सहकारी विभाग से लेने के लिए गाँवों में **बीज गोदाम** खुलें।

(४) जोतने, सिंचाई करने, चारा काटने आदि के लिए अच्छे **हल** और **मशीनों** को मँगाकर गाँवों में उनका प्रचार और उपयोग हो।

(५) पशुओं की नस्ल सुधारने को **साँड़ व भैंसे** रखे जायँ।

(६) गाँव वालों को **कर्ज देने वाली सहकारी समितियों** का सदस्य बनाया जाय जो उनकी आवश्यकता को जाँच कर उचित ब्याज पर उधार दें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(७) फसल की **बिक्री** का **प्रबन्ध** भी सहकारी समितियों **के** द्वारा हो, जिससे माल ठीक समय और उचित भाव **पर** बिक सके।

(८) गाँवों के आदमी खेती के अलावा और **कामों पर लगें** जैसे सूत कातना, खद्दर बनाना, रस्सी बटना, चटाई व टोकरी बनाना, दरी, कालीन व नीवाड़ बुनना, मधुमक्खियाँ पाल कर शहद तैयार करना, गन्ने का रस पेरना और गुड़ बनाना इत्यादि।

शारीरिक दुर्बलता के कारण

हमारे देश में अधिकतर लोगों को **भर पेट** खाने को नहीं मिलता। खाने की चीजों में शरीर को पुष्ट बनाने वाली चीजों की कमी है। गाँवों के घरों में साफ **हवा** और **रोशनी** काफी नहीं आती। घर, गलियाँ, सड़कें, कुएँ आदि साफ नहीं रहते। गन्दगी के कारण अनेक रोग फैलते हैं जैसे हैजा, जूड़ी बुखार, प्लेग, आदि।

इलाज—

निर्धनता के दूर होने पर भरपेट भोजन तो अवश्य मिलेगा, पर शरीर को स्वस्थ और फुर्तीला बनाने के लिए गाँव के खान-पान में परिवर्तन, सफाई खेल-कूद, व्यायाम, मनोरंजन आदि का प्रबन्ध बहुत आवश्यक है।

(१) खान-पान में **फलों** और **तरकारियों** को विशष स्थान मिलना चाहिए। पपीता, अमरूद, आम, मूली, शलजम, गाजर, पालक, मेथी, धनिया, बथुआ, सरसों,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

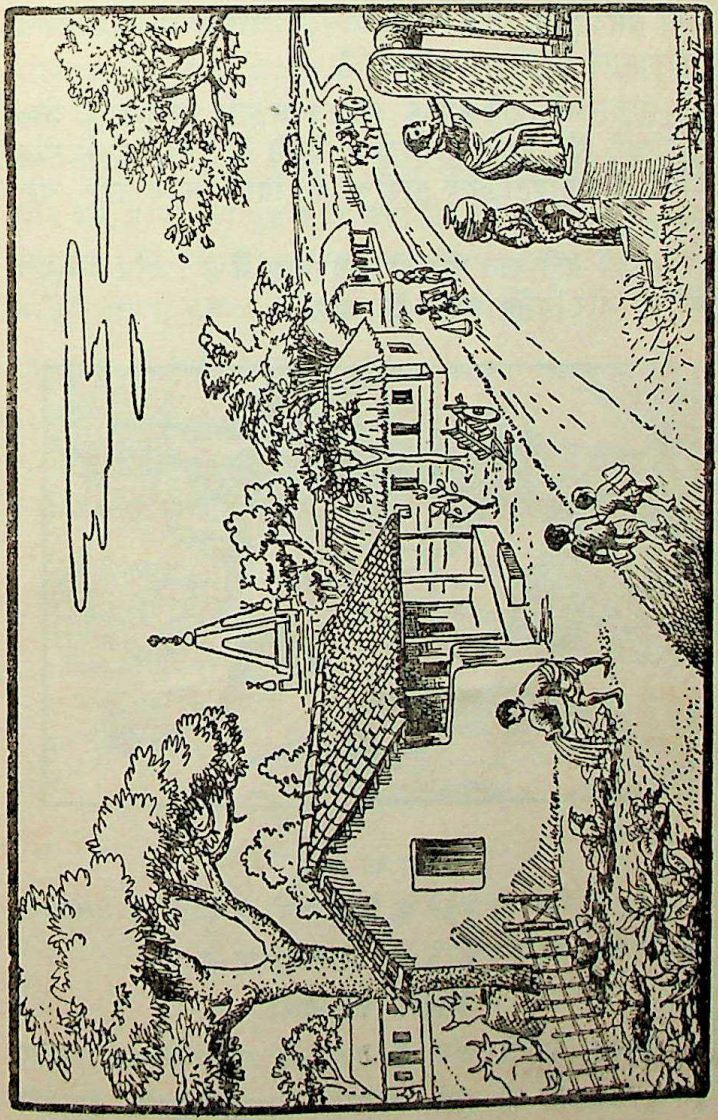

एक साफ सुथरा गाँव

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चना आदि बीसों चीजें ऐसी हैं जिनको अधिक मात्रा में खाना स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है।

(२) गाँवों की सफाई का काम गाँव पंचायतों, क्षेत्र-समितियों और जिला परिषदों के जिम्मे है, लेकिन इनमें गाँव वालों की सहायता और तत्परता के बिना काम नहीं चल सकता।

(३) यही बात रोशनी के विषय में है। गाँव पंचायत को इस ओर विशेष ध्यान देना होगा।

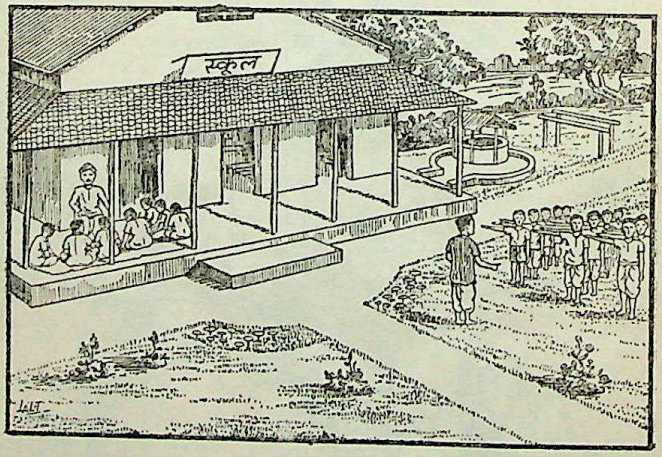

गाँव का स्कूल

(४) रोगों से बचने के लिए गाँवों के कुओं की देखभाल और गन्दगी को दूर करने की आवश्यकता है।

शिक्षा की कमी

शिक्षा के दो अंग हैं—एक तो पढ़ना-लिखना और दूसरा नासमझी की बातें छोड़ना। पढ़ना-लिखना सिखाने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के लिए इस समय बालकों के स्कूल और प्रौढ़ों की रात्रि पाठशालाएं बराबर खुलती जा रही हैं। स्कूलों में ज्ञान की बातें भी बतायी जाती हैं। गाँवों में फिजूलखर्ची, बाल-विवाह, स्वास्थ्य और सफाई, रोगों से बचने के उपाय, पैसा बचाने और इस प्रकार की दूसरी लाभकारी बातों के प्रचार के लिए पंचायत घरों, स्कूलों आदि में व्याख्यान और कथाएँ होनी चाहिए जिनमें बच्चे, बढ़े सभी सम्मिलित हों।

अभ्यास के लिए प्रश्न—

१—गाँवों में निर्धनता के क्या कारण हैं ?

२—निर्धनता कैसे दूर की जा सकती है ?

३—गाँव वालों को बलवान और शिक्षित बनाने के उपाय बताओ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाँचवां अध्याय

राष्ट्रीय उत्सव, स्थानीय त्योहार और मेले

राष्ट्रीय उत्सव

लगभग आठ सौ वर्षों की परतन्त्रता के बाद हम स्वतन्त्र हो चुके हैं। तुमने ११९२ ई० में हुई दिल्ली के महाराजा पृथ्वीराज की पराजय का इतिहास पढ़ा है। उस समय से लेकर १९४७ ई० अर्थात साढ़े सात सौ वर्षों तक दिल्ली में पहले तो तुर्कों, उसके बाद अफगानों, फिर मुगलों और आखिर में अंग्रेजों ने राज्य किया। भारत के निवासी गुलामी की जंजीरों को तोड़कर स्वतन्त्र होने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहे। इसका इतिहास तुम अगली कक्षाओं में पढ़ोगे।

हमारा सौभाग्य है कि हमारी आँखों के सामने हमारा देश स्वतन्त्र है। अब हम इस योग्य हैं कि संसार के स्वतन्त्र राष्ट्रों में अपना मस्तक ऊँचा करके खड़े हो सकें। इस स्थिति के लिए भारत के राष्ट्रीय इतिहास में तीन तिथियाँ सदा अमर रहेंगी—१५ अगस्त, २ अक्टूबर और २६ जनवरी। इन तिथियों को सार्वजनिक छुट्टी होती है और हमारे स्कूलों में व सारे देश में राष्ट्रीय उत्सव मनाये जाते हैं।

१५ अगस्त, १९४७, **स्वतन्त्रता दिवस,** को भारत अंग्रेजी साम्राज्य से स्वतन्त्र हुआ। इस दिन भारतवासी स्वतन्त्रता की

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वेदी पर बलिदान होने वाले सैकड़ों-हजारों शहीदों की याद में अपने शीश झुकाते और उनके जीवन से उत्साह, त्याग व सहयोग की शिक्षा लेते हैं।

२ अक्तबर, १८६९, **गांधी जयन्ती दिवस**, को महात्मा गाँधी का पोरबन्दर (गुजरात) में जन्म हुआ था। महात्मा जी हमारे राष्ट्रपिता थे। उनके बतलाये सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर भारत स्वतन्त्र हुआ तथा संसार में भारत का मान और यश फैला।

२६ जनवरी, १९५०, **गणतन्त्र दिवस** को भारत ने लोकतन्त्र गणराज्य की घोषणा की और स्वतन्त्र भारत के लिए संविधान पास किया, जिसमें नव भारत बनाने की विधि लिखी है।

ये तीनों दिन हमारे जीवन में विशेष महत्व के हैं। ये हमारे राष्ट्रीय उत्सव हैं, क्योंकि इनमें सब जातियों, सब धर्मों और सब राज्यों के रहने वाले भारतवासी समान रूप से भाग लेते हैं।

स्थानीय त्योहार और मेले

हरएक गाँव और शहर में बहुत से स्थानीय त्योहार मनाये जाते हैं। वे हमारे सामाजिक जीवन में घुल-मिल गये हैं। हिन्दुओं में **दशहरा, दीवाली** व **होली**; मुसलमानों में **मुहर्रम, शबरात** व **ईद**; ईसाइयों में **बड़ा दिन (क्रिसमस)**; सिक्खों में **गुरु नानक** और **गुरु गोविन्द सिंह** के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जन्मदिन; जैनों में **महावीर जयन्ती**; बौद्धों में **बुद्ध पूर्णिमा** के अवसर पर विशष उत्सव होते हैं।

अधिकतर जिलों में वर्ष में एक या अधिक मेले लगते हैं, जैसे लखनऊ में महावीर जी का मेला, प्रयाग में शिवकोटि, बाराबंकी में लोधेश्वर महादेव, फैजाबाद-अयोध्या में रामनवमी इत्यादि।

इन अवसरों पर प्रायः स्कूल बन्द रहते हैं। सिक्ख, जैन और बौद्ध बालकों की संख्या हमारे स्कूलों में अधिक नहीं है, इसीलिए उनके विशेष त्योहारों पर प्रायः उन्हीं की छुट्टी रहती है। स्कूलों में ईसाई बालक बहुत कम रहते हैं। अधिकतर स्कूलों में कोई ईसाई बालक नहीं होता, परन्तु बड़े दिन २५ दिसम्बर को एक दिन की आम छुट्टी होती है। पहले अंग्रेजी राज्य-काल में बड़े दिन पर कई दिनों की छुट्टियां होती थीं। अब केवल ईसाइयों के कालेज या स्कूल उस अवसर पर कई दिनों के लिए बन्द रहते हैं, शेष नहीं।

ये त्योहार कुछ तो ऋतुओं के परिवर्तन का उत्सव मनाने के लिए होते हैं, और कुछ महापुरुषों की स्मृतियों को ताजा रखने और उनके जीवन से शिक्षा लेने के लिए। मेलों का अभिप्राय लोगों को परस्पर मिलजुल कर प्रेम व परिचय बढ़ाना तथा गाँव की पैदा की और बनायी गयी वस्तुओं, पशुओं और बाहर की चीजों का खरीदना व बेचना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तुमने अनुभव किया होगा कि त्योहारों और मेलों के अवसरों पर बालकों के हृदय में हर्ष उमड़ आता है। सुन्दर स्वच्छ वस्त्र पहनने, रुचिकर चीजें मोल लेने, खेल-तमाशे आदि देखने से बालकों में नया जीवन आ जाता है। यदि तुम चाहो, तो ऐसे अवसरों पर स्काउट या स्वयंसेवक बनकर सेवा के अनेक काम कर सकते हो। इसके अलावा क्रम से स्कूलों में उन दिनों केवल एक घंटे के लिए कुछ कमरों में दस्तकारी की नुमाइश और कुछ में संगीत, अन्त्याक्षरी आदि का प्रोग्राम रखा जा सकता है। नुमाइश में बेसिक कक्षाओं के क्रियात्मक अभ्यासों के नमूने, साफ रुई, पूनियां, मिट्टी या दफ्ती की चीजें, बाटिका व खेत के फल-फूल सजा कर रखे जा सकते हैं।

स्कूलों में राष्ट्रीय उत्सवों का मनाना

१५ अगस्त, २ अक्तूबर और २६ जनवरी को स्कूलों में राष्ट्रीय उत्सवों को मनाने के लिए पढ़ाई-लिखाई से अवकाश दिया जाता है। इन उत्सव को कैसे मनाना चाहिए ?

१—शिक्षा विभाग या जिलाधीश की ओर से एक कार्यक्रम आता है जिसमें प्रभातफेरी, राष्ट्रीय झंडा फहराना, राष्ट्र-गीत मिलकर गाना, गाँधी जयन्ती पर राष्ट्रपिता के चित्र को खोलना इत्यादि बातें रहती हैं। उनका उत्साहपूर्वक पालन करना पहला कर्तव्य है।

२—क्रम से हरएक स्कल में एक दो घंटे के लिए प्रदर्शनी करनी उचित है जिसका वर्णन ऊपर किया गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

३–एक दो घंटे संगीत, खेल-कूद, अन्त्याक्षरी, नाटक, अभिनय आदि करने चाहिए।

४–घंटे सवा घंटे कविता-पाठ, गान, व्याख्यान, जलपान आदि का प्रबन्ध करना चाहिए। व्याख्यान देने के लिए स्कूल

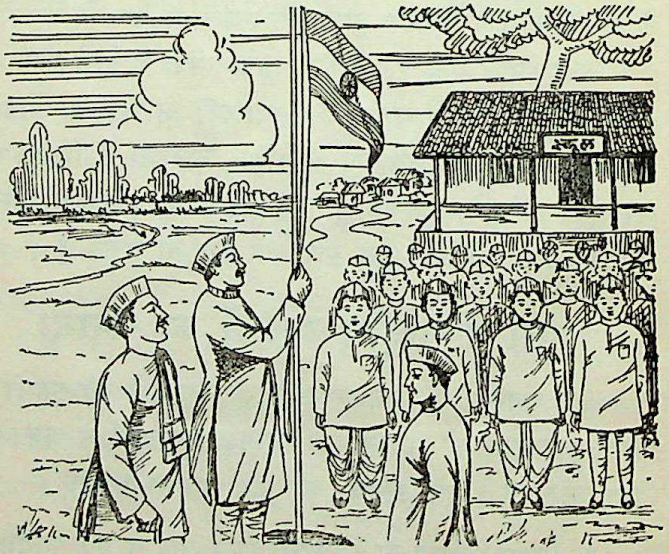

राष्ट्रीय झंडा फहराया जा रहा है।

से बाहर के किसी सज्जन को बुलाया जा सकता है। १५ अगस्त, २ अक्तूबर और २६ जनवरी, इन तीनों अवसरों पर भारत के प्रायःहर दैनिक व साप्ताहिक पत्र अपने विशषांक निकालते हैं। उनमें से लेख और कविताएं स्कूल के जलसे में पढ़ी जा सकती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

५–इन उत्सवों पर आधे घंटे के लिए स्कूल के सब बालकों के समूह से शारीरिक सुधार के व्यायामों का प्रदर्शन कराना चाहिए।

६–२६ जनवरी को गणतन्त्र घोषणा दिवस पर रात्रि के सयय स्कूलों में रोशनी करानी चाहिए।

इस प्रकार के कार्यक्रमों से बालकों में शुरू से ही नागरिकता का अभ्यास होने लगेगा। बालकों को नागरिक शिक्षा देने का यही उद्देश्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्र-गीत

जनगणमन-अधिनायक जय हे भारत-भाग्यविधाता ।
पंजाब सिन्ध गुजरात मराठा द्राविड़ उत्कल बंग
विन्ध्य हिमाचल यमुना गंगा उच्छल जलधितरंग
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मागे, गाहे तव जयगाथा
जनगण-मंगलदायक जय हे भारत-भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे ॥

(3797 / 21.5.68)
लखनऊ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh